वर्ष 11 अंक 06 माह अक्टूबर, 2026 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950



34

टेक्नोलॉजी की दुनिया में अमर हो गए स्टीव जॉब्स

आन्दोलन वही, जो सार्थक मुद्दा, दिशा एवं भरोसे से जुड़ा हो

आर.एन.आई. संख्या - 2166/2016 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2025-27



BEBER

BATH FITTINGS



Make way for iconic luxury....





Mathura
Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 11, अंक - 06, अक्टूबर 2026

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेंद्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166/2016
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com



जरूर पढ़ें
प्रोटेस्ट

18 | **आन्दोलन वही, जो सार्थक मुद्दा...**

लोकतंत्र में असहमति उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। सरकार से सवाल पूछना, नीतियों का विरोध करना और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना नागरिक स्वतंत्रता का अनिवार्य हिस्सा है। लेकिन लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा केवल इस बात से नहीं होती कि विरोध करने की कितनी स्वतंत्रता है, बल्कि इससे भी होती है कि उस स्वतंत्रता का उपयोग किस उद्देश्य, किस भाषा और किस पद्धति से...

विशेष
एजुकेशन

08 | **उच्च शिक्षा का दशक और गुणवत्ता की परीक्षा**

ह्यूमनिटीज एंड सोशल साइंसेज कम्युनिकेशंस में 2025 में प्रकाशित एक अध्ययन ने भी रेखांकित किया कि भारत में जनसांख्यिकीय बदलाव का आर्थिक लाभ अनुकूल नीतिगत वातावरण, बेहतर स्वास्थ्य, सम्मानजनक...



विशेष
बढ़ेगा बोझ

38 | **आरबीआई ने ऐसा क्या बदला, होम...**

एक फैसला, एक प्रेस कॉन्फ्रेंस और करोड़ों भारतीयों की ईएमआई का गणित रातों-रात बिगड़ गया! अगर आपने घर, कार या पर्सनल लोन ले रखा है, तो आपकी बैंक किश्त अब और महंगी होने वाली है। रिजर्व बैंक यानी आरबीआई का एक फैसला। आरबीआई की मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी ने रेपो रेट 0.25% बढ़ाकर 5.50% कर दिया है। अब आप कहेंगे कि ये रेपो रेट...

जरूर पढ़ें
विशेष साक्षात्कार

32 | **मेरी प्रसिद्धि के तुम ही कारण हो काका...**

हिंदी हास्य-व्यंग्य साहित्य की समृद्ध परंपरा में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त, देश-विदेश के काव्य मंचों पर अपनी विशिष्ट प्रस्तुतियों से पहचान बनाने वाले कवि पवन आगरी की साहित्यिक यात्रा गुरु-शिष्य परंपरा, रचनात्मक साधना और नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित...



जरूर पढ़ें
राजनीति

30 | **पहाड़ों की राजनीति लेने लगी करवट!**



कांग्रेस हाईकमान ने हरीश रावत की 'धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा' को लेकर साफ संदेश दिया है कि चुनावी राज्य में किसी एक नेता का समानांतर अभियान नहीं चल सकता और पार्टी को सामूहिक रूप से चुनाव लड़ना होगा। लेकिन हरीश रावत पीछे हटने की बजाय अपनी यात्रा पर आगे बढ़े।

48 | कहानी

50 | कविता



सम्पादकीय

शक्ति की आराधना में मंत्रों से अधिक महत्वपूर्ण है मन की पवित्रता

शारदीय नवरात्र भारतीय संस्कृति का ऐसा पावन पर्व है, जो आस्था, आत्मशुद्धि और शक्ति की उपासना के साथ जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का संदेश देता है। वर्षा ऋतु के समापन और शरद ऋतु के आगमन के समय मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति में नवीनता और उल्लास का अनुभव कराता है। नौ दिनों तक माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना के माध्यम से श्रद्धालु साहस, धैर्य, करुणा और आत्मबल की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। नवरात्र का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अपने भीतर की बुराइयों को पहचानने, उन्हें दूर करने और जीवन को सद्गुणों से परिपूर्ण बनाने का अवसर भी है। इस पर्व का मूल संदेश यही है कि शक्ति की वास्तविक उपासना तभी सार्थक होती है, जब श्रद्धा के साथ मन की पवित्रता और आचरण की शुद्धता भी बनी रहे। नवरात्र में माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। प्रत्येक स्वरूप अपने भीतर विशेष आध्यात्मिक संदेश समेटे हुए है। माँ शैलपुत्री दृढ़ता और स्थिरता, ब्रह्मचारिणी तप और संयम, चंद्रघंटा साहस, कूष्मांडा सृजनात्मक ऊर्जा, स्कंदमाता वात्सल्य, कात्यायनी पराक्रम, कालरात्रि निर्भयता, महागौरी पवित्रता और सिद्धिदात्री सिद्धि तथा पूर्णता की प्रेरणा देती हैं। इन स्वरूपों की आराधना हमें जीवन के विभिन्न संघर्षों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। यह पर्व बताता है कि कठिन परिस्थितियों में घबराने के बजाय धैर्य, विवेक और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए। जिस प्रकार देवी को अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक माना जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ और द्वेष पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। नवरात्र की पूजा-विधि में संकल्प, ध्यान, स्नान, श्रृंगार, भोग, दीप प्रज्वलन और आरती का विशेष महत्व है। किसी भी शुभ कार्य के आरंभ में भगवान गणेश का स्मरण किया जाता है। इसके बाद साधक माँ भगवती का ध्यान कर अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार पूजन करता है। संकल्प व्यक्ति को अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा देता है, जबकि ध्यान मन को एकाग्र कर सांसारिक चिंताओं से दूर करने में सहायक होता है। माता को पुष्प, वस्त्र और भोग अर्पित करना समर्पण तथा कृतज्ञता की भावना को व्यक्त करता है। दीप का प्रकाश अज्ञान के अंधकार को दूर करने और ज्ञान की ओर बढ़ने का प्रतीक है। इसी प्रकार आरती में कर्पूर का पूरी तरह जलकर समाप्त हो जाना अहंकार के त्याग और स्वयं को ईश्वर के प्रति समर्पित करने का संदेश देता है। पूजा की इन परंपराओं का महत्व तभी बढ़ता है, जब इनके पीछे छिपे भाव को समझा जाए। धार्मिक अनुष्ठान मनुष्य को अनुशासन, संयम और एकाग्रता का अभ्यास कराते हैं। लेकिन पूजा का उद्देश्य केवल निर्धारित विधियों को पूरा करना नहीं, बल्कि अपने विचारों और व्यवहार को बेहतर बनाना भी है। यदि कोई व्यक्ति नियमित रूप से पूजा करता है, लेकिन उसके व्यवहार में कठोरता, छल-कपट और दूसरों के प्रति अपमान का भाव बना रहता है, तो उसे अपनी साधना के वास्तविक उद्देश्य पर विचार करना चाहिए। धर्म का सार केवल पूजा-पाठ में नहीं, बल्कि सत्य बोलने, दूसरों की सहायता करने, जरूरतमंदों के प्रति संवेदनशील रहने और अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करने में भी निहित है। भारतीय धार्मिक परंपरा में मंत्रों के शुद्ध उच्चारण और पूजा-विधि का अपना महत्व है। मंत्र मन को एकाग्र करने और उपासना के वातावरण को आध्यात्मिक बनाने में सहायक होते हैं। फिर भी सामान्य श्रद्धालु के लिए यह समझना आवश्यक है कि पूजा के दौरान किसी मंत्र का भूल जाना या कोई सामग्री उपलब्ध न होना उसकी आस्था को व्यर्थ नहीं कर देता। अपनी श्रद्धा, सामर्थ्य और समझ के अनुसार की गई उपासना भी व्यक्ति को आत्मिक संतोष प्रदान कर सकती है। भक्ति में दिखावे और प्रतिस्पर्धा के बजाय विनम्रता तथा समर्पण का भाव होना चाहिए। पूजा की भव्यता से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति कितनी सच्चाई और निर्मलता के साथ अपने आराध्य का स्मरण करता है। कर्मकांड और श्रद्धा एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। विधि-विधान उपासना को व्यवस्थित स्वरूप देते हैं, जबकि श्रद्धा उसे भावनात्मक और आध्यात्मिक गहराई प्रदान करती है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब धार्मिक परंपराओं का पालन केवल सामाजिक प्रतिष्ठा या दिखावे के लिए किया जाने लगे। सच्ची उपासना व्यक्ति के भीतर विनम्रता पैदा करती है, उसे दूसरों के दुख को समझने की प्रेरणा देती है और उसके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। इसलिए नवरात्र के अवसर पर यह आत्ममंथन भी जरूरी है कि हमारी पूजा हमें कितना संवेदनशील, सहनशील और जिम्मेदार बना रही है। शक्ति की आराधना का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश नारी के सम्मान और उसकी गरिमा की रक्षा से जुड़ा है। भारतीय संस्कृति में स्त्री को शक्ति, सृजन, करुणा और ममता का स्वरूप माना गया है। नवरात्र में देवी की पूजा और कन्या पूजन की परंपरा इसी सम्मान की भावना को अभिव्यक्त करती है। लेकिन इस आस्था की वास्तविक परीक्षा मंदिरों और पूजा स्थलों से बाहर हमारे दैनिक व्यवहार में होती है। यदि समाज देवी की आराधना तो करता है, लेकिन महिलाओं के प्रति भेदभाव, अपमान, असुरक्षा और हिंसा जैसी समस्याएं बनी रहती हैं, तो यह गंभीर आत्मचिंतन का विषय है। नारी का सम्मान केवल धार्मिक अवसरों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। परिवार में बेटियों को समान अवसर देना, महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करना, उनके निर्णयों का सम्मान करना और कार्यस्थलों सहित सार्वजनिक स्थानों पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना सामाजिक जिम्मेदारी है। महिलाओं को कमजोर समझने के बजाय उनकी क्षमताओं और योगदान को स्वीकार करना ही शक्ति की अवधारणा को वास्तविक जीवन में उतारना है। देवी की पूजा तभी सार्थक होगी, जब समाज में प्रत्येक महिला को सम्मान और गरिमा के साथ जीने का अवसर मिले। नवरात्र हमें यह संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि हम अपने घर और समाज में समानता, संवेदनशीलता तथा न्याय के मूल्यों को मजबूत करें। ■

अंततः नवरात्र हमें याद दिलाता है कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को बेहतर बनाना है। पूजा की विधियां, मंत्र और परंपराएं आस्था को अभिव्यक्त करने के माध्यम हैं, लेकिन उनका अंतिम लक्ष्य मन की निर्मलता और जीवन में सदाचार की स्थापना होना चाहिए। माँ दुर्गा की आराधना हमें आत्मबल, करुणा और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। सच्ची शक्ति वही है, जो अहंकार को समाप्त करे, अन्याय का विरोध करे और दूसरों के जीवन में आशा का संचार करे। यदि हमारी श्रद्धा विचारों में पवित्रता, संकल्पों में दृढ़ता और व्यवहार में करुणा बनकर दिखाई दे, तभी शक्ति की आराधना का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा।

डॉ. वंदना पालीवाल

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

उत्तर प्रदेश सरकार





“राजनीति का मुख्य उद्देश्य लोक कल्याण और समाज के अंतिम व्यक्ति की सेवा होनी चाहिए।”

-महात्मा गांधी



अंत्योदय
6 करोड़+ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर

157वीं जयंती पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को कोटि-कोटि नमन!

खादी
₹162 करोड़+ के उत्पादों का विक्रय



सर्वोदय
1 करोड़+ एमएसएमई इकाइयां
4 करोड़ लोगों को आजीविका



ग्राम स्वराज
10.58 लाख+ स्वयं सहायता समूहों से जुड़ीं 1.24 करोड़+ महिलाएं आत्मनिर्भर



स्वावलंबन/ रोजगार
4.25 करोड़+ रोजगार/स्वरोजगार



स्वदेशी
देश के 60% मोबाइल का विनिर्माण उत्तर प्रदेश में



स्वच्छता
100% ओडीएफ राज्य



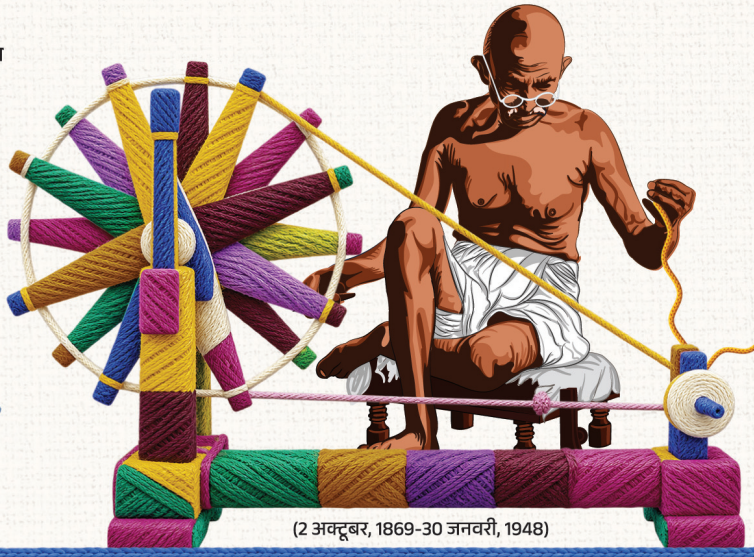

(2 अक्टूबर, 1869-30 जनवरी, 1948)



आत्मनिर्भरता
22% खाद्यान्न उत्पादन
‘देश का फूड बास्केट यूपी’

अंत्योदय से सर्वोदय की ओर

बापू की राह पर कदम बढ़ाएं
स्वच्छ-सशक्त उत्तर प्रदेश बनाएं

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076

UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

प्रेमानंद विवाद

यूट्यूबरों के कृत्यों और कंगारू कोर्ट का कारनामा



डिजिटल युग में भारत के भीतर सूचना तंत्र का लोकतांत्रिकरण जिस तेजी से हुआ है, उसने पारंपरिक मीडिया की सीमाओं को तोड़कर अभिव्यक्ति को एक नया खुला आसमान दिया है। इस बदलाव के सबसे बड़े केंद्र बनकर उभरे हैं देश के लाखों स्वतंत्र डिजिटल रचनाकार और यूट्यूबर, जिन्होंने समाज की आवाज बनने और जनसरोकार से जुड़े मुद्दों को उठाने का बीड़ा उठाया। लेकिन इसी व्यापक और बेलगाम होते जा रहे डिजिटल संसार का एक दूसरा स्याह और डरावना पहलू भी सामने आ रहा है। नाम, शोहरत, व्यूज और मोटी कमाई यानी नाम और दाम की इस अंधी दौड़ में डिजिटल मंचों का एक बड़ा हिस्सा सनसनीखेज कंटेंट परोसने की ऐसी प्रयोगशाला बन चुका है, जो समाज, संवैधानिक मर्यादाओं और देश के शांतिपूर्ण ताने-बाने के लिए गहरी चिंता का विषय बनता जा रहा है।

संजय सक्सेना

सरोकार की पत्रकारिता या रचनात्मकता का स्थान अब एजेंडा संचालित वीडियो, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की कोशिशों, राजनीतिक विद्वेष और किसी प्रतिष्ठित शख्सियत की छवि को मिट्टी में मिलाने के सुनियोजित प्रयासों ने ले लिया है। सूचनाओं के इस महासागर में विश्वसनीयता और संवेदनशीलता पूरी तरह दरकिनार हो चुकी हैं, और अब स्थिति यह हो गई है कि क्लिक और एल्गोरिदम की रेटिंग के लिए समाज के सौहार्द को दांव पर लगाने से भी गुरेज नहीं किया जा रहा है। इस अनियंत्रित दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात एआई की नई तकनीकों ने इस मनमानी को एक ऐसा घातक हथियार दे दिया है, जिसकी वजह से सच और झूठ के बीच का अंतर लगभग खत्म हो चुका है। डीपफेक, वॉयस क्लोनिंग और हेरफेर किए गए विजुअल्स का सहारा लेकर किसी भी सम्मानित नागरिक, राजनेता, अभिनेता या आध्यात्मिक गुरु के चेहरे को झूठी कहानियों में फिट कर दिया जाता है। इस एआई संचालित प्लेटफॉर्म का उपयोग अब वैचारिक नफरत फैलाने, फेक न्यूज को असली खबरों की तरह प्रस्तुत करने और किसी भी संवेदनशील घटना को दंगे की आग में झोंकने के उपकरण के रूप में किया जा रहा है। जब किसी भी घटना की सत्यता को परखे बिना सनसनीखेज थंबनेल और भड़काऊ बयानों के साथ वीडियो अपलोड किए जाते हैं, तो वह समाज में अराजकता फैलाने का जरिया बनते हैं। कई ऐसे मामले सामने आ चुके हैं, जहां केवल राजनीतिक दलों के खिलाफ नैरेटिव सेट करने या किसी विशिष्ट विचारधारा को लाभ पहुंचाने के लिए आधारहीन और मनगढ़ंत तथ्यों को डिजिटल मीडिया पर दिन-रात चलाया जाता है। यह खेल महज कुछ व्यूज तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक बड़ा व्यापारिक मॉडल काम कर रहा है, जो समाज में दरारें पैदा करके ही मुनाफा कमाता है।

डिजिटल कंटेंट क्रिएशन की इस आक्रामकता और संवेदनहीनता का एक ज्वलंत और हालिया उदाहरण प्रख्यात आध्यात्मिक संत प्रेमानंद महाराज और जाने-माने यूट्यूबर व पत्रकार शुभांकर मिश्रा के बीच उपजे हालिया विवाद में खुलकर सामने आया है। वृंदावन के एक आश्रम में हुई एक दुखद घटना और प्रेमानंद महाराज के शिष्य दीपक लोधी (रसिक दुलारी) की रहस्यमयी मौत के बाद, स्वतंत्र डिजिटल मीडिया ने इस मामले को सनसनी की तरह पेश करना शुरू कर दिया। शुभांकर मिश्रा ने अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इस घटनाक्रम की रिपोर्टिंग करते हुए और आश्रम की व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल उठाते हुए इसे बेहद संवेदनहीनता के साथ आश्रम 2.0 का नाम दे दिया, जिसकी तुलना एक विवादास्पद वेब सीरीज से की जाने लगी। उन्होंने अपने वीडियो के माध्यम से यह नैरेटिव सेट करने की कोशिश की कि क्या पूज्य महाराज जी को किसी व्यवस्था द्वारा



हाईजैक कर लिया गया है। इस प्रकार की सतही तुलना और बिना किसी पुख्ता अदालती या पुलिसिया निष्कर्ष के देश के करोड़ों लोगों की आस्था के केंद्र संत प्रेमानंद महाराज को इस विवाद के घेरे में घसीटने के प्रयास ने संत समाज और उनके भक्तों को पूरी तरह झकझोर दिया। इस अनुचित तुलना और संत की गरिमा पर उठाए गए सवालों के बाद वृंदावन से लेकर पूरे देश में व्यापक आक्रोश फैल गया, जहां लोगों ने भारी नाराजगी जताते हुए शुभांकर मिश्रा के पुतले तक फूंके। यद्यपि बाद में विवाद के गहराने पर उन्होंने सफाई देते हुए महाराज जी को पूजनीय और सम्मानीय बताया, लेकिन तब तक टीआरपी और व्यूज बटोरने के चक्कर में एक गंभीर और संवेदनशील आध्यात्मिक छवि पर कीचड़ उछालने का काम पूरा हो चुका था। यह पूरी घटना दर्शाती है कि कैसे स्वतंत्र डिजिटल पत्रकारिता और यूट्यूबरों का एक बड़ा धड़ा केवल हेडलाइन हंटिंग और सनसनी के लिए तथ्यों की मर्यादा को भूल जाता है। इसी तरह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक महिला की डीपफेक और मॉर्फ्ड (छेड़छाड़ की गई) तस्वीरों का प्रकरण भी डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के दुरुपयोग और सोशल मीडिया पर फैलती अराजकता का एक बेहद गंभीर और डरावना उदाहरण था, जिसके खिलाफ कोर्ट में मामला चल रहा है।इस प्रकार की बेलगाम और आक्रामक डिजिटल गतिविधियों की वजह से न केवल समाज शर्मसार होता है, बल्कि कई बार निर्दोष लोगों और सम्मानित परिवारों का पूरा जीवन तबाह हो जाता है। क्योंकि समाज बिना सोचे-समझे उस वायरल झूठ को ही परम सत्य मान लेता है, जिससे पीड़ित व्यक्ति मानसिक अवसाद, सामाजिक बहिष्कार और गहरी ग्लानि के चक्रव्यूह में फंस जाता है। डिजिटल मंचों पर होने वाली इस तरह की पब्लिक लिंचिंग और कंगारू कोर्ट की व्यवस्था के कारण सभ्य समाज की गरिमा तार-तार हो रही है। सवाल यह उठता है कि समाज और देश के लिए इतना बड़ा खतरा बन चुके इन विवादित यूट्यूबरों पर समय रहते कड़ी और त्वरित कार्रवाई क्यों नहीं हो पाती है? इसके पीछे भारतीय डिजिटल कानूनों की जटिलता और मौजूदा नियामक तंत्र की कमियां सबसे बड़ी वजह हैं। भारत में पारंपरिक प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया और विभिन्न प्रसारण नियम कानून बने हुए हैं, लेकिन यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे वैश्विक इंटरनेट मध्यस्थों (इंटरमीडियरीज) पर सीधे नियंत्रण की वैधानिक सीमाएं हैं। आईटी अधिनियम (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट) की धारा 79 के तहत इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को सेफ हार्बर का संरक्षण प्राप्त है, जिससे वे अपने प्लेटफॉर्म पर यूजर द्वारा डाले गए कंटेंट की सीधी जिम्मेदारी से बच जाते हैं। इसके अतिरिक्त, इन यूट्यूबरों के खिलाफ मानहानि या समाज में द्वेष फैलाने के मामले दर्ज होने पर भी कानूनी प्रक्रिया इतनी लंबी और थकाऊ होती है कि त्वरित न्याय की उम्मीद धूमिल हो जाती है। जब तक किसी विवादित या भ्रामक वीडियो को ब्लॉक करने या हटाने की सरकारी या न्यायिक प्रक्रिया पूरी होती है, तब तक वह वीडियो इंटरनेट के कोने-कोने में फैल चुका होता है और जितना संभव होता है उतना नुकसान कर चुका होता है। इसके अलावा, विदेशी धरती से संचालित होने वाले सर्वर और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर मिलने वाले संवैधानिक संरक्षण का बेजा इस्तेमाल भी इन पर नकेल कसने की राह में बड़ा रोड़ा साबित होता है। ■



उच्च शिक्षा का दशक और गुणवत्ता की परीक्षा

ह्यूमनिटीज एंड सोशल साइंसेज कम्युनिकेशंस में 2025 में प्रकाशित एक अध्ययन ने भी रेखांकित किया कि भारत में जनसांख्यिकीय बदलाव का आर्थिक लाभ अनुकूल नीतिगत वातावरण, बेहतर स्वास्थ्य, सम्मानजनक रोजगार और लैंगिक सशक्तीकरण पर निर्भर करता है।

संजीव कुमार मिश्र

समावेशी विकास के हिमायती अर्थशास्त्री मानव पूंजी सिद्धांत के तहत शिक्षा को महज सामाजिक कल्याण या व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम नहीं, बल्कि उत्पादकता, नवाचार और दीर्घकालिक आर्थिक विकास की बुनियादी पूंजी के रूप में देखते हैं। इस लिहाज से कह सकते हैं कि किसी देश की युवा आबादी अपने आप में विकास की गारंटी नहीं होती। उसकी वास्तविक आर्थिक और सामाजिक क्षमता इस बात से निर्धारित होती है कि उसे उपलब्ध शिक्षा ज्ञान, कौशल और निर्णय क्षमता में कितना रूपांतरित कर पाती है। भारत आज इसी द्वंद्व के बीच खड़ा है। एक ओर विशाल युवा आबादी जनसांख्यिकीय लाभांश की संभावना प्रस्तुत करती है, दूसरी ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और वैश्विक श्रम बाजार में आते बदलाव मानव पूंजी निर्माण की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती दे रहे हैं।



ह्यूमनिटीज एंड सोशल साइंसेज कम्युनिकेशंस में 2025 में प्रकाशित एक अध्ययन ने भी रेखांकित किया कि भारत में जनसांख्यिकीय बदलाव का आर्थिक लाभ अनुकूल नीतिगत वातावरण, बेहतर स्वास्थ्य, सम्मानजनक रोजगार और लैंगिक सशक्तीकरण पर निर्भर करता है। इसलिए पिछले एक दशक में उच्च शिक्षा के विस्तार और सुधारों का मूल्यांकन केवल संस्थानों तथा नामांकन की बढ़ती संख्या से नहीं, बल्कि इस कसौटी पर किया जाना चाहिए कि भारत अपनी युवा आबादी को ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की सक्षम मानवीय शक्ति में कितना बदल पाया है।

इस दशक में भारतीय उच्च शिक्षा का सामाजिक आधार उल्लेखनीय रूप से विस्तृत हुआ है। अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण के अनुसार, कुल नामांकन 2014 से 15 के लगभग 3.42 करोड़ से बढ़कर 2023 से 24 में करीब 4.50 करोड़ हो गया। महिलाओं के साथ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की भागीदारी भी बढ़ी है, जो उच्च शिक्षा के व्यापक सामाजिक विस्तार का संकेत है। हालांकि, नामांकन वृद्धि अपने आप में पर्याप्त नहीं है। वास्तविक लोकतंत्रीकरण के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, पर्याप्त संसाधन और रोजगारपरक अवसरों तक समान पहुंच जरूरी है। महानगरों और छोटे शहरों के संस्थानों के बीच गुणवत्ता का अंतर अब प्रमुख चुनौती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने उच्च शिक्षा सुधार के लिए व्यापक वैचारिक ढांचा प्रस्तुत किया। बहुविषयक अध्ययन, लचीली पाठ्यचर्या, शोध उन्मुख शिक्षा, कौशल विकास और अकादमिक क्रेडिट की हस्तांतरणीयता इसके प्रमुख प्रावधान हैं। अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट विद्यार्थियों को शैक्षणिक यात्रा में अधिक लचीलापन देता है, जबकि समर्थ जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रवेश, परीक्षा और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करने की क्षमता रखते हैं। इन पहलों का महत्व संस्थागत विस्तार से आगे बढ़कर सीखने की गुणवत्ता, शैक्षणिक गतिशीलता और प्रशासनिक दक्षता बढ़ाने में है।

फिर भी नीतिगत महत्वाकांक्षा और संस्थागत वास्तविकता के बीच की दूरी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बहुविषयक शिक्षा के लिए विभिन्न विषयों के सक्षम विभाग, प्रशिक्षित शिक्षक और पर्याप्त अकादमिक संसाधन चाहिए। शोध आधारित शिक्षा के लिए प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय, शोध अनुदान और मार्गदर्शन की व्यवस्था आवश्यक है। डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बना सकते हैं, लेकिन वे कमजोर शिक्षण व्यवस्था की भरपाई नहीं कर सकते। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति का वास्तविक मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि उसके प्रावधानों ने कक्षाओं में शिक्षण, विद्यार्थियों के सीखने के स्तर और विश्वविद्यालयों की अकादमिक संस्कृति में कितना बदलाव पैदा किया है।

उच्च शिक्षा सुधार की केंद्रीय कसौटी शिक्षक व्यवस्था और शोध क्षमता है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाले कर्मचारी नहीं, बल्कि ज्ञान सृजन, आलोचनात्मक विवेक और बौद्धिक स्वतंत्रता के वाहक हैं। अनेक संस्थानों में रिक्त पदों, संविदा नियुक्तियों और गैर शैक्षणिक दायित्वों का दबाव शिक्षण, शोध निर्देशन और विद्यार्थियों से संवाद को प्रभावित करता है। इसलिए पारदर्शी नियुक्ति, अकादमिक स्वतंत्रता और निरंतर प्रशिक्षण को दीर्घकालिक निवेश के रूप में देखना आवश्यक है।

गौरतलब है कि विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता शोध और नवाचार में उनके योगदान से भी निर्धारित होती है। भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन व्यापक विश्वविद्यालय व्यवस्था में शोध संस्कृति को और मजबूत करने की आवश्यकता है। कृषि, जलवायु परिवर्तन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शहरीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्र भारतीय संदर्भ में महत्वपूर्ण शोध अवसर प्रस्तुत करते हैं। इसके लिए शोध वित्तपोषण बढ़ाने, उद्योग और अकादमिक संस्थानों के सहयोग तथा युवा शोधकर्ताओं को स्वतंत्र अवसर देने की जरूरत है। विश्वविद्यालयों को ज्ञान के उपभोक्ता नहीं, बल्कि उसके उत्पादक केंद्र बनाना होगा।

इसी तरह रोजगार और उच्च शिक्षा के संबंध को भी अधिक सूक्ष्मता से समझने की जरूरत है। डिग्री और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी पाठ्यक्रमों की प्रासंगिकता, व्यावहारिक प्रशिक्षण और उद्योग की बदलती मांगों पर प्रश्न उठाती है। तकनीकी दक्षता, डिजिटल साक्षरता, संचार क्षमता और समस्या समाधान जैसे कौशल अब अनेक क्षेत्रों में आवश्यक हो गए हैं। फिर भी, रोजगारोन्मुखी शिक्षा का अर्थ विश्वविद्यालयों को उद्योग की तात्कालिक जरूरतों के अधीन कर देना नहीं है। मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषय विद्यार्थियों में ऐतिहासिक चेतना, नैतिक विवेक, लोकतांत्रिक समझ और समाज के जटिल प्रश्नों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करते हैं। एक सक्षम उच्च शिक्षा व्यवस्था को आर्थिक उपयोगिता और बौद्धिक स्वतंत्रता के बीच संतुलन कायम करना होगा। उसका उद्देश्य केवल रोजगार पाने योग्य व्यक्ति तैयार करना नहीं, बल्कि ज्ञानवान, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक बनाना भी है।

हाल में बिहार में 211 नए सरकारी डिग्री कॉलेजों की शुरुआत, 2,451 संविदा सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति तथा विश्वविद्यालयों में प्रशासनिक और डिजिटल सुधारों की पहल इसी राष्ट्रीय चुनौती का एक प्रासंगिक उदाहरण है। इन प्रयासों से उच्च शिक्षा की भौगोलिक पहुंच और संस्थागत क्षमता बढ़ाने की संभावना बनती है। लेकिन इनकी दीर्घकालिक सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि कॉलेजों में नियमित शिक्षण, पर्याप्त संसाधन, अकादमिक नेतृत्व और गुणवत्तापूर्ण अध्ययन का वातावरण कितना विकसित होता है। बिहार का अनुभव इस व्यापक तथ्य को रेखांकित करता है कि संस्थानों की संख्या बढ़ाना सुधार का प्रारंभिक चरण है, उसकी परिणति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में ही हो सकती है।

ये पूरा दशक भारतीय उच्च शिक्षा में विस्तार और संस्थागत परिवर्तन का दौर रहा है, लेकिन अगली चुनौती कहीं अधिक जटिल है। बढ़ता नामांकन, महिलाओं और वंचित समूहों की भागीदारी तथा डिजिटल प्रशासन सकारात्मक आधार तैयार करते हैं, पर गुणवत्ता, शिक्षक उपलब्धता, शोध क्षमता और रोजगारपरकता की चुनौतियां अभी बनी हुई हैं। इसलिए उच्च शिक्षा नीति का केंद्र अब मात्र विस्तार नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण और समान अवसरों का निर्माण होना चाहिए। भारत की युवा आबादी तभी वास्तविक जनसांख्यिकीय लाभांश में बदल सकती है, जब शिक्षा उसे ज्ञान, कौशल और नवाचार की क्षमता प्रदान करे। आने वाले दशक की अग्निपरीक्षा इसी रूपांतरण में निहित है। ■



जेईई एडवांस्ड 2026: महिला अभ्यर्थियों की सफलता दर ने बनाया

छह वर्षों का रिकॉर्ड

जेईई एडवांस्ड 2026 के परिणामों ने भारत की इंजीनियरिंग शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे एक महत्वपूर्ण बदलाव को उजागर किया है। इस वर्ष महिला उम्मीदवारों, जिसमें एससी और एसटी वर्गों की महिला उम्मीदवार भी शामिल हैं, की सफलता दर छह वर्षों में सबसे अधिक रही है। यह उपलब्धि केवल एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि देश की युवा महिलाओं की बदलती आकांक्षाओं, तैयारी के तरीकों और शिक्षा के बढ़ते अवसरों का संकेत है। कई दशकों तक इंजीनियरिंग, तकनीक और विज्ञान की शिक्षा को प्राय: पुरुष-प्रधान क्षेत्र माना जाता रहा। हालांकि महिलाओं ने विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन देश की सबसे कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं में उनकी भागीदारी और प्रतिनिधित्व तुलनात्मक रूप से सीमित रहा। जेईई एडवांस्ड में महिलाओं के बेहतर प्रदर्शन से संकेत मिलता है कि यह पारंपरिक तस्वीर धीरे-धीरे बदल रही है। जेईई एडवांस्ड भारत की सबसे चुनौतीपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं में से एक है। यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों यानी आईआईटी के स्नातक कार्यक्रमों में प्रवेश का प्रमुख मार्ग है।

डॉ. विजय गर्ग

आईआईटी ने इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, उद्यमियों और तकनीकी विशेषज्ञों की अनेक पीढ़ियां तैयार की हैं। इस परीक्षा में सफलता के लिए केवल सूत्रों को याद करना पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को अवधारणात्मक समझ, विश्लेषणात्मक सोच, गणितीय क्षमता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सीमित समय में नए तथा कठिन प्रश्नों को हल करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। ऐसी चुनौतीपूर्ण पृष्ठभूमि में 2026 में महिला उम्मीदवारों की बढ़ी हुई सफलता विशेष ध्यान देने योग्य है। जेईई एडवांस्ड में महिलाओं की बढ़ती सफलता भारतीय समाज में हो रहे व्यापक बदलाव को भी दर्शाती है। माता-पिता अब अपनी बेटियों को गणित, भौतिक विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, इंजीनियरिंग और अन्य एसटीएम को अपनाने के लिए अधिक प्रोत्साहित कर रहे हैं।

विद्यालय भी इस बात के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं कि लड़कियों को विज्ञान प्रयोगशालाओं, गणित की कक्षाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और डिजिटल शिक्षा में लड़कों के समान अवसर मिलने चाहिए। प्रतियोगी परीक्षाएं कई बार उन शैक्षिक असमानताओं को भी सामने लाती हैं जो सामान्य कक्षा में दिखाई नहीं देतीं। कोई छात्रा विद्यालय में बहुत अच्छा प्रदर्शन कर सकती है, लेकिन कोचिंग, अध्ययन सामग्री, डिजिटल संसाधनों या उचित मार्गदर्शन की कमी के कारण राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में कठिनाई का सामना कर सकती है। इसलिए महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और सफलता यह संकेत देती है कि अधिक से अधिक लड़कियां इन बाधाओं को पार करने के रास्ते खोज रही हैं। एससी और एसटी वर्गों की महिला उम्मीदवारों की सफलता इस उपलब्धि को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है। शिक्षा की प्रगति को केवल उन विद्यार्थियों की उपलब्धियों से नहीं मापा जा सकता, जिन्हें पहले से ही अच्छे विद्यालयों, कोचिंग संस्थानों और शहरी सुविधाओं तक पहुंच प्राप्त है। वास्तविक शैक्षिक प्रगति वही है जो समाज के विभिन्न वर्गों और आर्थिक पृष्ठभूमियों तक पहुंचे। कई एससी और एसटी वर्गों की लड़कियों के लिए जेईई एडवांस्ड जैसी परीक्षा तक पहुंचने का सफर अतिरिक्त चुनौतियों से भरा हो सकता है। इनमें भौगोलिक दूरी, सीमित शैक्षिक सुविधाएं, आर्थिक कठिनाइयां, प्रतियोगी परीक्षाओं के बारे में कम जानकारी और कभी-कभी ऐसी सामाजिक धारणाएं भी शामिल हो सकती हैं, जो लड़कियों को कठिन पेशेवर क्षेत्रों में आगे बढ़ने से हतोत्साहित करती हैं। जब इन वर्गों की लड़कियां उच्च स्तर की प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त करती हैं, तो वे शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति का उदाहरण बनती हैं। एक लड़की का आईआईटी में प्रवेश केवल उसका अपना भविष्य नहीं बदलता। वह अपने परिवार, गांव, विद्यालय और समाज की अन्य लड़कियों के लिए प्रेरणा बन सकती है। उसकी सफलता माता-पिता की सोच बदल सकती है और अन्य लड़कियों को इंजीनियरिंग, विज्ञान और तकनीक को अपने करियर के विकल्प के रूप में देखने के लिए प्रेरित कर सकती है। आंकड़े हमें रुझानों को समझने में मदद करते हैं, लेकिन वे सफलता के पीछे छिपी मानवीय कहानियों को नहीं बताते। हर सफल उम्मीदवार की यात्रा अलग होती है। कुछ छात्राओं ने महानगरों के विद्यालयों और कोचिंग संस्थानों की सुविधाओं के साथ तैयारी की होगी। कुछ ने छोटे शहरों या गांवों में रहकर ऑनलाइन संसाधनों और स्व-अध्ययन के माध्यम से तैयारी की होगी। कुछ को समर्पित शिक्षकों का मार्गदर्शन मिला होगा, जबकि कुछ ने शैक्षणिक कठिनाइयों को अपनी मेहनत और दृढ़ता से पार किया होगा। इसलिए महिला उम्मीदवारों की छह वर्षों में सबसे अधिक सफलता दर को विद्यार्थियों, माता-पिता, शिक्षकों, विद्यालयों, कोचिंग संस्थानों, डिजिटल शिक्षा मंचों और विभिन्न शैक्षिक पहलों की सामूहिक उपलब्धि के रूप में देखा जाना चाहिए। हालांकि, इस परिणाम से यह धारणा नहीं बननी चाहिए कि इंजीनियरिंग शिक्षा में लैंगिक समानता पूरी तरह प्राप्त हो चुकी है। किसी एक परीक्षा में सफलता दर बढ़ना निश्चित रूप से उत्साहजनक है, लेकिन लंबे समय तक समान प्रतिनिधित्व के लिए निरंतर सहयोग और अवसरों की आवश्यकता होगी। जेईई एडवांस्ड का एक महत्वपूर्ण संदेश यह है कि वैज्ञानिक जिज्ञासा का विकास छोटी उम्र से ही किया जाना चाहिए। किसी कठिन प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी ढेर सारी किताबें जमा करने या हजारों प्रश्न याद करने से शुरू नहीं होनी चाहिए। इसकी शुरुआत मजबूत बुनियादी समझ से होनी चाहिए। विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि गणित का कोई सूत्र क्यों काम करता है, कोई भौतिक घटना क्यों होती है और रसायन विज्ञान के सिद्धांतों को नई परिस्थितियों में कैसे लागू किया जा सकता है। विशेष रूप से लड़कियों को गणित और विज्ञान प्रतियोगिताओं, प्रयोगशाला गतिविधियों, कोडिंग, रोबोटिक्स, नवाचार परियोजनाओं और ओलंपियाड में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उद्देश्य केवल अधिक परीक्षा उम्मीदवार तैयार करना नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी और स्वतंत्र सोच रखने वाली युवा महिलाओं को तैयार करना होना चाहिए। लड़कियों की बदलती शैक्षिक आकांक्षाओं के पीछे शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई बार शिक्षक का केवल इतना कहना— 'तुम यह कर सकती हो'— किसी विद्यार्थी के पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है। अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में बुद्धि की कमी नहीं होती, बल्कि आत्मविश्वास की कमी होती है। शिक्षकों को गणित और विज्ञान में रुचि तथा योग्यता रखने वाली छात्राओं की पहचान करके उन्हें अतिरिक्त चुनौतियां और अवसर देने चाहिए। लैंगिक धारणाओं के कारण लड़कियों को कठिन विषयों से दूर नहीं रखना चाहिए। विद्यालयों में गणित और विज्ञान क्लब बनाए जा सकते हैं, समस्या-समाधान सत्र आयोजित किए जा सकते हैं और वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों के साथ विद्यार्थियों की बातचीत कराई जा सकती है। आज शिक्षक की भूमिका केवल जानकारी देने वाले व्यक्ति की नहीं रही। वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक और मेंटर भी है। जेईई एडवांस्ड में महिलाओं की बढ़ती सफलता भारत के भविष्य के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के लिए उत्साहजनक है। भारत को अधिक महिला इंजीनियरों, शोधकर्ताओं, भौतिक वैज्ञानिकों, गणितज्ञों, कंप्यूटर वैज्ञानिकों, उद्यमियों और तकनीकी विशेषज्ञों की आवश्यकता है। विज्ञान में विविधता केवल प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है। अलग-अलग अनुभव और दृष्टिकोण नए प्रश्न पूछने, बेहतर शोध करने और नए समाधान खोजने में योगदान दे सकते हैं। ■

तकनीक नए अवसर पैदा कर रही है

डिजिटल शिक्षा के विस्तार ने भौगोलिक दूरी को कम करने में भी मदद की है। आज गांव में रहने वाली छात्रा भी अनुभवी शिक्षकों के ऑनलाइन व्याख्यान देख सकती है, डिजिटल पुस्तकें पढ़ सकती है, ऑनलाइन टेस्ट दे सकती है और वर्चुअल डाउट-सेशन में भाग ले सकती है। हालांकि डिजिटल शिक्षा सभी असमानताओं को समाप्त नहीं करती। उपकरणों, बिजली और तेज इंटरनेट तक पहुंच अभी भी हर जगह समान नहीं है। फिर भी इसने ऐसे अवसर पैदा किए हैं, जिनकी कुछ वर्ष पहले कल्पना करना भी कठिन था। जो लड़कियां दूर स्थित कोचिंग संस्थानों तक नहीं जा सकतीं, उनके लिए डिजिटल शिक्षा विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है। लेकिन तकनीक को साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, अनुशासित अध्ययन के विकल्प के रूप में नहीं। विद्यार्थियों को पढ़ाई, अभ्यास, पुनरावृत्ति, मॉक टेस्ट, पर्याप्त नींद, शारीरिक गतिविधि और मानसिक संतुलन के बीच उचित तालमेल बनाए रखना चाहिए।

सफलता को केवल आईआईटी प्रवेश से नहीं मापना चाहिए

जेईई एडवांस्ड में सफलता निश्चित रूप से एक बड़ी उपलब्धि है, लेकिन यह याद रखना भी आवश्यक है कि यह परीक्षा किसी विद्यार्थी की पूरी बुद्धिमत्ता या भविष्य की सफलता का अंतिम मापदंड नहीं है। हर प्रतिभाशाली विद्यार्थी आईआईटी में प्रवेश नहीं पा सकता। कोई विश्वविद्यालय, चिकित्सा शिक्षा, शुद्ध विज्ञान, शोध, डिजाइन, उद्यमिता या अध्यापन जैसे क्षेत्रों को अपना सकता है। शिक्षा का व्यापक उद्देश्य सक्षम, नैतिक, रचनात्मक और जिम्मेदार मनुष्य तैयार करना होना चाहिए। जो विद्यार्थी जेईई एडवांस्ड में सफल नहीं हो पाता, उसे यह नहीं समझना चाहिए कि उसका जीवन असफल हो गया। प्रतियोगी परीक्षा किसी विशेष दिन और विशेष परिस्थितियों में प्रदर्शन को मापती है। यह रचनात्मकता, नेतृत्व, जिज्ञासा, संवेदनशीलता और मानवीय क्षमता के हर पहलू को नहीं माप सकती।

माता-पिता के लिए संदेश

2026 के परिणामों से दिखाई दे रही प्रगति को बनाए रखने में माता-पिता की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बेटियों को बेटों के समान प्रोत्साहन, शैक्षिक निवेश और अपने करियर का चुनाव करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। केवल लिंग के आधार पर उनके अवसरों को सीमित नहीं किया जाना चाहिए। इसके साथ ही माता-पिता को अत्यधिक दबाव से भी बचना चाहिए। बेटी को आईआईटी में प्रवेश दिलाने की इच्छा लगातार तुलना, डर या मानसिक दबाव का कारण नहीं बननी चाहिए। सच्चा सहयोग वह है जिसमें बच्चों को संसाधन, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन दिया जाए तथा उनकी रुचि और योग्यता का सम्मान किया जाए।

चिंताजनक

गर्म होते महासागर, बदलती जलवायु

2027 में अल नीनो और पृथ्वी का भविष्य



पृथ्वी की जलवायु में तेजी से बदलाव हो रहे हैं और इन परिवर्तनों के केंद्र में महासागर हैं। समुद्र के बढ़ते तापमान, पिघलते हिमनद, वर्षा के बदलते स्वरूप और चरम मौसमी घटनाएँ वायुमंडल, महासागरों तथा मानव समाज के बीच संबंधों को नया रूप दे रही हैं। वर्ष 2027 की ओर देखते हुए एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है- अल नीनो की संभावित स्थिति और वैश्विक तापमान में वृद्धि मिलकर पृथ्वी की जलवायु को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं? यद्यपि वर्ष 2027 की जलवायु परिस्थितियों का सटीक पूर्वानुमान अभी निश्चित रूप से नहीं किया जा सकता, फिर भी अल नीनो और महासागरों के लगातार गर्म होने की प्रक्रिया को समझकर हम संभावित पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए बेहतर तैयारी कर सकते हैं।

डॉ. विजय गर्ग

महासागर पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे ग्रीनहाउस गैसों के कारण वातावरण में फँसी अतिरिक्त गर्मी का अधिकांश हिस्सा अवशोषित करते हैं और ऊर्जा की विशाल मात्रा को अपने भीतर संचित रखते हैं। समुद्री धाराएँ दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में गर्मी का परिवहन करती हैं, वर्षा को प्रभावित करती हैं तथा तूफानों के विकास और गति को निर्धारित करने में योगदान देती हैं। लेकिन इस प्राकृतिक व्यवस्था की भी सीमाएँ हैं। मानवीय गतिविधियों से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ने के कारण महासागर लगातार गर्म हो रहे हैं। इससे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है, प्रवाल भित्तियों के विरंजन का खतरा बढ़ता है और पानी के तापीय विस्तार के कारण समुद्र का स्तर ऊपर उठता है। गर्म महासागर केवल समुद्री जल के तापमान में वृद्धि का संकेत नहीं हैं। वे वायुमंडलीय परिसंचरण, नमी की उपलब्धता, मानसून के व्यवहार और मौसम प्रणालियों के विकास को भी प्रभावित कर सकते हैं। महासागर और वायुमंडल एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए एक में होने वाला परिवर्तन दूसरे को भी प्रभावित करता है।

अल नीनो क्या है?

अल नीनो एक प्राकृतिक जलवायु घटना है, जिसमें भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी भाग में समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। यह अल नीनो-दक्षिणी दोलन का हिस्सा है। इसके अंतर्गत ला नीना की स्थिति भी आती है, जिसमें समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से कम हो जाता है। इनके बीच तटस्थ परिस्थितियाँ भी हो सकती हैं। सामान्य परिस्थितियों में व्यापारिक पवनें गर्म सतही जल को पश्चिमी प्रशांत महासागर की ओर धकेलती हैं, जबकि दक्षिण अमेरिका के तट के पास अपेक्षाकृत ठंडा जल ऊपर उठता है। अल नीनो के दौरान ये पवनें कमजोर पड़ जाती हैं। गर्म जल पूर्व की ओर फैलने लगता है और वायुमंडलीय परिसंचरण के स्वरूप में बदलाव आता है। इन परिवर्तनों का प्रभाव प्रशांत महासागर से दूर स्थित क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है। कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा और बाढ़ की संभावना बढ़ती है, जबकि दूसरे क्षेत्रों में सूखा, गर्मी और जल संकट उत्पन्न हो सकता है। प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि अल नीनो कितना शक्तिशाली है, कब विकसित होता है और अन्य जलवायु परिस्थितियाँ कैसी हैं। यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक चरम मौसमी घटना का कारण अल नीनो नहीं होता। यह कुछ क्षेत्रों में विशेष प्रकार की मौसमी परिस्थितियों की संभावना को बढ़ा या घटा सकता है।

2027 में पृथ्वी की जलवायु को कैसे प्रभावित कर सकता है अल नीनो?

वर्ष 2027 की जलवायु पर अल नीनो का प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि यह घटना विकसित होती है या नहीं, कब शुरू होती है, कितनी शक्तिशाली होती है और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि के साथ इसकी क्या अंत:क्रिया होती है। यदि एक महत्वपूर्ण अल नीनो विकसित होता है, तो यह 2027 में वैश्विक औसत तापमान को और बढ़ाने में योगदान दे सकता है। अल नीनो महासागर और वायुमंडल के बीच ऊर्जा के वितरण को प्रभावित करता है और समुद्र में संचित

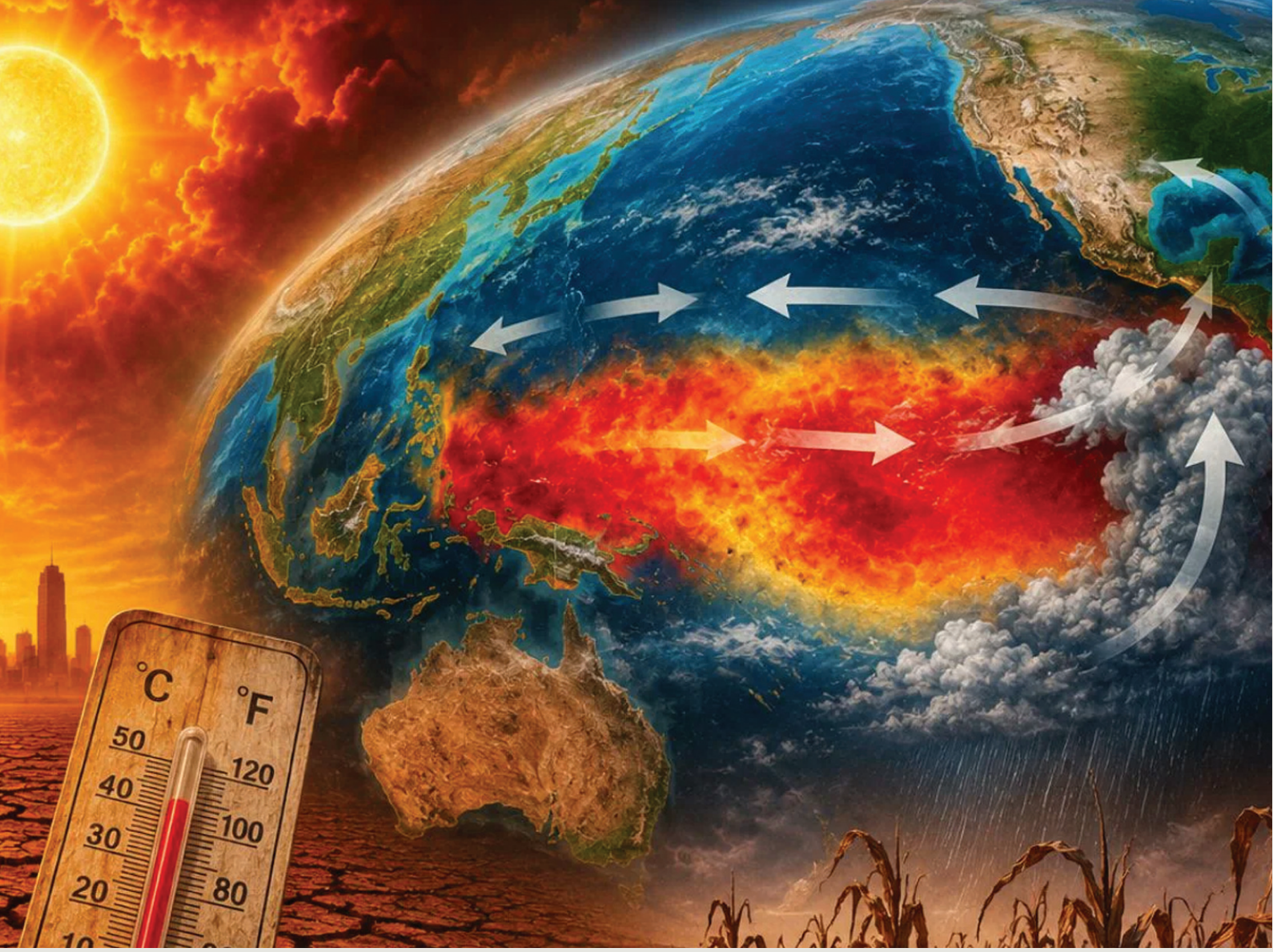

गर्मी का कुछ हिस्सा वायुमंडल में पहुँच सकता है। दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि के साथ मिलकर यह प्रभाव अत्यधिक गर्म परिस्थितियों की आशंका बढ़ा सकता है। हालाँकि, यह मान लेना उचित नहीं होगा कि 2027 में निश्चित रूप से शक्तिशाली अल नीनो आएगा। वैज्ञानिक समुद्री तापमान, व्यापारिक पवनों, वायुमंडलीय दबाव और अन्य संकेतकों का अध्ययन करके इसकी संभावना का आकलन करते हैं।

वैश्विक तापमान में वृद्धि

अल नीनो का एक प्रमुख संभावित प्रभाव वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि है। हाल के वर्षों ने दिखाया है कि प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता और दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि मिलकर असाधारण गर्म परिस्थितियाँ पैदा कर सकती हैं। यदि 2027 में अल नीनो विकसित होता है, तो पहले से गर्म हो रही पृथ्वी का तापमान और बढ़ सकता है। इससे विशेष रूप से उन क्षेत्रों में लू और अत्यधिक गर्मी का खतरा बढ़ सकता है, जहाँ पहले से तापमान बहुत अधिक रहता है। अत्यधिक गर्मी मानव स्वास्थ्य, श्रमिकों की उत्पादकता, बिजली की माँग और कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। बुजुर्गों, बच्चों, खुले में काम करने वाले श्रमिकों और शीतलन सुविधाओं से वंचित लोगों पर इसका प्रभाव अधिक गंभीर हो सकता है। यहाँ प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता और दीर्घकालिक तापवृद्धि के बीच अंतर समझना आवश्यक है। अल नीनो कुछ समय के लिए वैश्विक तापमान बढ़ा सकता है, लेकिन पृथ्वी के लगातार गर्म होने का मुख्य कारण मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसें हैं।

भारतीय मानसून और कृषि की चुनौतियाँ

भारत के लिए अल नीनो और दक्षिण-पश्चिम मानसून के बीच संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारतीय कृषि का एक बड़ा हिस्सा मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है। यही वर्षा फसलों, भूजल पुनर्भरण और ग्रामीण आजीविका को सहारा देती है। ऐतिहासिक रूप से अल नीनो की परिस्थितियों का संबंध भारत में सामान्य से कम मानसूनी वर्षा की बढ़ी हुई संभावना से रहा है। हालाँकि, यह संबंध हर वर्ष एक जैसा नहीं होता। कुछ अल नीनो वर्षों में भी अपेक्षाकृत अच्छी वर्षा हुई है। हिंद महासागर द्विध्रुव, क्षेत्रीय समुद्री तापमान, वायुमंडलीय परिसंचरण और अन्य कारक मानसून को प्रभावित कर सकते हैं। यदि 2027 में अल नीनो विकसित होता है, तो वैज्ञानिकों और नीति-निर्माताओं को मानसून पर उसके संभावित प्रभावों का सावधानीपूर्वक आकलन करना होगा। केवल अल नीनो के आधार पर सूखे की निश्चित भविष्यवाणी करना उचित नहीं है। किसानों को समय पर मौसम संबंधी जानकारी, उपयुक्त फसल किस्मों, कुशल सिंचाई, मिट्टी में नमी के संरक्षण और विविध फसल प्रणालियों से लाभ मिल सकता है। सरकारें सूखा प्रभावित क्षेत्रों के लिए आकस्मिक योजनाएँ तैयार कर सकती हैं और किसानों तक विश्वसनीय मौसम पूर्वानुमान पहुँचा सकती हैं। पंजाब और अन्य कृषि प्रधान क्षेत्रों के लिए जल प्रबंधन विशेष महत्व रखता है। भूजल का संरक्षण, फसल विविधीकरण और सिंचाई की दक्षता बढ़ाना बदलती वर्षा परिस्थितियों के प्रति कृषि की संवेदनशीलता कम कर सकता है।

अल नीनो वायुमंडल में गर्मी और नमी के वितरण को बदलकर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में वर्षा के स्वरूप को प्रभावित करता है। कुछ क्षेत्रों में लंबे समय तक शुष्क परिस्थितियाँ रह सकती हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में असामान्य रूप से भारी वर्षा हो सकती है। सूखे के कारण जलाशयों का स्तर घट सकता है, फसलें नष्ट हो सकती हैं, जंगलों में आग का खतरा बढ़ सकता है और पेयजल की कमी हो सकती है। दूसरी ओर, अत्यधिक वर्षा से जल निकासी व्यवस्था पर दबाव पड़ता है, अचानक बाढ़ आ सकती है और सड़कें, घर तथा कृषि भूमि क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। इन प्रभावों का स्वरूप सभी महाद्वीपों में एक जैसा नहीं होगा। स्थानीय भूगोल, मिट्टी की स्थिति, भूमि उपयोग, तूफ़ानों के मार्ग और क्षेत्रीय मौसम प्रणालियाँ यह निर्धारित करती हैं कि किसी स्थान पर कितना नुकसान होगा। इसलिए जलवायु के लिए तैयारी केवल वैश्विक पूर्वानुमान पर निर्भर नहीं रह सकती। सरकारों को क्षेत्रीय पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ, बाढ़ जोखिम का आकलन, सूखे की निगरानी और संवेदनशील समुदायों तक समय पर सूचना पहुँचाने की व्यवस्था मजबूत करनी चाहिए।

प्रवाल भित्तियाँ और समुद्री जीवन

महासागर दोहरी चुनौती का सामना कर रहे हैं—दीर्घकालिक तापवृद्धि और समुद्री तापमान में प्राकृतिक उतार-चढ़ाव। जब प्रवाल भित्तियों के आसपास समुद्री जल लंबे समय तक असामान्य रूप से गर्म रहता है, तो प्रवाल विरंजन की घटना हो सकती है। गंभीर या लंबे समय तक रहने वाला विरंजन प्रवालों की मृत्यु का कारण बन सकता है। इससे उन समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों को खतरा होता है, जो मत्स्य पालन, पर्यटन और तटीय समुदायों की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण हैं। समुद्री ताप लहरें मछलियों के वितरण को बदल सकती हैं, खाद्य शृंखलाओं को बाधित कर सकती हैं और समुद्री जीवों के प्रजनन तथा जीवित रहने की क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। कुछ प्रजातियाँ ठंडे पानी की ओर जा सकती हैं, जबकि दूसरी प्रजातियों के लिए बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होना कठिन हो सकता है। अल नीनो उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के कुछ हिस्सों में गर्मी बढ़ा सकता है, लेकिन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर इसका प्रभाव स्थान के अनुसार अलग-अलग होता है। व्यापक समस्या यह है कि जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक घटनाओं के दौरान तापमान की मूल पृष्ठभूमि को लगातार ऊँचा कर रहा है। समुद्री आवासों की रक्षा, प्रदूषण में कमी, प्रभावी समुद्री संरक्षित क्षेत्रों का विकास और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। वैश्विक तापवृद्धि के कारण समुद्र का स्तर मुख्यत: दो कारणों से बढ़ता है। पहला, गर्म होने पर समुद्री जल फैलता है। दूसरा, पिघलते हिमनदों और बर्फ की विशाल चादरों से अतिरिक्त पानी महासागरों में पहुँचता है। अल नीनो समुद्र के स्तर में होने वाली दीर्घकालिक वृद्धि का एकमात्र कारण नहीं है। फिर भी यह महासागरीय क्षेत्रों में पानी के अस्थायी वितरण को बदल सकता है और कुछ स्थानों पर समुद्र के क्षेत्रीय स्तर को प्रभावित कर सकता है। जब इन परिवर्तनों के साथ ऊँची ज्वार-भाटा की स्थिति, तूफानी लहरें और तटीय कटाव जुड़ते हैं, तो तटीय समुदायों के लिए खतरा बढ़ सकता है। निचले द्वीपों, घनी आबादी वाले समुद्री तटों और तटीय शहरों को दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता है। बेहतर जल निकासी, मैंग्रोव वनों की बहाली, मजबूत तटीय बुनियादी ढाँचा और सुनियोजित अनुकूलन उपाय संभावित नुकसान को कम कर सकते हैं। जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरण का विषय नहीं है। यह स्वास्थ्य, समानता और आर्थिक सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है। अत्यधिक गर्मी से निर्जलीकरण, हीट एग्जॉशन और जानलेवा हीटस्ट्रोक हो सकता है। सूखा खाद्य असुरक्षा बढ़ा सकता है, जबकि बाढ़ पेयजल को दूषित कर सकती है और स्वास्थ्य सेवाओं को बाधित कर सकती है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण परिवार विस्थापित हो सकते हैं, बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो सकती है और गरीबी बढ़ सकती है। इस संकट का सबसे अधिक बोझ अक्सर उन लोगों पर पड़ता है, जिनका ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान कम है, लेकिन जिनके पास आपदाओं से उबरने के संसाधन भी सीमित हैं। इसलिए 2027 और उसके बाद की परिस्थितियों के लिए तैयारी में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना, खुले में काम करने वाले श्रमिकों की सुरक्षा, आपातकालीन सेवाओं में सुधार और ग्रामीण तथा आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों तक जलवायु संबंधी जानकारी पहुँचाना शामिल होना चाहिए। ■

क्या विज्ञान 2027 की जलवायु का पूर्वानुमान लगा सकता है?

आधुनिक जलवायु विज्ञान उपग्रहों, समुद्री बुआओं, मौसम केंद्रों, कंप्यूटर मॉडलों और ऐतिहासिक अभिलेखों की सहायता से पृथ्वी की बदलती परिस्थितियों की निगरानी करता है। मौसमी पूर्वानुमान प्रणालियाँ यह अनुमान लगा सकती हैं कि अल नीनो, ला नीना या तटस्थ ईएनएसओ परिस्थितियों में से किसकी संभावना अधिक है। जलवायु मॉडल सामान्य से अधिक तापमान और कुछ क्षेत्रों में वर्षा के बदलते स्वरूप की संभावनाओं का भी आकलन कर सकते हैं। फिर भी मौसमी पूर्वानुमानों की सीमाएँ हैं। उनकी सटीकता क्षेत्र और मौसम के अनुसार बदलती है। कई महीने पहले प्रत्येक तूफान, बाढ़ या लू की घटना का विश्वसनीय पूर्वानुमान लगाना संभव नहीं है। इसलिए वैज्ञानिकों को भविष्यवाणियाँ निश्चित दावों के बजाय संभावनाओं के रूप में प्रस्तुत करनी चाहिए। संभावित अल नीनो को आपदा की निश्चित घोषणा नहीं, बल्कि तैयारी मजबूत करने के संकेत के रूप में देखना चाहिए। 2027 के नजदीक आने पर प्रशांत महासागर की लगातार निगरानी, मौसम विज्ञान संस्थानों के नियमित पूर्वानुमान और क्षेत्रीय जलवायु आकलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण होंगे।

दुनिया को क्या करना चाहिए?

2027 में संभावित जलवायु चुनौतियाँ दो प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं—अनुकूलन और उत्सर्जन में कमी। अनुकूलन का अर्थ है उन जलवायु प्रभावों के लिए तैयारी करना, जिन्हें पूरी तरह टाला नहीं जा सकता। इसमें गर्मी से बचाव की योजनाएँ, सूखा सहने वाली फसलें, कुशल जल उपयोग, बाढ़-रोधी बुनियादी ढाँचा, पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ और बेहतर आपदा प्रबंधन शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन को कम करना अर्थात उसके मूल कारणों पर कार्रवाई करना। जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता घटाना, स्वच्छ ऊर्जा का विस्तार करना, ऊर्जा दक्षता बढ़ाना, वनों की रक्षा करना और मीथेन उत्सर्जन कम करना भविष्य की तापवृद्धि को सीमित करने में मदद कर सकता है। व्यक्ति भी जिम्मेदार ऊर्जा उपयोग, जल संरक्षण, पेड़ों की रक्षा और कचरे में कमी के माध्यम से योगदान दे सकते हैं। हालाँकि, व्यक्तिगत प्रयासों को प्रभावी सरकारी नीतियों, वैज्ञानिक अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का समर्थन मिलना आवश्यक है। विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। जलवायु शिक्षा युवाओं को प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि के बीच अंतर समझने, वैज्ञानिक जानकारी का मूल्यांकन करने और जिम्मेदार निर्णय लेने में सहायता कर सकती है।

अनिश्चित भविष्य के लिए तैयारी

वर्ष 2027 की जलवायु प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों के संयुक्त प्रभाव से निर्धारित होगी। अल नीनो एक महत्वपूर्ण कारक बन सकता है, लेकिन उसके आने का समय और उसकी तीव्रता अभी निश्चित नहीं है। दूसरी ओर, यह स्पष्ट है कि महासागर अतिरिक्त गर्मी को अवशोषित कर रहे हैं और मानवजनित वैश्विक तापवृद्धि अनेक चरम मौसमी घटनाओं के जोखिम को बढ़ा रही है। संभावित अल नीनो हमें याद दिलाता है कि पृथ्वी की जलवायु प्रणाली परस्पर जुड़ी हुई है। प्रशांत महासागर के तापमान में बदलाव दूर-दराज के महाद्वीपों के मौसम को प्रभावित कर सकता है और कृषि, जल संसाधनों, पारिस्थितिकी तंत्र तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकता है। सबसे जिम्मेदार प्रतिक्रिया न तो घबराहट है और न ही लापरवाही। आवश्यकता है वैज्ञानिक सतर्कता, विश्वसनीय पूर्वानुमान, प्रभावी योजना और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के निरंतर प्रयासों की। पृथ्वी की जलवायु का भविष्य केवल अल नीनो से निर्धारित नहीं होगा। यह उन निर्णयों पर भी निर्भर करेगा, जो मानवता आज लेती है। वैज्ञानिक ज्ञान और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को साथ लेकर हम 2027 की चुनौतियों के लिए बेहतर तैयारी कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक सुरक्षित, संतुलित तथा टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

Htc

HI-TECH CONSTRUCTION
BUILDING EXCELLENCE



OFF: 41, NORTH VIJAY NAGAR COLONY AGRA-282004

Call 7017847960,7017847961 | e-mail -: htc293400@gmail.com

मोदी और स्विस राष्ट्रपति के साथ

पूरन डावर का स्मरणीय क्षण

आगरा के जूता उद्योग को मिला वैश्विक प्रतिनिधित्व



ताजनगरी आगरा के औद्योगिक जगत के लिए यह अत्यंत गौरवपूर्ण अवसर रहा, जब देश की राजधानी नई दिल्ली के प्रतिष्ठित हैदराबाद हाउस में आयोजित भारत-स्विट्जरलैंड के उच्चस्तरीय राजनयिक कार्यक्रम में आगरा के प्रमुख उद्योगपति, डावर ग्रुप के चेयरमैन तथा भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत विकास परिषद फॉर फुटवियर एंड लेदर इंडस्ट्री (DCFLI) के चेयरमैन पूरन डावर की उपस्थिति रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, स्विस परिसंघ के राष्ट्रपति गी पार्मेलिन (Guy Parmelin) एवं कैरोलिन पार्मेलिन के साथ पूरन डावर का स्मरणीय क्षण आगरा के उद्योग जगत के लिए विशेष महत्व रखता है।

स्विट्जरलैंड के राष्ट्रपति गी पार्मेलिन की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता हुई। इस महत्वपूर्ण यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, नवाचार और आर्थिक सहयोग को नई गति प्रदान करना रहा। दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व ने आपसी संबंधों को और मजबूत बनाने तथा औद्योगिक एवं आर्थिक साझेदारी के नए अवसर विकसित करने पर विशेष जोर दिया। इस महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय अवसर पर आगरा के उद्योग जगत का प्रतिनिधित्व करने वाले पूरन डावर की उपस्थिति इसलिए भी विशेष महत्व रखती है, क्योंकि उन्होंने अपने लंबे औद्योगिक एवं सामाजिक जीवन में आगरा के फुटवियर उद्योग को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। फुटवियर निर्माण, निर्यात संवर्धन, औद्योगिक संगठनों के सशक्तीकरण और नीतिगत विषयों पर सक्रिय भूमिका के माध्यम से उन्होंने आगरा की औद्योगिक क्षमताओं को व्यापक मंच प्रदान किया है।

भारत सरकार में महत्वपूर्ण दायित्व, उद्योग की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान

वर्तमान में पूरन डावर भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत डेवलपमेंट काउंसिल फॉर फुटवियर एंड लेदर इंडस्ट्री के चेयरमैन के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त वह भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के बोर्ड ऑफ ट्रेड के गैर-सरकारी सदस्य भी हैं। इन दायित्वों के माध्यम से वह देश के फुटवियर एवं लेदर उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता, निर्यात संवर्धन, औद्योगिक विकास और नीतिगत सुधारों से जुड़े विषयों पर सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। वह आगरा डेवलपमेंट फाउंडेशन सहित अनेक औद्योगिक और सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। उद्योग जगत के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों, शिक्षा, जनकल्याण और आगरा के समग्र विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें एक उद्योगपति के साथ-साथ सामाजिक चिंतक और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता के रूप में विशिष्ट पहचान देती है।

आगरा के फुटवियर उद्योग को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

पूरन डावर का नाम आगरा के उन प्रमुख उद्योगपतियों में शामिल है, जिन्होंने उद्योग को केवल व्यवसाय तक सीमित न रखते हुए उसे रोजगार सृजन, निर्यात विस्तार और क्षेत्रीय आर्थिक विकास का माध्यम बनाया। डावर ग्रुप के चेयरमैन के रूप में उन्होंने फुटवियर निर्माण एवं निर्यात के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। वर्ष 1994 में आगरा फुटवियर मैन्युफैक्चरर्स एंड एक्सपोर्टर्स चैम्बर की स्थापना में उनकी अग्रणी भूमिका रही। इस संगठन के माध्यम से आगरा के फुटवियर निर्माताओं और निर्यातकों को एक साझा मंच मिला, जिसने समय के साथ उद्योग की समस्याओं,

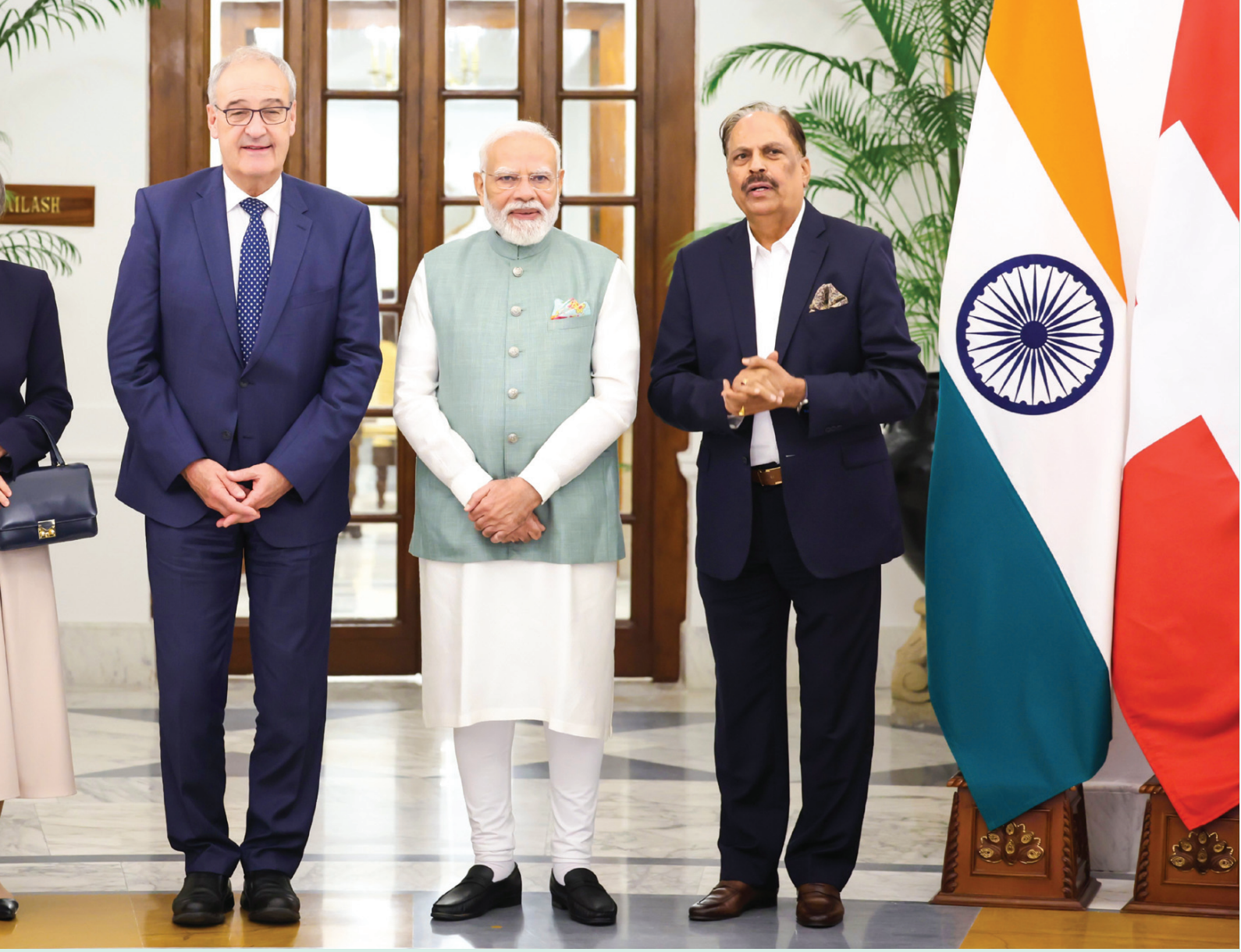

संभावनाओं और विकास से जुड़े मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से उठाया। आज आगरा के फुटवियर उद्योग की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाने में इन संस्थागत प्रयासों का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है।

भारत-स्विट्ज़रलैंड की बढ़ती साझेदारी से उद्योग जगत के लिए नई संभावनाएं

भारत और स्विट्ज़रलैंड के बीच बढ़ते आर्थिक संबंध भारतीय विनिर्माण एवं निर्यात क्षेत्र के लिए भी महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। भारत और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (EFTA) के बीच व्यापार एवं आर्थिक साझेदारी समझौते (TEPA) के अंतर्गत अगले 15 वर्षों में 100 अरब अमेरिकी डॉलर के निवेश और दस लाख प्रत्यक्ष रोजगार सृजन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस साझेदारी में उन्नत तकनीक, आधुनिक विनिर्माण, निवेश और बाजार तक पहुंच जैसे विषय विशेष महत्व रखते हैं। ऐसे समय में जब भारतीय फुटवियर एवं लेदर उद्योग वैश्विक बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को और मजबूत बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, इस प्रकार के उच्चस्तरीय अंतरराष्ट्रीय आयोजन देश के औद्योगिक भविष्य के लिए सकारात्मक संकेत हैं। विशेष रूप से आगरा जैसे प्रमुख फुटवियर उत्पादन एवं निर्यात केंद्र के लिए आधुनिक तकनीक, गुणवत्ता, डिजाइन, नवाचार और अंतरराष्ट्रीय कारोबारी सहयोग के नए अवसर अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

संघर्ष से सफलता तक का प्रेरणादायी सफर

- पूरन डावर का जीवन संघर्ष, परिश्रम और दूरदर्शिता की प्रेरक मिसाल है। देश के विभाजन के बाद उनके परिवार ने कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए आगरा में नए सिरे से जीवन की शुरुआत की। सीमित संसाधनों और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच उन्होंने शिक्षा प्राप्त की तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कदम रखा। छोटे स्तर से प्रारंभ हुआ उनका औद्योगिक सफर आगे चलकर एक प्रतिष्ठित फुटवियर निर्माण एवं निर्यात समूह के रूप में विकसित हुआ।
- व्यावसायिक सफलता के साथ उन्होंने उद्योग एवं समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निरंतर प्राथमिकता दी। यही कारण है कि आज वह आगरा के औद्योगिक जगत में एक अनुभवी उद्यमी, संगठनकर्ता और उद्योग हितों के प्रभावशाली प्रतिनिधि के रूप में पहचाने जाते हैं।
- आगरा के लिए यह गर्व का विषय है कि यहां के एक प्रतिष्ठित उद्योगपति की उपस्थिति देश के शीर्ष नेतृत्व और अंतरराष्ट्रीय राजनयिक आयोजन के साथ जुड़ी। यह अवसर आगरा के उद्यमियों, निर्यातकों और नई पीढ़ी के उद्योग जगत से जुड़े युवाओं के लिए भी प्रेरणादायी है।

आन्दोलन वही, जो सार्थक मुद्दा, दिशा एवं भरोसे से जुड़ा हो



लोकतंत्र में असहमति उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। सरकार से सवाल पूछना, नीतियों का विरोध करना और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना नागरिक स्वतंत्रता का अनिवार्य हिस्सा है। लेकिन लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा केवल इस बात से नहीं होती कि विरोध करने की कितनी स्वतंत्रता है, बल्कि इससे भी होती है कि उस स्वतंत्रता का उपयोग किस उद्देश्य, किस भाषा और किस पद्धति से किया जा रहा है। किसी आंदोलन का मुद्दा कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, यदि उसका नेतृत्व दिशाहीन हो जाए, भाषा उत्तेजक बन जाए और पद्धति हिंसा अथवा अराजकता की ओर बढ़ने लगे, तो उसका नैतिक आधार कमजोर पड़ने लगता है। इसलिए आज देश के सामने प्रश्न केवल आंदोलनों का नहीं, बल्कि उनके चरित्र, विश्वसनीयता और राष्ट्रीय उत्तरदायित्व का भी है। दिल्ली में हाल के विरोध प्रदर्शनों और उन पर प्रशासन की सख्ती के बाद सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप ने एक बार फिर लोकतंत्र की सीमाओं और संभावनाओं पर बहस छेड़ दी है।

ललित गर्ग

एक ओर शांतिपूर्ण विरोध नागरिकों का अधिकार है, तो दूसरी ओर सार्वजनिक व्यवस्था, नागरिक सुरक्षा और कानून का पालन सुनिश्चित करना शासन का दायित्व है। इन दोनों के बीच संतुलन ही संवैधानिक लोकतंत्र की पहचान है। न तो सरकार को कानून-व्यवस्था के नाम पर नागरिक स्वतंत्रताओं के अनावश्यक दमन की छूट दी जा सकती है और न ही आंदोलनकारियों को लोकतांत्रिक अधिकारों की आड़ में सार्वजनिक जीवन को बाधित करने का असीमित अधिकार प्राप्त है। संविधान अधिकार देता है, लेकिन उन अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व भी जोड़ता है।

आज सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि जनांदोलनों की दिशा कौन तय कर रहा है? क्या आंदोलन वास्तव में जनसमस्याओं के समाधान के लिए खड़े हो रहे हैं, अथवा जनता के असंतोष को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का साधन बनाया जा रहा है? यह प्रश्न किसी एक दल या संगठन तक सीमित नहीं है। सत्ता पक्ष हो या विपक्ष, सामाजिक संगठन हों या जनसमूह, सभी को अपने आचरण की कसौटी संविधान, नैतिकता और जनहित को बनाना चाहिए। लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वह सरकार की नीतियों पर सवाल उठाता है, कमियों को सामने लाता है और जनहित के मुद्दों को राजनीतिक विमर्श में स्थान देता है। लेकिन विपक्ष का दायित्व केवल विरोध करना नहीं, बल्कि वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करना भी है। यदि हर असहमति को सत्ता के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष में बदलने का प्रयास किया जाए, हर प्रशासनिक निर्णय को राजनीतिक षड्यंत्र बताया जाए और प्रत्येक जनसमस्या को व्यापक अव्यवस्था का प्रतीक बना दिया जाए, तो वास्तविक मुद्दे शोर में खोने लगते हैं। इसी तरह सरकार भी यदि आलोचना को शत्रुता समझने लगे, तो लोकतांत्रिक संवाद की संभावनाएं संकुचित हो जाती हैं।

आंदोलन की साख उसके मूल उद्देश्य एवं भरोसे से बनती है। जिस मुद्दे को लेकर लोग एकत्र होते हैं, उसकी स्पष्टता, तथ्यात्मक प्रामाणिकता और समाधान की दिशा आंदोलन की विश्वसनीयता निर्धारित करती है। जब मूल प्रश्न पीछे छूट जाता है और राजनीतिक दलों की प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएं अथवा वैचारिक टकराव केंद्र में आ जाते हैं, तब आंदोलन की ऊर्जा बिखरने लगती है। जनसमर्थन जुटाना और जनविश्वास अर्जित करना दो अलग-अलग बातें हैं। भीड़ किसी क्षणिक आक्रोश का परिणाम हो सकती है, लेकिन जनविश्वास निरंतर नैतिक आचरण और रचनात्मक कार्यों से अर्जित होता है। भारत का लोकतांत्रिक इतिहास इस संदर्भ में अनेक महत्त्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। वर्ष 1974 का छात्र आंदोलन और लोकनायक जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व बताता है कि जनाक्रोश को रचनात्मक परिवर्तन की शक्ति में कैसे बदला जा सकता है। बिहार के छात्रों ने भ्रष्टाचार, महंगाई और शासन संबंधी समस्याओं के विरुद्ध आवाज उठाई थी। जयप्रकाश नारायण ने इस असंतोष को व्यापक सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा देने का प्रयास किया।

आज सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि जनांदोलनों की दिशा कौन तय कर रहा है? क्या आंदोलन वास्तव में जनसमस्याओं के समाधान के लिए खड़े हो रहे हैं, अथवा जनता के असंतोष को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का साधन बनाया जा रहा है? यह प्रश्न किसी एक दल या संगठन तक सीमित नहीं है।

आज के आंदोलनों को इस ऐतिहासिक अनुभव से सीखना चाहिए। किसी भी आंदोलन की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि कितनी सड़कें बंद हुईं, कितने लोग एकत्र हुए या कितने दिनों तक विरोध चला। उसकी सफलता का वास्तविक पैमाना यह होना चाहिए कि उसने किस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया, जनजीवन में क्या सकारात्मक परिवर्तन लाया और समाज में संवैधानिक चेतना को कितना मजबूत किया। वर्तमान समय में इंटरनेट मीडिया ने जनमत निर्माण की प्रक्रिया को पूरी तरह बदल दिया है। अब कोई घटना कुछ ही मिनटों में व्यापक बहस का विषय बन सकती है। यह लोकतंत्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर है, क्योंकि इससे आम नागरिकों को अपनी बात रखने और प्रशासन से जवाब मांगने का मंच मिला है। लेकिन यही माध्यम भ्रामक सूचनाओं, अधूरे तथ्यों, भावनात्मक अभियानों और अपुष्ट आरोपों को भी तेजी से प्रसारित कर सकता है।

हैशटैग, वायरल वीडियो और ऑनलाइन समर्थन अपने आप में किसी आंदोलन की नैतिक प्रामाणिकता का प्रमाण नहीं हैं। किसी आरोप की गंभीरता का निर्धारण उसके प्रमाणों से होना चाहिए, उसकी लोकप्रियता से नहीं। यदि आंदोलनकारी तथ्यों की पुष्टि किए बिना आरोप लगाते हैं, तो वे अपने ही उद्देश्य को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसी प्रकार प्रशासन का दायित्व है कि वह आलोचनात्मक आवाजों को केवल इसलिए संदिग्ध न माने कि वे सरकार के विरुद्ध हैं। पारदर्शिता, तथ्यपरक संवाद और निष्पक्ष जांच ही अविश्वास को दूर करने के प्रभावी उपाय हैं। आज युवाओं के पास डिजिटल तकनीक, नवाचार, उद्यमिता और सामाजिक सहभागिता के अनेक अवसर हैं। उनकी ऊर्जा केवल विरोध तक सीमित न रहे, बल्कि समाधान निर्माण में भी लगे। भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन हो तो पारदर्शिता के व्यावहारिक उपाय सामने आएं, चुनावी सुधारों की मांग हो तो प्रमाण आधारित सुझाव प्रस्तुत किए जाएं, प्रशासनिक अन्याय का प्रश्न हो तो कानूनी और संस्थागत रास्तों को मजबूत किया जाए। विरोध की सार्थकता तब बढ़ती है, जब वह किसी बेहतर व्यवस्था की कल्पना और निर्माण का आधार बनता है। जनांदोलनों के संदर्भ में विदेशी शक्तियों की भूमिका पर भी चर्चा होती रही है। यह स्वाभाविक है कि भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में राष्ट्रीय हितों, बाहरी प्रभावों और सूचना के प्रवाह को लेकर सतर्कता बरती जाए। लेकिन इस विषय पर भी भावनाओं अथवा आशंकाओं के बजाय प्रमाणों के आधार पर बात होनी चाहिए। किसी आंदोलन में सरकार की आलोचना होने मात्र से उसे विदेशी षड्यंत्र का हिस्सा नहीं कहा जा सकता। उसी प्रकार यदि किसी गतिविधि में विदेशी वित्तपोषण, भ्रामक प्रचार अथवा अनुचित हस्तक्षेप के विश्वसनीय प्रमाण मिलते हैं, तो उनकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा केवल कठोर प्रशासनिक कार्रवाई से नहीं होती। वह नागरिकों के विश्वास, संस्थाओं की निष्पक्षता, न्याय की उपलब्धता और शासन की पारदर्शिता से मजबूत होती है। देश की आलोचना और देश के प्रति शत्रुता में अंतर समझना आवश्यक है। सरकार की किसी नीति का विरोध करना राष्ट्रविरोध नहीं है, जैसे राष्ट्रीय हित की चिंता करना किसी नागरिक की लोकतांत्रिक स्वतंत्रता को सीमित करने का औचित्य नहीं बन सकता।

अंतत: लोकतंत्र की शक्ति न तो केवल सत्ता में निहित है और न ही केवल सड़क पर उतरने वाली भीड़ में। उसकी वास्तविक शक्ति नागरिक विवेक, संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता और समाज की संवाद करने की क्षमता में है। किसी भी आंदोलन को स्वयं से तीन प्रश्न अवश्य पूछने चाहिए-क्या हमारा मुद्दा तथ्यपरक और जनहितकारी है? क्या हमारी पद्धति लोकतांत्रिक और अहिंसक है? क्या हमारे प्रयास से समस्या का समाधान निकलेगा या समाज में विभाजन और अविश्वास बढ़ेगा? केवल मुद्दा सही होना पर्याप्त नहीं है, उसके लिए सही नेतृत्व, सही भाषा, सही पद्धति और सही लक्ष्य भी आवश्यक हैं। आंदोलन का उद्देश्य केवल किसी व्यवस्था को चुनौती देना नहीं, बल्कि उससे बेहतर व्यवस्था के निर्माण में योगदान करना होना चाहिए। जो आंदोलन समाज को विवेक, अनुशासन, न्याय और रचनात्मकता की दिशा देता है, वही इतिहास में स्थायी स्थान प्राप्त करता है। भारत का भविष्य ऐसे ही लोकतांत्रिक चिंतन में सुरक्षित है, जहां असहमति को सम्मान मिले, सत्ता जवाबदेह रहे, विपक्ष रचनात्मक बने और राष्ट्रहित का अर्थ नागरिक स्वतंत्रता तथा संवैधानिक मर्यादा के समन्वय में खोजा जाए। ■

निर्णायक होगा, वोट चोरी पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला

संजय सक्सेना

देश की राजनीति में इन दिनों एक ही शब्द गूंज रहा है, वोट चोर, गद्दी छोड़। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के बहाने विपक्ष ने मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयोग को कठघरे में खड़ा करने का अभियान छेड़ रखा है, जिसमें मोदी सरकार पर आरोप लगाया जाता है कि वोट चोरी मोदी सरकार के संरक्षण में हो रही है। वोट चोरी के नारे सड़क से संसद तक गूंज रहे हैं, प्रेस कॉन्फ्रेंस हैं, यात्राएं हैं और सोशल मीडिया पर आरोपों की झड़ी है। इस हंगामे के सबसे आगे राहुल गांधी चल रहे हैं। वहीं विपक्ष की नजर में एक राहुल की लगातार हार की हताशा है, पर इस शोर के बीच एक सीधा सवाल बार-बार लौटता है, सबूत कहाँ हैं? लोकतंत्र में आरोप लगाना विपक्ष का अधिकार है, लेकिन आरोप की गंभीरता के अनुपात में प्रमाण देना उसकी जिम्मेदारी भी है। वोट चोरी कोई मामूली आरोप नहीं है। यह उस पूरी चुनावी प्रक्रिया की वैधता पर प्रश्नचिह्न है, जिसके जरिए करोड़ों लोग अपनी सरकार चुनते हैं। ऐसे आरोप के लिए ठोस आंकड़े, विधानसभा या बूथवार सूचियां, प्रभावित मतदाताओं के नाम और शपथपत्र चाहिए। आलोचकों का कहना है कि इन मोर्चों पर विपक्ष की झोली लगभग खाली है।सत्ता पक्ष के समर्थकों का तर्क है कि घटनाक्रम खुद इसकी गवाही देता है। बताया गया कि करीब एक साल से आरोप लगा रहे विपक्षी नेता जब राष्ट्रपति को ज्ञापन देने पहुंचे, तो ज्ञापन के साथ कोई प्रमाण नहीं था। कहा जा रहा है कि राष्ट्रपति ने प्रमाण लाने को कहा और विपक्ष ने जल्द सबूत सौंपने का वादा किया, पर अब तक कुछ सामने नहीं आया। राहुल गांधी और उनके सहयोगियों ने प्रधान न्यायाधीश से मिलने का समय भी मांगा, पर वह मुलाकात नहीं हुई। इस तर्क के अनुसार, जो नेता हर मंच से सबूत होने का दावा करते हैं, वे संवैधानिक संस्थाओं के सामने उन्हें रखने से कतराते हैं। सबसे विरोधाभासी तस्वीर यह है कि जिस मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ सड़क पर नारे लगाए जा रहे हैं, उनसे आमने-सामने बैठकर बात करने में विपक्ष की दिलचस्पी नहीं दिखती। आयोग के पास दावे-आपत्ति की औपचारिक व्यवस्था है। मतदाता सूची के प्रारूप प्रकाशित होते हैं, आपत्तियां दर्ज की जाती हैं और सुनवाई होती है। कानून की भाषा में बात करने का रास्ता खुला है। आलोचक पूछते हैं कि जब चुनाव आयोग के दरवाजे और अदालतें खुली हैं, तो विपक्ष शिकायतों को दस्तावेज की शक्ल देने के बजाय माइक पर क्यों उतारता है।तमाम किंतु-परंतु के बीच एसआईआर की मूल अवधारणा पर भी गौर करना चाहिए। मतदाता सूचियों का पुनरीक्षण कोई नई बात नहीं है। देश में

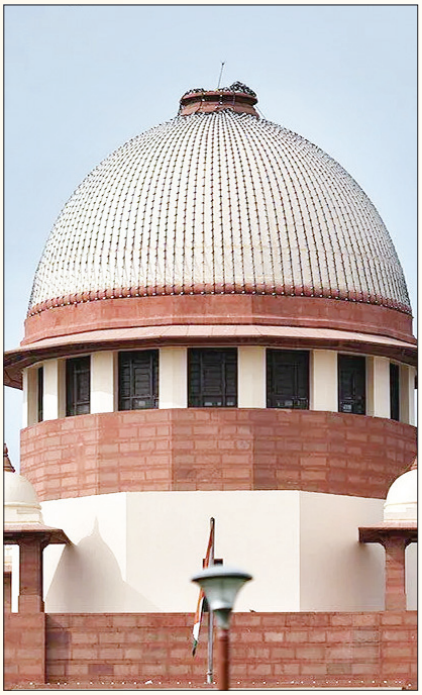

पहले भी ऐसे पुनरीक्षण होते रहे हैं। शहरों की ओर पलायन, शादी के बाद स्थानांतरण, मृत्यु और एक से अधिक जगह नाम दर्ज होने जैसे कारणों से सूचियों में गड़बड़ियां आम हैं। सूची की सफाई का मकसद यही है कि हर वैध मतदाता का नाम रहे और हर अवैध प्रविष्टि हटे। इस नजरिए से देखें तो नाम कटने की हर खबर चोरी नहीं होती। उसका एक बड़ा हिस्सा सूची के शुद्धिकरण का नतीजा हो सकता है।यहीं वह लाख टके का सवाल आता है, जो आलोचक उठाते हैं। विपक्ष यह मानकर क्यों चल रहा है कि जिनके नाम कटे हैं, वे उसी के वोटर हैं? मतदाता सूची में मृत व्यक्ति, स्थान बदल चुके लोग और दोहरी प्रविष्टियां हर दल के समर्थकों में होती हैं। मतदाता अपनी पसंद बताकर वोट नहीं डालता, इसलिए किसी सूची से हटे नाम का राजनीतिक रंग तय करना खुद एक अप्रमाणित धारणा है। अगर विपक्ष के पास ऐसा कोई विश्लेषण है, जो दिखाए कि कटे नाम किसी खास समुदाय या पार्टी के समर्थकों के हैं, तो उसे सार्वजनिक करना चाहिए। अभी तक जो रखा गया है, वह निष्कर्ष ज्यादा है और प्रमाण कम।इस पर आलोचकों के मुताबिक, इसका जवाब राजनीति के गणित में छिपा है। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, ममता बनर्जी की तृणमूल और लालू यादव का राजद, इन सबकी चुनावी सियासत में मुस्लिम मतदाता एक मजबूत स्तंभ हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में कई सीटों के नतीजे इस वोट के रुझान पर निर्भर करते हैं। इस पक्ष का तर्क है कि एसआईआर पर हंगामे का असली मकसद इसी वोट बैंक को यह संदेश देना है कि हम तुम्हारे रहनुमा हैं और तुम्हारे नाम काटे जा रहे हैं। माहौल ऐसा बनाया जा रहा है, वे कहते हैं, मानो सूची से सिर्फ मुस्लिम नाम हटे हों और विपक्ष ही अकेला उनका संरक्षक हो। यानी यह लड़ाई मतदाता सूची की पारदर्शिता से ज्यादा मुस्लिम वोट बैंक की सियासत की है।चुनावी मौसम में उत्तर प्रदेश के संदर्भ में यह रणनीति और साफ दिखती है। सपा और कांग्रेस दोनों इसी वोट की साझा दावेदारी के लिए संघर्ष करती रहती हैं। जो भी इस समुदाय का भरोसा जीत ले, उसे सीटों का बड़ा लाभ मिल सकता है। ऐसे में आपका वोट खतरे में है का नारा एक भावनात्मक एकजुटता पैदा करने का औजार बन जाता है। आलोचकों का कहना है कि यही बयानबाजी आगे चलकर विधानसभा चुनावों में ध्रुवीकृत मतदान की जमीन तैयार करती है। बिहार और बंगाल में भी यही कोशिश दिखती है।इस रणनीति की एक कीमत भी है। संवैधानिक संस्थाओं पर बार-बार बिना प्रमाण के हमला करने से उनकी साख को चोट पहुंचती है। अगर कल सचमुच कोई गड़बड़ी सामने आए, तब तक भेड़िया आया वाली कहानी का असर कमजोर हो चुका होगा। जिन मतदाताओं में डर बैठाया जा रहा है, उन्हें भी अंतत: यही चाहिए कि उनका नाम सूची में रहे। इसके लिए जरूरी है कि राजनीतिक दल आगे बढ़कर बूथ स्तर पर फॉर्म भरवाने और आपत्तियां दर्ज कराने में मदद करें, न कि सिर्फ नारेबाजी करें।सवाल यह भी है कि अगर विपक्ष के पास वाकई प्रमाण हैं, तो वह उन्हें अदालत, आयोग या राष्ट्रपति के सामने क्यों नहीं रखता। देश की जनता अब नारों से ज्यादा तथ्य सुनना चाहती है। जिस दिन विपक्ष दस्तावेजों के साथ सामने आएगा, उस दिन बहस का स्तर बदलेगा। तब तक यह धारणा बनी रहेगी कि 'वोट चोरी' का मुद्दा चुनावी सुधार से ज्यादा चुनावी समीकरण साधने का हथियार है। विपक्ष का कहना है कि सूचियों के आंकड़े और नाम कटने के पैटर्न चुनाव आयोग के पास हैं और वे पूरी मशीन-पठनीय सूचियां व पारदर्शिता मांग रहे हैं। उनका तर्क है कि इतने बड़े पैमाने पर नाम हटाने की प्रक्रिया, दस्तावेज मांगने की शर्तें और कम समय सीमा से गरीब, प्रवासी और अल्पसंख्यक मतदाता ज्यादा प्रभावित हो सकते हैं, और इस पर सवाल उठाना उनका लोकतांत्रिक हक है। कई मामले अदालतों में भी पहुंचे हैं। चुनाव आयोग इन आशंकाओं को खारिज करता है और कहता है कि प्रक्रिया नियमों के तहत और निष्पक्ष है। अंतिम तस्वीर अदालती फैसलों और ठोस आंकड़ों से ही साफ होगी। ■

भरोसे पर भी खरे उतरे सेलिब्रिटिज

विवादित विज्ञापनों का दौर लंबे समय से चला आता रहा है। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि अपने उत्पाद को बेचने के लिए सेलिब्रिटिज, महिलाओं और बच्चों को केन्द्र में रखा जाता है। दरअसल लक्ष्यित वर्ग को सम्मोहित करना इन विज्ञापनों का खास उद्देश्य हो जाता है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा



विज्ञापनों के प्रति सेलिब्रिटिज की जवाबदेही को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की हालिया टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है कि अपने उत्पादों को बेचने के लिए सेलिब्रिटिज का उपयोग सबसे अधिक किया जाता रहा है। विज्ञापनदाता जानते हैं कि लक्षित उपभोक्ता तक पहुंचने में सेलिब्रिटिज की भागीदारी महत्वपूर्ण हो जाती हैं। लोग सेलिब्रिटिज पर विष्वास करते हैं और विज्ञापनदाता कंपनियां इसी का लाभ अपने उत्पादों को बाजार दिलाने में करते आये हैं। इसीलिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की टिप्पणी कि सच्चा सितारा रोशनी फैलाता है, अंधेरापन नहीं, आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण होने के साथ ही सितारों और सेलिब्रिटिज को समाज के प्रति जवाबदेही समझने का संकेत भी है। दर असल हो रहा है कि पैसे की चकाचौंध में सेलिब्रिटिज समाज के प्रति जवाबदेही से मुहं मोड़ते दिखाई देते हैं। जब आम जन का सेलेब्रिटिज का भरोसा है तो सेलिब्रिटिज की भी इस भरोसे को बनाए रखने की नैतिक जिम्मेदारी हो जाती है। दरअसल सेलिब्रिटिज को उत्पाद के साथ देखकर आमआदमी आंख मींच कर भरोसे के सहारे खरीदारी करता है। वह उस उत्पाद और सेलिब्रिटिज द्वारा किये जा रहे वादे को सत्य समझता है। ऐसे में सेलिब्रिटी का समाज या लक्षित वर्ग के प्रति और अधिक जिम्मेदारी बन जाती है। विकेता या निर्माता अपने उत्पाद को बेचने पर ध्यान देता है। इसलिए वह अपने उत्पाद के गुणगान अधिक ही करने लगता है तो सेलिब्रिटी के विज्ञापन के सहारे अतिशयोक्तिपूर्ण दावें करने लग जाते हैं। यहां तक कि कई विज्ञापन के दावें तो सत्य के आसपास भी नहीं होते जैसा कि अक्षय कुमार का डॉबर च्यवनप्राश को लेकर विज्ञापन। यह तो एक उदाहरण मात्र है। आज तो सेरोगेट विज्ञापनों का दौर भी चल निकला है। शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्राप का इलायची का विज्ञापन सबके सामने है जिसके माध्यम से छद्म रुप से प्रतिबंधित पान मसाला का विज्ञापन किया जा रहा था। इसी तरह के अनेक विज्ञापन हमारे सामने हैं। हांलाकि इसमें कोई दो राय नहीं कि निर्माता अपने उत्पाद का विज्ञापन करने के लिए सेलिब्रिटिज को बहुत अधिक पेमेंट किया जाता है और इस पेमेंट के चक्कर में सेलिब्रिटिज समाज के प्रति अपने दायित्व और कानूनी प्रावधानों को भी दरकिनार कर देते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दुखती रग पर हाथ रखते हुए 72 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में पिछले माह सितंबर में आयोजित समारोह में आमआदमी का दर्द सामने रखा।

विवादित विज्ञापनों का दौर लंबे समय से चला आता रहा है। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि अपने उत्पाद को बेचने के लिए सेलिब्रिटिज, महिलाओं और बच्चों को केन्द्र में रखा जाता है। दरअसल लक्ष्यित वर्ग को सम्मोहित करना इन विज्ञापनों का खास उद्देश्य हो जाता है। विज्ञापन करते समय कई बार तो सांप्रदायिकता तक सामने आ जाती है। 2020 का तनिष्क का विज्ञापन इसका उदाहरण है तो 2026 का कृति सेनन का गीवा ज्वेलरी का विज्ञापन सामने हैं। विमल इलायची का फिल्म कलाकर त्रय का विज्ञापन सर्वविदित है जिसमें इलायची के नाम पर छद्म रुप से पान मसाला तंबाकू का ही विज्ञापन था। इस तरह के सेरेगेट विज्ञापन आम होते जा रहे हैं। लेविस 501 जिंस का अक्षय कुमार का विज्ञापन, 2021 का आलिया भट्ट का कन्यादान के बहाने कन्यामान विज्ञापन यह फिर 1995 में अजगर से जिस्म को लपेटे मिलिंद सोयन और मधु सप्रे का टफ जूते का विज्ञापन का विवाद आज तक चर्चा में है। 2026 का विक्की कौशल-रश्मिका संधाना का माचो अंडरवियर का विज्ञापन भी विवादों में रहा है। विज्ञापनों को लेकर सरकार भी गंभीर रही है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 द्वारा जवाबदेही तय की गई है। 10 लाख से 50 लाख तक के जुर्माने के प्रावधान के साथ ही ऐसे विज्ञापनकर्ताओं पर एक साल से तीन साल तक प्रतिबंध के प्रावधान भी है। भ्रामक विज्ञापनों को लेकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय भी गंभीर रहा है और समय समय पर टिप्पणियां की गई है। इस दायरें में चार लाख से अधिक कमाई वाले व 5 लाख फालोवर्स वाले सेलिब्रिटिज को रखा गया है। हालात की गंभीरता को इसी से समझना होगा कि फिल्म कलाकारों के समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को इस तरह का संदेश देना पड़ा। वैसे भी जिस पर भरोसा होता है या किया जाता है तो भरोसे वाले व्यक्ति पर भी भरोसे को बनाये रखने का दायित्व हो जाता है। विज्ञापननिर्माताओं को भी समाज के प्रति दायित्व को समझना होगा तभी सभी अपने भरोसे पर खरे उतर सकते हैं। ■

वो कौन सा 'श्राप' है, जिससे कांपती है अमेरिकी सरकार

3 नवंबर को क्या ट्रंप का 'झोला' उठने वाला है?



अमेरिका में मध्यावधि चुनाव राष्ट्रपति के चार साल के कार्यकाल के बीच में आयोजित होते हैं। ये चुनाव राष्ट्रपति की कुर्सी को प्रभावित किए बिना संसद के दोनों सदनों और राज्यों के प्रमुख पदों का फैसला करते हैं। यह चुनाव मौजूदा प्रशासन के कामकाज पर जनमत संग्रह बनकर देश में विधायी नियंत्रण और सत्ता का संतुलन तय करते हैं।

अभिनय आकाश

बचपन में कहते थे कि जमीन को खोदो तो दूसरी तरफ अमेरिका में निकलोगे। दुनिया तो गोल है लेकिन मैप को जूम करके देखें तो अमेरिका एकदम पश्चिम में नजर आता है। आज बात उसी अमेरिका के लोकतांत्रिक पहलू और वहां के चुनाव की करेंगे। अमेरिका में होने वाला मध्यावधि चुनाव भारत के मध्यावधि चुनाव से बिल्कुल अलग होता है और भारत में कोई सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाती तो मध्य अवधि चुनाव होता है लेकिन अमेरिका में मध्यावधि चुनाव की वजह ऐसी नहीं है। सबसे बड़ी बात ये है की चुनाव में मौजूद राष्ट्रपति ट्रंप की पार्टी हार भी जाती है और संसद में अल्पमत में भी जाती है तो भी जो राष्ट्रपति बने रहेंगे और अमेरिका के इस मध्यावधि चुनाव से जुड़ी ऐसी कई दिलचस्प जानकारी है जो आज आपको बताएंगे और इस चुनाव का विश्लेषण भी करेंगे क्योंकि इस चुनाव का असर ना केवल अमेरिका पर बल्कि पुरी दुनिया पर भी हो सकता है। चूंकि इस बार चा चुनाव राष्ट्रपति के कार्यकाल के बीच में आया है। इसी वजह से इसे मिड टर्म इलेक्शन के नाम से जाना जाता है। आज हम अमेरिका के मिड टर्म इलेक्शन की पूरी कहानी को समझेंगे। संसद के चुनाव से राष्ट्रपति की कुर्सी पर क्या असर पड़ता है?

भारतीय संसद से कितना अलग?

हिंदुस्तान में कानून बनाने वाले सबसे बड़े संस्था संसद है जिसे विधायक का भी कहते हैं। संसद के हिस्से हैं। पहला लोकसभा जिसे निचला सदन कहते हैं और दूसरा राज्यसभा जिसे ऊपरी सदन कहते हैं। लोकसभा के सदस्य का कार्यकाल 5 साल का होता है। वही राज्यसभा कभी भंग नहीं होती और इसके सदस्य का कार्यकाल छह वर्ष का होता है। इसी तरह अमेरिका में संसद को अमेरिकी कांग्रेस कहा जाता है और अमेरिकी कांग्रेस भी दो हसन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स और सीनेट में बंटा होता है। हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में 435 मेंबर होते हैं। हर मेंबर का कार्यकाल सिर्फ दो साल का होता है। सीटों का निर्धारण जनसंख्या के आधार पर होता है। दूसरे सदन को सीनेट बोलते हैं। इसके सदस्यों की संख्या 100 है। कार्यकाल 6 बरस का होता है। हर दो बरस में एक तिहाई सदस्यों का कार्यकाल पूरा होता है और फिर चुनाव होता है। अमेरिका में कुल 50 राज्य हर राज्य से दो सेनेटर चुने जाते हैं। सीटों के बंटवारे में जनसंख्या की भूमिका यहां नहीं होती। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के ठीक मध्य में होने वाले ये चुनाव प्रशासन के एजेंडे पर एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय जनमत संग्रह (रेफरेंडम) के रूप में काम करेंगे। सभी 50 राज्यों में करोड़ों अमेरिकी मतदाता वाशिंगटन में सत्ता के संतुलन को तय करने के लिए मतदान करेंगे, जिससे अमेरिकी प्रतिनिधि सभा और अमेरिकी सीनेट दोनों के नियंत्रण का फैसला होगा। कैपिटल हिल के गलियारों से परे 2026 के मध्यावधि चुनाव राज्यों में कार्यकारी शक्ति को भी नया रूप देंगे। इस दौरान 36 राज्यों के गवर्नर पदों, दर्जनों राज्य अटॉर्नी जनरल, सेक्रेटरी पदों और राज्य विधानमंडलों के सदनों का भविष्य भी दांव पर होगा।

अमेरिका में मध्यावधि चुनाव (मिडटर्म इलेक्शन) क्या होते हैं?

संसदीय व्यवस्थाओं के विपरीत, जहाँ प्रधानमंत्री अपनी सुविधानुसार चुनाव करवा सकते हैं या संसद भंग कर सकते हैं, अमेरिकी संविधान के अनुच्छेद प्रथम और द्वितीय के तहत राष्ट्रीय चुनावों का एक निश्चित और अटल कार्यक्रम तय है। मध्यावधि चुनाव वे आम चुनाव हैं जो अमेरिका में हर चार साल में होते हैं और ये राष्ट्रपति के चार साल के कार्यकाल के ठीक आधे समय पर आयोजित किए जाते हैं। हालांकि मध्यावधि चुनाव वाले साल में राष्ट्रपति पद के लिए मतदान नहीं होता है, लेकिन संघीय और राज्य स्तर की सत्ता के लगभग सभी अन्य महत्वपूर्ण पदों के लिए चुनाव होते हैं।

प्रतिनिधि सभा: प्रतिनिधि सभा की सभी 435 वोटिंग सीटों पर हर दो साल में चुनाव होते हैं। प्रतिनिधियों का कार्यकाल दो साल का होता है, जिसका अर्थ है कि सभी 50 राज्यों के हर एक निर्वाचन क्षेत्र (डिस्ट्रिक्ट) को संसद में अपनी विधायी आवाज़ चुननी होगी।

अमेरिकी सीनेट: सीनेटरों का कार्यकाल छह साल का होता है, जिन्हें तीन चुनावी 'वर्गों' में विभाजित किया गया है। सीनेट के लगभग एक-तिहाई हिस्से पर हर दो साल में चुनाव होते हैं। 2026 में, मतदाता क्लास 2 से संबंधित 33 नियमित सीटों के साथ-साथ अधूरे कार्यकाल को भरने के लिए होने वाले विशेष चुनावों पर भी फैसला करेंगे।

गवर्नर पद के चुनाव: 36 राज्यों और तीन अमेरिकी क्षेत्रों (टेरिटरीज़) के कार्यकारी प्रमुख (गवर्नर) चुनाव का सामना करेंगे। गवर्नरों का राज्य के बजट, न्यायिक नियुक्तियों, कानून व्यवस्था, शिक्षा और राज्य स्तरीय स्वास्थ्य नीतियों पर व्यापक प्रभाव होता है।

राज्य विधानमंडल और स्थानीय प्रशासनिक पद: राज्य सीनेट और राज्य प्रतिनिधि सभा की हज़ारों सीटों पर चुनाव होंगे। इसके साथ ही सेक्रेटरी ऑफ स्टेट (अधिकांश राज्यों में मुख्य चुनाव अधिकारी) और अटॉर्नी जनरल (मुख्य कानून प्रवर्तन अधिकारी) जैसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद भी दांव पर होंगे।

बैलेट: दर्जनों राज्यों के नागरिक संवैधानिक संशोधनों, वैधानिक बदलावों, कर प्रस्तावों, प्रजनन अधिकारों से जुड़े उपायों और मतदान अधिकारों से जुड़े कानूनों पर सीधे मतदान करेंगे। अमेरिकी संविधान बनाने वालों ने सीनेट को एक स्थिर और लगातार काम करने वाली संस्था के तौर पर बनाया था। एक ही चुनाव में सभी सदस्यों के बदलने से रोकने के लिए, उन्होंने सीनेट को तीन अलग-अलग क्लास में बांटा: **क्लास 1:** 2024, 2030 और उसके बाद चुनाव के लिए। **क्लास 2:** 2026, 2032 और उसके बाद चुनाव के लिए। **क्लास 3:** 2022, 2028 और उसके बाद चुनाव के लिए।

2026 में, क्लास 2 की उन सीनेट सीटों पर चुनाव होगा जो मूल रूप से 2020 में चुनी गई थीं। क्योंकि क्लास 2 में ऐतिहासिक रूप से कड़े मुकाबले वाले 'स्विंग स्टेट्स' की ज़्यादा सीटें शामिल रही हैं, इसलिए 2026 का सीनेट मैप दोनों प्रमुख राजनीतिक पार्टियों के लिए एक बहुत ही अनिश्चित और कड़े मुकाबले वाला मैदान है। ऐतिहासिक रूप से मिडटर्म चुनाव (मध्य-अवधि चुनाव) व्हाइट हाउस में काबिज़ राजनीतिक पार्टी के लिए एक बड़ी संरचनात्मक चुनौती पेश करते हैं। अमेरिकी गृह युद्ध के बाद से मौजूदा राष्ट्रपति की पार्टी ने 90 प्रतिशत से ज़्यादा मिडटर्म चुनावों में हाउस की सीटें और ज़्यादातर चुनावों में सीनेट की सीटें गंवाई हैं। जानकार इस घटना को, जिसे अक्सर मिडटर्म कर्स या मिडटर्म पेनल्टी कहा जाता है, कई मुख्य वजहों से जोड़कर देखते हैं। विपक्षी पार्टी के वोटर आम तौर पर ज़्यादा राजनीतिक रूप से प्रेरित, नाराज़ और वोट देने के लिए ज़्यादा सक्रिय होते हैं, जबकि मौजूदा राष्ट्रपति का समर्थन करने वाले वोटर शायद निश्चिंत महसूस करते हों या कार्यकाल के दौरान किए गए समझौतों से असंतुष्ट हों। मिडटर्म चुनाव अनिवार्य रूप से देश के आर्थिक प्रदर्शन, लोगों की सोच (कंज्यूमर सेंटीमेंट), जीवन-यापन की लागत और प्रशासन के शुरुआती दो सालों में लिए गए फैसलों पर एक तरह का जनमत-संग्रह बन जाते हैं। राष्ट्रपति पद का चुनाव जीतने वाले उम्मीदवार द्वारा बनाया गया गठबंधन अक्सर सरकार चलाने के दौरान नीतिगत मतभेदों का सामना करता है, जिससे अलग-अलग वोटिंग समूहों के बीच वोटिंग की संख्या को ऊंचे स्तर पर बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। मिडटर्म चुनाव जीतने के लिए राष्ट्रपति चुनाव अभियान की तुलना में बहुत अलग राजनीतिक रणनीतियों की ज़रूरत होती है। राष्ट्रपति चुनाव वाले वर्षों में वोटिंग आमतौर पर योग्य मतदाताओं के 60% से 66% के बीच होती है। इसके विपरीत, मिडटर्म चुनाव में वोटिंग ऐतिहासिक रूप से काफी कम हो जाती है, जो आमतौर पर 40% से 50% के बीच रहती है। वोटिंग कम होने के कारण, मतदाताओं का स्वरूप बदल जाता है। ज़्यादा उम्र के अमेरिकी, जो चुनाव के साल की परवाह किए बिना लगातार बड़ी संख्या में वोट करते हैं, मिडटर्म चुनाव में मतदाताओं का एक बड़ा हिस्सा बन जाते हैं। कम उम्र के मतदाता, कम आय वाले परिवारों के लोग और नागरिकता पाने वाले लोग मिडटर्म चुनाव में कम संख्या में वोट करते हैं, जब तक कि उन्हें बहुत अच्छी तरह से संगठित ज़मीनी अभियानों या ज़रूरी मुद्दों के ज़रिए प्रेरित न किया जाए। जो भी पार्टी अपने निष्क्रिय समर्थकों को सक्रिय मिडटर्म मतदाताओं में बदलने में सफल होती है, उसे चुनाव के दिन एक बड़ा संरचनात्मक फ़ायदा मिलता है। ■

कांग्रेस ने फिर अपनाई बांटो और राज करो की नीति

मृत्युंजय दीक्षित

वर्तमान समय में कांग्रेस पार्टी जहां एक ओर अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए चुनाव आयोग व देश की अन्य संवैधानिक संस्थाओं पर हमलावर है वहीं दूसरी ओर उसके तेलंगाना राज्य के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने हिंदू देवी देवताओं का विभाजन करके कांग्रेस की बांटो और राज करो की नीति को आगे बढ़ाकर राजनैतिक माहौल को गर्म कर दिया है। दक्षिण का राज्य तेलंगाना कांग्रेस के शासन में आर्थिक तंगी व भ्रष्टाचार से गुजर रहा है। अपनी प्रशासनिक नाकामियों तथा चुनावी वादों को पूरा करने में नाकाम रहने व मुस्लिम तुष्टिकरण को छुपाने के लिए रेवंत रेड्डी ने प्रभु श्रीराम को उत्तर और भगवान शिव को दक्षिण का देवता बताकर एक नयी विभाजक रेखा खींचने का असफल प्रयास किया है। उत्तर भारत में अपने अस्तित्व का संघर्ष करती कांग्रेस अब विभाजनकारी मानसिकता के सबसे निचले पायदान पर पहुँच गयी लगती है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी इससे पूर्व भी कई विवादित बयान दे चुके हैं। एक बार उन्होंने कहा था कि मुस्लिम ही कांग्रेस है और कांग्रेस ही मुस्लिम है। रेवंत रेड्डी का कहना है कि भगवान राम अमीरों के देवता हैं और भगवान शिव गरीबों के देवता हैं। वे स्वयं को भगवान शिव का भक्त बताते हुए कहते हैं कि भाजपा ने भगवान राम को चोरी कर लिया है। रेवंत रेड्डी का कहना है भाजपा के लोग 'हर हर महादेव' तक नहीं बोलते। वह एक बार हिंदुओं के 33 करोड़ देवताओं पर भी विकृत बयानबाजी कर चुके हैं। दिमागी नक्सली नेताओं का यही लक्ष्य रहता है किसी न किसी प्रकर हिंदू देवी देवताओं का अपमान किया जाए। विगत सितम्बर में हुए गणेशोत्सव आयोजन के दौरान तेलंगाना में कई जगह से गणेशोत्सवों के आयोजन पर बाधाओं के समाचार आ रहे थे।

कांग्रेस पार्टी ने अयोध्या में श्री राम मंदिर के निर्माण में और वाराणसी में काशी विश्वनाथ कारिडोर का विरोध किया। ज्ञानवापी में मिले शिवलिंग को फव्वारा बताने में सबसे पहले कांग्रेस ही मैदान में उतर पड़ी थी। रेवंत रेड्डी संभवत: यह बात भूल गए कि भगवान शिव को नीलकंठ भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने समाज की रक्षा के लिए विष को भी अपने गले में ही धारण कर लिया था। तेलंगाना के मुख्यमंत्री को भगवान श्रीराम का चरित्र पढ़ना चहिए। मुख्यमंत्री को यह नहीं पता कि भगवान श्रीराम मर्यादा पुरोत्तम थे। अंग्रेजों की बनाई हुई पार्टी कांग्रेस ने अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की रणनीति के तहत ही विगत 76 वर्षों में हिंदू समाज को जाति, पंथ, संप्रदाय, भाषा और क्षेत्र के आधार पर बांटने की पूरी कोशिश की है और वह लगातार जारी है। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने अपने बयान के माध्यम से आर्य बनाम द्रविड का



तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी इससे पूर्व भी कई विवादित बयान दे चुके हैं। एक बार उन्होंने कहा था कि मुस्लिम ही कांग्रेस है और कांग्रेस ही मुस्लिम है। रेवंत रेड्डी का कहना है कि भगवान राम अमीरों के देवता हैं और भगवान शिव गरीबों के देवता हैं।

विभाजन करते हुए यह भी कहाकि हम द्रविड़ हैं और हम भगवान शिव की आराधना करते हैं जबकि आर्य प्रभु श्रीराम को मानते हैं। रेवंत रेड्डी का कहना है कि बीजेपी के मंचों से जयश्रीराम का नारा सुनाई देता है जबकि 'हर हर महादेव' का उद्घोष नहीं किया जाता । रेड्डी ने कहा कि 'मोदीजी हर हर महादेव क्यों नहीं कहते?' रेवंत रेड्डी का बयान झूठ का पुलिंदा भर है। रेवंत रेड्डी को यह नहीं पता कि उत्तर भारत में केदारनाथ, विश्वनाथ और महाकाल जैसे ज्योतिर्लिंग हैं, उत्तर भारत में ही काँवड़ यात्रा होती है और श्रावण माह महादेव को ही समर्पित रहता है। कांग्रेस को तो भगवान शिव के मंदिरों के विकास से भी चिढ़ रही है। गुजरात के पवित्र सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार रोकने और तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद को सोमनाथ मंदिर न जाने देने का भरसक प्रयास स्वयं नेहरु जी ने किया था। सोमनाथ मंदिर के 1000 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कर्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रतिभाग पर भी कांग्रेस ने नफरत भरा बयान दिया था। मध्य प्रदेश के उज्जैन में बने भव्य महाकाल कॉरिडोर का विरोध भी कांग्रेस नेताओं ने ही किया था। आज दक्षिण भारत के जो कांग्रेसी नेता अपने आपको शिवभक्त बता रहे हैं वह ज्ञानवापी में मिले शिवलिंग के उद्धार के लिए आगे क्यों नही आ रहे हैं? कांग्रेस के शासनकाल में भगवान शिव के मंदिरों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को एक बार काशी विश्वनाथ धाम और सोमनाथ मंदिर में जाकर दर्शन करना चाहिए तब उन्हें स्पष्ट रूप से पता चल जाएगा कि आर्य प्रभु श्रीराम के भी भक्त हैं और भगवान शिव के भी भक्त हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रामेश्वरम में भी भगवान की पूजा करते हैं और काशी विश्वनाथ धाम में भी। वह अपनी हर जनसभा में हर-हर महादेव के नारे लगाते हैं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवत रेड्डी ने निहित राजनीतिक स्वार्थ व गांधी परिवार की चाटुकारिता के लिए एक निंदनीय बयान दिया है।

यह बयान भारत को उत्तर और दक्षिण में बांटने की कांग्रेस की राजनीति का हिस्सा है। भाषा के आधार पर भी कांग्रेस उत्तर और दक्षिण को लड़ाती रही है। इस बयानबाजी का एक पक्ष मुस्लिम समाज को खुश रखने के लिए हिन्दुओं की आस्था पर प्रहार करना भी है। यहां पर एक बड़ा सवाल यह भी है कि कांग्रेस के नेता कभी अन्य धर्मों के प्रति इस प्रकार के बयान क्यों नहीं देते? यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो चुकी है गांधी परिवार व विपक्ष को अयोध्या का भव्य राम मंदिर व काशी विश्वनाथ धाम सहित अन्य मंदिरों का विकास अच्छा नहीं लग रहा है इसलिए अब उसने यह नया नैरेटिव गढ़ना शुरू कर दिया है कि प्रधानमंत्री मोदी व बीजेपी के लोग 'हर- हर महादेव' नहीं बोलते। वास्तविकता ये है देश की जनता कांग्रेस की इस फूट डालो-राज करो की नीति अच्छी तरह से समझ चुकी है यही कारण है कि कांग्रेस लगातार सिमट रही है लेकिन वह अपने में सुधार के बजाए चुनाव आयोग व संवैधानिक संस्थाओं पर हमलावर होकर सत्ता में वापसी का प्रयास कर रही है। ■

यूपी में प्रियंका की भूमिका को लेकर उठते सवाल

स्वदेश कुमार



उत्तर प्रदेश की सियासी पिच पर साल 2027 के विधानसभा चुनावों को लेकर भले ही बाहर से 'इंडिया' गठबंधन के अटूट होने का ढिंढोरा पीटा जा रहा हो, लेकिन परदे के पीछे जो कुछ पक रहा है, वह किसी पॉलिटिकल थ्रिलर से कम नहीं है। सतह पर मुकाबला सत्ताधारी बीजेपी से होना चाहिए, पर कांग्रेस के तेवर देखकर ऐसा लग रहा है मानो उनका असली निशाना भारतीय जनता पार्टी नहीं, बल्कि समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया अखिलेश यादव हैं। दिल्ली के पावर गलियारों से लेकर लखनऊ के दफ्तरों तक, कांग्रेस जिस आक्रामक और जिद भरी शैली में जमीन मांग रही है, उसने राजनीतिक पंडितों को भी हैरान कर दिया है। सवाल यह उठ रहा है कि क्या प्रियंका गांधी वाड्रा 2027 के इस बड़े दंगल में बीजेपी को शिकस्त देने के बजाय समाजवादी पार्टी की सियासी जमीन पर कब्जा करने की कोई सुनियोजित स्क्रिप्ट लिख रही हैं? इस पूरी पटकथा की टाइमिंग और चेहरों को गौर से देखा जाए तो कई राज से पर्दा उठता है। संसद भवन में राहुल गांधी और अखिलेश यादव की मुलाकात के बाद से ही यह साफ हो गया था कि उत्तर प्रदेश से जुड़े तमाम राजनीतिक और सांगठनिक फैसलों की धुरी पूरी तरह प्रियंका गांधी के हाथों में है। इस महत्वपूर्ण बैठक के तुरंत बाद जमीन पर जो बड़े फेरबदल हुए, वे किसी सामान्य प्रशासनिक बदलाव का हिस्सा नहीं बल्कि एक बड़े सियासी गेम प्लान का हिस्सा थे। कांग्रेस ने अपने आक्रामक तेवरों को धार देने के लिए ऐसे चेहरों को आगे करना शुरू कर दिया जो सीधे तौर पर सपा को असहज करने के लिए जाने जाते हैं। आम आदमी पार्टी का दामन छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए राजेंद्र पाल गौतम को उत्तर प्रदेश का प्रभारी बनाया गया, तो वहीं तेज-तर्रार और हमेशा मुखर रहने वाले सहारनपुर के सांसद इमरान मसूद को कार्यकारी अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंप दी गई। इसके साथ ही, सौम्य छवि वाली आराधना मिश्रा 'मोना' को प्रदेश अध्यक्ष की कमान देकर इस नई तिकड़ी को मैदान में उतारा गया। कांग्रेस ने इसके जरिए सवर्ण, दलित और मुस्लिम समीकरण साधने की कागजी कोशिश तो जरूर की, लेकिन इनके बयानों ने गठबंधन के भीतर भूचाल ला दिया है। लखनऊ की धरती पर कदम रखते ही नवनियुक्त प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने यह कहकर सनसनी फैला दी कि कांग्रेस कोई छोटी-मोटी पार्टी नहीं है और वह आगामी विधानसभा चुनाव में आधे से कम सीटों पर किसी भी कीमत पर समझौता नहीं करेगी। उनके इस बयान के बाद इमरान मसूद ने तो जैसे मोर्चा ही खोल दिया। वह हर रोज मीडिया के तीखे कैमरों के सामने अखिलेश यादव की रणनीति, कार्यशैली और सीटों के बंटवारे पर सवाल खड़े करते नजर आते हैं। यहाँ आंकड़ों के आईने में कांग्रेस के इन दावों की हकीकत भी टटोलनी बेहद जरूरी हो जाती है। साल 2024 के लोकसभा चुनावों के परिणामों को अगर हम याद करें, तो जब अखिलेश यादव ने बड़े दिल का परिचय देते हुए कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में 17 सीटें दी थीं, तब कांग्रेस इनमें से सिर्फ 6 सीटों पर ही जीत का स्वाद चख पाई थी। इसके विपरीत, समाजवादी पार्टी ने अकेले अपने दम पर 37 सीटों पर शानदार परचम लहराकर राज्य की सबसे बड़ी पार्टी होने का लोहा मनवाया था। लोकसभा चुनाव के इस जमीनी और बेहद कड़वे आंकड़े को पूरी तरह दरकिनार करके यदि कोई दल विधानसभा चुनाव में डेढ़ सौ सीटों की मांग या अत्यधिक दबाव की राजनीति करे, तो इसे सियासी नासमझी कहें या कोई गहरी साजिश? दिलचस्प बात यह है कि कांग्रेस नेताओं की इस लगातार बयानबाजी और खुले हमलों पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव पूरी तरह चुप्पी साधे हुए हैं। वह खुद सीधे तौर पर इन बयानों पर कुछ कहने से बच रहे हैं और अपनी पार्टी के अन्य नेताओं या प्रवक्ताओं के जरिए नपा-तुला पलटवार करवा रहे हैं। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि अखिलेश यादव की यह खामोशी उनकी कोई कमजोरी नहीं, बल्कि एक बेहद सोची-समझी और परिपक्व रणनीति है। वह अच्छी तरह भांप चुके हैं कि यदि उन्होंने इस वक्त कोई भी तीखा या आक्रामक पलटवार किया, तो सारा ठीकरा विपक्षी कलह पर फूट जाएगा और बीजेपी को इसका सीधा राजनीतिक फायदा मिल जाएगा। लेकिन इसके बावजूद, सपा के अंदरखाने कार्यकर्ताओं और स्थानीय नेताओं में इस बात को लेकर जबरदस्त उबाल है कि जिस पार्टी का खुद का जनाधार यूपी में लगातार सिमट चुका है, वह इतनी बड़ी हैसियत की मांग किस बिना पर कर रही है। कांग्रेस की यह जिद और अकेले दम पर अपनी शर्तों पर राजनीति करने की आदत कोई नई नहीं है। इसके इतिहास के पन्नों को पलटेंगे तो ऐसी कई मिसालें मिलेंगी जहाँ कांग्रेस ने अपने ही सहयोगियों की लुटिया डुबोई है और गठबंधन धर्म को तार-तार किया है। साल 2017 के यूपी विधानसभा चुनाव के इतिहास को ही देख लीजिए, तब समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस को सम्मानजनक रूप से 105 सीटें दी थीं, लेकिन कांग्रेस ने जिद पकड़कर 114 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए, जिसका नतीजा यह हुआ कि गठबंधन का पूरा चुनावी माहौल खराब हो गया और अंततः बीजेपी ने प्रचंड बहुमत की सरकार बना ली। यही नहीं, साल 2022 के विधानसभा चुनावों में जब प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने अपनी ताकत दिखाने के लिए सभी 403 सीटों पर अकेले ताल ठोकी थी, तब पार्टी का ऐसा सूपड़ा साफ हुआ कि रायबरेली और अमेठी जैसी पारिवारिक वीआईपी सीटों पर भी जमानतें खतरे में पड़ गईं और कुल वोट शेयर सिमटकर महज 2.34 प्रतिशत पर आ गया। ■

विरासत का मान, विकास का अभियान
प्रयागराज

अतुल्य आस्था उत्सव प्रदेश

प्रयागराज में 11 मंदिर कॉरिडोर विकसित

हनुमान मंदिर कॉरिडोर, अक्षयवट मंदिर-सरस्वती कूप कॉरिडोर एवं भारद्वाज आश्रम कॉरिडोर से पर्यटन को विस्तार

यमुना नदी घाट पर पौराणिक कथाओं पर आधारित वॉटर लेजर शो

गंगा एक्सप्रेसवे का 16 कि.मी. हिस्सा जनपद में स्थित



विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP



स्वच्छता ही सेवा 2026

स्वच्छता में सहभाग
स्वच्छ भारत, विकसित भारत

(17 सितंबर-17 अक्टूबर, 2026)

बदल रहा परिवेश-स्वच्छ बन रहा प्रदेश

प्रमुख घटक

• स्वच्छता लक्षित इकाइयों (CTUS) एवं सार्वजनिक स्थलों का रूपांतरण • स्वच्छता से समृद्धि • सफाईमित्र सुरक्षा एवं सम्मान शिविर • स्वच्छता के लिए जनभागीदारी • स्वच्छ पाठशाला- स्वच्छता के लिए युवा

'स्वच्छता ही सेवा 2026' के अंतर्गत प्रमुख गतिविधियां

17-09-2026	'स्वच्छता ही सेवा 2026' कार्यक्रम का शुभारंभ
17-09-2026 से 02-10-2026	स्वच्छता लक्षित इकाई के विलोपीकरण हेतु सफाई अभियान
17-09-2026 से 02-10-2026	सफाईमित्रों हेतु सुरक्षा शिविर
23-09-2026 से 26-09-2026	जनभागीदारी कार्यक्रम
25-09-2026 एवं 26-09-2026	पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के उपलक्ष्य में स्वच्छता कार्यक्रम
27-09-2026 से 17-10-2026	प्लास्टिक उन्मूलन से संबंधित विशेष जागरूकता कार्यक्रम
01-10-2026	'एक दिन, एक घंटा, एक साथ स्वच्छता' के लिए विशेष श्रमदान अभियान
07-10-2026	विशेष स्वच्छता कार्यक्रम
11-10-2026 से 17-10-2026	'स्वच्छ पर्व-हरित पर्व' एवं पौधरोपण कार्यक्रम

157 घंटे महासफाई अभियान उत्तर प्रदेश

विशेष श्रमदान अभियान

एक दिन, एक घंटा, एक साथ स्वच्छता

01 अक्टूबर, 2026

स्वच्छता के सबसे बड़े जन आंदोलन में भाग लेने के लिए QR कोड स्कैन करें या www. swachhatahiseva.gov.in पर जाकर पार्टनर साइनअप पर क्लिक करें एवं सफाई में भागीदार बनें

SAY NO TO PLASTIC

स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति

स्वच्छ सारथी Club

स्वच्छता में भागीदार बनें-नैतिक जिम्मेदारी पूरी करें

टोल फ्री 1533/1800 1800 101

विकास की गति अपार डबल इंजन सरकार

स्वच्छ भारत मिशन-नगरीय @sbm_up

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

जब जब देश के साथ खड़े होने की बात आती है, तब राहुल गांधी की राह अलग क्यों हो जाती है?

नीरज कुमार दुबे

स्टारलिंक की भारत में एंट्री का रास्ता साफ होता नहीं दिख रहा, तो एलन मस्क ने मुकेश अंबानी पर हमला करने का नया तरीका खोज लिया है। पहले अंबानी को भारत का 'असली बॉस' बताया और अब उन्हें 'प्राइम मिनिस्टर अंबानी' कहकर तंज कस दिया। लेकिन मस्क साहब, जरा ठहरिए! यह सिर्फ मुकेश अंबानी पर कटाक्ष नहीं है, बल्कि भारत के प्रधानमंत्री पद को भी एक कारोबारी विवाद में घसीटने की कोशिश है। प्रधानमंत्री का पद किसी उद्योगपति की जागीर नहीं, बल्कि देश के लोकतंत्र और संवैधानिक व्यवस्था का प्रतीक है। ऐसे में अपनी कंपनी के हितों के लिए इस पद पर तंज कसना आखिर किस तरह की कारोबारी शालीनता है? सवाल यह भी है कि भारत में अपनी शर्तें मनवाने के लिए मस्क इतने उतावले क्यों हैं कि उन्हें अब देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था की गरिमा का भी ख्याल नहीं रहा?

हम आपको बता दें कि एलन मस्क का आरोप है कि मुकेश अंबानी का प्रभाव स्टारलिंक की भारत में एंट्री में बाधा बन रहा है। जबकि भारत सरकार का रुख स्पष्ट है कि स्टारलिंक, जियो सैटकॉम और वनवेब जैसी कंपनियों को सुरक्षा मंजूरी और स्पेक्ट्रम से जुड़े नियमों का पालन करना होगा। केंद्रीय दूरसंचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी मस्क के भेदभाव के आरोपों को खारिज कर चुके हैं। ऐसे में सवाल यह है कि जब नियमों के तहत मंजूरी मिलनी है, तो मस्क बार-बार अंबानी को निशाना बनाकर आखिर साबित क्या करना चाहते हैं? देखा जाये तो मस्क जिस स्टारलिंक को भारत में जल्द शुरू करने की मांग कर रहे हैं, वह कोई सामान्य इंटरनेट सेवा नहीं है। यह हजारों उपग्रहों के नेटवर्क के जरिए इंटरनेट उपलब्ध कराती है। दूरदराज के गांवों, सीमावर्ती इलाकों और आपदा प्रभावित क्षेत्रों के लिए यह तकनीक उपयोगी हो सकती है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि सुरक्षा संबंधी सवालों को नजरअंदाज कर दिया जाए। रूस और चीन समेत दुनिया के तमाम देशों ने स्टारलिंक को अनुमति नहीं दी है। वहीं भारत के लिए महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या विदेशी कंपनी के नियंत्रण वाले नेटवर्क पर निर्भरता राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से जोखिम पैदा कर सकती है? भारत सरकार की चिंताओं में डेटा की सीमा पार आवाजाही, संचार पर नियंत्रण और सुरक्षा एजेंसियों की कानूनी निगरानी जैसे मुद्दे शामिल हैं। यह चिंता काल्पनिक भी नहीं है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने मार्च 2025 में ही स्टारलिंक पर सवाल उठाए थे।



हम आपको बता दें कि एलन मस्क का आरोप है कि मुकेश अंबानी का प्रभाव स्टारलिंक की भारत में एंट्री में बाधा बन रहा है। जबकि भारत सरकार का रुख स्पष्ट है कि स्टारलिंक, जियो सैटकॉम और वनवेब जैसी कंपनियों को सुरक्षा मंजूरी और स्पेक्ट्रम से जुड़े नियमों का पालन करना होगा।

उन्होंने पूछा था कि राष्ट्रीय सुरक्षा की जरूरत पड़ने पर संचार बंद करने का अधिकार स्टारलिंक के पास होगा या उसके भारतीय साझेदारों के पास? उन्होंने यह भी पूछा था कि क्या इन समझौतों के पीछे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को खुश करने की कोशिश थी? विडंबना देखिए कि जिस मुद्दे पर कांग्रेस पहले सुरक्षा संबंधी सवाल उठा रही थी, उसी मुद्दे पर आज राहुल गांधी मस्क के आरोपों को राजनीतिक समर्थन देते दिखाई दे रहे हैं। साथ ही एलन मस्क ने रिलायंस पर भाजपा को चुनावी चंदा देने का आरोप लगाया है। लेकिन अगर चुनावी फंडिंग और कारोबारियों के राजनीतिक प्रभाव का प्रश्न उठाया जा रहा है, तो यही कसौटी मस्क पर भी लागू होनी चाहिए। अमेरिकी चुनाव आयोग में दाखिल दस्तावेजों से पता चला था कि मस्क ने 2024 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन करने वाले राजनीतिक समूहों को 25.9 करोड़ डॉलर से अधिक दिए थे। इसमें लगभग 23.9 करोड़ डॉलर अमेरिका पीएसी को दिए गए थे। इसलिए सवाल उठता है कि अगर किसी उद्योगपति की चुनावी फंडिंग राजनीतिक प्रभाव का प्रमाण मानी जा सकती है, तो ट्रंप की जीत के लिए करोड़ों डॉलर खर्च करने वाले मस्क से यह सवाल क्यों नहीं पूछा जाना चाहिए? क्या अमेरिका में किसी पसंदीदा उम्मीदवार की मदद करना लोकतंत्र है, लेकिन भारत में किसी कंपनी की राजनीतिक फंडिंग अपने आप संदेह का विषय बन जाती है? वास्तविकता यह है कि कॉरपोरेट राजनीतिक चंदा अनेक लोकतंत्रों में चुनावी राजनीति का हिस्सा है। साथ ही भारत में इंटरनेट की कीमतों की तुलना भी इस बहस को एक नया आयाम देती है। रिलायंस जियो ने सस्ते मोबाइल डेटा के जरिए करोड़ों भारतीयों को इंटरनेट से जोड़ा है और यह कंपनी पूरी दुनिया में सबसे सस्ता डेटा देने के लिए जानी जाती है जबकि एलन मस्क की ब्रॉडबैंड सेवाएं और उनके उपकरण बेहद महंगे हैं। हालांकि इसका मतलब यह नहीं कि स्टारलिंक बेकार है। दूरदराज के क्षेत्रों में उसकी उपयोगिता वास्तविक हो सकती है। लेकिन मस्क यदि भारतीयों के हितों की बात करते हैं, तो उन्हें यह भी बताना होगा कि उनकी सेवा कितने भारतीयों की पहुंच में होगी। प्रतिस्पर्धा का स्वागत होना चाहिए, मगर राष्ट्रीय सुरक्षा और आम उपभोक्ता की आर्थिक क्षमता की कीमत पर नहीं। सके अलावा, राहुल गांधी ने मस्क के 'असली बॉस' वाले सवाल के जवाब में लिखा, 'वेलकम टू इंडिया, एलन। दूसरे शख्स से मिलोगे तो हैरान रह जाओगे।' यह टिप्पणी परोक्ष रूप से गौतम अडानी की ओर संकेत करती दिखाई दी। मस्क ने इसके जवाब में राहुल को धन्यवाद दिया। देखा जाये तो राहुल का उद्योगपतियों और सरकार के संबंधों पर सवाल उठाना गलत नहीं है। लेकिन क्या राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दे पर किसी विदेशी कारोबारी के साथ सोशल मीडिया पर राजनीतिक तंज कसना पर्याप्त है? विपक्ष का दायित्व सिर्फ सरकार पर आरोप लगाना नहीं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि देश की रणनीतिक और डिजिटल सुरक्षा पर कोई समझौता न हो। साथ ही इस बात पर भी सवाल उठ रहे हैं कि जब जब राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल आता है तब तब राहुल गांधी अलग राह क्यों पकड़ लेते हैं? यह सवाल इसलिए भी उठ रहा है क्योंकि कई वरिष्ठ कांग्रेस नेता राहुल गांधी के ट्वीट से नाराज हैं। ■

With Best Compliments from



ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

पहाड़ों की राजनीति लेने लगी करवट!

उत्तराखंड कांग्रेस में छिड़ी महाभारत और हरीश रावत के 'तेवर' बड़े सियासी तूफान के संकेत दे रहे हैं



कांग्रेस हाईकमान ने हरीश रावत की 'धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा' को लेकर साफ संदेश दिया है कि चुनावी राज्य में किसी एक नेता का समानांतर अभियान नहीं चल सकता और पार्टी को सामूहिक रूप से चुनाव लड़ना होगा। लेकिन हरीश रावत पीछे हटने की बजाय अपनी यात्रा पर आगे बढ़े।

अभ्युदय चतुर्वेदी

पहाड़ की राजनीति में वैसे तो मौसम कब करवट ले ले, कहा नहीं जा सकता, लेकिन इस बार कांग्रेस के भीतर का मौसम कुछ ज्यादा ही बिगड़ा हुआ नजर आ रहा है। एक तरफ भाजपा लगातार संगठन को चुनावी मोड में ले जा रही है, दूसरी तरफ कांग्रेस अपने ही घर की उठापटक से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रही है। इस पूरी कहानी के केंद्र में एक बार फिर वही पुराने चेहरे हरीश रावत हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इस बार सवाल यह है कि लगातार चुनावी पराजयों के बाद भी कांग्रेस आखिर बार-बार उन्हीं पर दांव क्यों लगाये? और क्या अब भी उनके पास उत्तराखंड की राजनीति को निर्णायक रूप से प्रभावित करने की उतनी ही ताकत बची है? हम आपको बता दें कि कांग्रेस हाईकमान ने हरीश रावत की 'धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा' को लेकर साफ संदेश दिया है कि चुनावी राज्य में किसी एक नेता का समानांतर अभियान नहीं चल सकता और पार्टी को सामूहिक रूप से चुनाव लड़ना होगा। लेकिन हरीश रावत पीछे हटने की बजाय अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। उनका कहना है कि वे कांग्रेस को सत्ता में वापस लाने के लिए जनता के बीच जा रहे हैं। सुनने में यह बात बिल्कुल कांग्रेस के हित में लगती है, लेकिन राजनीति में सिर्फ इरादा नहीं, नतीजे भी देखे जाते हैं और यहीं से हरीश रावत की मौजूदा राजनीतिक हैसियत पर सवाल उठने शुरू होते हैं।

हरीश रावत उत्तराखंड के बड़े नेताओं में रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं। उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली, केंद्र की राजनीति में लंबी पारी खेली और उत्तराखंड कांग्रेस को कई मुश्किल दौर में संभाला। लेकिन राजनीति में किसी नेता का कद सिर्फ उसके पुराने पदों से नहीं मापा जाता। चुनावी राजनीति में जनता का फैसला सबसे बड़ा पैमाना होता है और अगर इसी पैमाने पर हरीश रावत के पिछले कुछ चुनावों को देखा जाए तो तस्वीर बहुत चमकदार नहीं दिखाई देती। 2017 का विधानसभा चुनाव शायद इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। मुख्यमंत्री रहते हुए हरीश रावत ने दो विधानसभा सीटों से चुनाव लड़ने का फैसला किया। हरिद्वार ग्रामीण और किच्छा, दोनों सीटों पर वह मैदान में उतरे, लेकिन दोनों जगह हार गए। हरिद्वार ग्रामीण में भाजपा के यतीश्वरानंद ने उन्हें 12 हजार से ज्यादा वोटों से हराया, जबकि किच्छा में भाजपा के राजेश शुक्ला ने उन्हें शिकस्त दी। यानी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठा उत्तराखंड का सबसे बड़ा कांग्रेसी चेहरा विधानसभा तक नहीं पहुंच सका। उस चुनाव में कांग्रेस की हालत इतनी खराब हुई कि पार्टी 70 में से सिर्फ 11 सीटों पर सिमट गई और भाजपा ने 57 सीटें जीतकर सत्ता पर कब्जा कर लिया।

वैसे राजनीति में हार के बाद वापसी संभव होती है और हरीश रावत ने भी कोशिश जारी रखी। 2019 में वे नैनीताल-ऊधमसिंह नगर लोकसभा सीट से चुनाव मैदान में उतरे, लेकिन भाजपा के अजय भट्ट के सामने टिक नहीं सके। अजय भट्ट को 7.72 लाख से ज्यादा वोट मिले और हरीश रावत करीब 4.33 लाख वोट पर रुक गए। हार का अंतर तीन लाख से ज्यादा रहा। इसके बाद 2022 में विधानसभा चुनाव आया तो रावत ने लालकुआं को अपना रणक्षेत्र बनाया। इस बार भी भाजपा के मोहन सिंह बिष्ट ने उन्हें 17,527 वोटों के अंतर से हरा दिया। यानी 2017 में दो विधानसभा सीटों पर हार, 2019 में लोकसभा की हार और 2022 में विधानसभा की हार, लगातार चुनावी पराजय का यह सिलसिला किसी भी नेता के राजनीतिक भविष्य पर सवाल खड़ा करने के लिए काफी है। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती। 2024 के लोकसभा चुनाव में हरिद्वार से कांग्रेस ने हरीश रावत के बेटे वीरेंद्र रावत को मैदान में उतारा। मुकाबला भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत से था। नतीजा फिर कांग्रेस के खिलाफ गया। त्रिवेंद्र सिंह रावत ने वीरेंद्र रावत को करीब 1.64 लाख वोटों से हरा दिया। यानी जिस परिवार को कांग्रेस लंबे समय से उत्तराखंड की राजनीति में एक मजबूत आधार मानती रही है, उसके सामने भी चुनावी जमीन उतनी मजबूत दिखाई नहीं दी, जितनी पार्टी शायद मानती रही है। यहीं से सवाल पैदा होता है कि बार-बार हरीश रावत पर ही दांव क्यों लगाया जाये? क्या कांग्रेस के पास उत्तराखंड में कोई नया चेहरा नहीं है? क्या पार्टी ने नई पीढ़ी का नेतृत्व तैयार नहीं किया? क्या संगठन के भीतर ऐसा कोई नेता नहीं है जो हरीश रावत के बिना कांग्रेस को चुनावी मुकाबले में खड़ा कर सके? या फिर कांग्रेस हाईकमान को अब भी लगता है कि चुनाव जीतने की क्षमता भले कम हुई हो, लेकिन हरीश रावत के पास वह राजनीतिक अनुभव, जनसंपर्क और संगठनात्मक पकड़ है जिसे नजरअंदाज करना पार्टी के लिए नुकसानदेह होगा?

देखा जाये तो हरीश रावत की सबसे बड़ी ताकत यही है कि वे उत्तराखंड की राजनीति को बेहद करीब से जानते हैं। वे पहाड़ की भाषा समझते हैं, मैदान की राजनीति को समझते हैं और कांग्रेस के पुराने कार्यकर्ताओं के बीच उनकी पकड़ भी है। वे राजनीतिक मुद्दों को जनता की भाषा में बदलने की कला जानते हैं। लेकिन उनकी सबसे बड़ी कमजोरी भी अब सामने है। उनकी व्यक्तिगत चुनावी विश्वसनीयता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। जब कोई नेता खुद लगातार चुनाव हार रहा हो तो उसके समर्थकों के लिए यह कहना आसान नहीं होता कि वही नेता पार्टी को सत्ता तक पहुंचा देगा। यही वजह है कि कांग्रेस के भीतर हरीश रावत की भूमिका को लेकर असमंजस दिखाई देता है। पार्टी उन्हें पूरी तरह किनारे नहीं कर सकती, क्योंकि उनका अनुभव और जनाधार अब भी उपयोगी है। लेकिन पार्टी उन्हें पूरी तरह आगे भी नहीं कर सकती, क्योंकि तब बाकी नेताओं और गुटों के बीच असंतोष बढ़ने का खतरा है। अगर हरीश रावत अपनी अलग राजनीतिक गतिविधियां जारी रखते हैं तो हाईकमान को डर है कि चुनाव से पहले ही कांग्रेस का मंच अलग-अलग हिस्सों में बंट जाएगा। देखा जाये तो उत्तराखंड कांग्रेस की असली समस्या यही है। उसके पास नेता बहुत हैं, लेकिन नेतृत्व का सर्वमान्य चेहरा नहीं है। हर नेता अपने समर्थकों के साथ खड़ा है, हर गुट अपनी राजनीतिक जगह चाहता है और दिल्ली चाहती है कि चुनाव आते-आते सभी एक मंच पर दिखाई दें। लेकिन पहाड़ की राजनीति में जितनी ऊंचाई होती है, उतने ही मोड़ भी होते हैं। कांग्रेस के सामने इस समय सबसे बड़ा मोड़ नेतृत्व का ही है। उधर भाजपा की कहानी बिल्कुल अलग दिखाई दे रही है। 2017 में भाजपा ने 70 में से 57 सीटें जीतकर कांग्रेस को सत्ता से बाहर किया था। 2022 में भाजपा का आंकड़ा घटकर 47 जरूर हुआ, लेकिन सत्ता उसके हाथ से नहीं निकली। कांग्रेस 19 सीटों तक पहुंची, लेकिन सरकार बनाने से काफी दूर रही। इसके बाद 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उत्तराखंड की पांचों सीटें जीतकर कांग्रेस का खाता तक नहीं खुलने दिया। यानी विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा के पास लगातार चुनावी जीत की मनोवैज्ञानिक बढ़त भी है और मजबूत संगठन की ताकत भी। भाजपा की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह पिछली जीत के भरोसे बैठी दिखाई नहीं देती। वह उन सीटों पर भी संगठन मजबूत करने में जुटी है जहां उसे विधानसभा चुनाव में हार मिली थी। पार्टी की तैयारी बूथ स्तर तक दिखाई देती है और उसके सामने चुनाव सिर्फ सरकार बचाने का नहीं, बल्कि उत्तराखंड में अपने राजनीतिक वर्चस्व को और मजबूत करने का है। इसके उलट कांग्रेस के पास सरकार के खिलाफ मुद्दों की कोई कमी नहीं है। बेरोजगारी है, भर्ती परीक्षाओं के सवाल हैं, पलायन है, पहाड़ के गांवों का खाली होना है, जमीन और जंगल के सवाल हैं, युवाओं की नाराजगी है और स्थानीय अस्मिता से जुड़े मुद्दे हैं। लेकिन इन मुद्दों को एक बड़े राजनीतिक अभियान में बदलने से पहले कांग्रेस को अपने भीतर की लड़ाई खत्म करनी होगी। यही वह जगह है जहां भाजपा को सबसे बड़ा फायदा मिल रहा है। हालांकि कांग्रेस के लिए उम्मीद पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। 2024 में बद्रीनाथ और मंगलौर विधानसभा उपचुनाव जीतना यह दिखाता है कि भाजपा अजेय नहीं है। लेकिन केदारनाथ उपचुनाव में भाजपा की जीत ने यह भी साफ कर दिया कि कांग्रेस के सामने चुनौती छोटी नहीं है। उसे सिर्फ भाजपा के खिलाफ माहौल बनाने से काम नहीं चलेगा, उसे अपना संगठन, अपना नेतृत्व और अपना चुनावी संदेश तीनों मजबूत करने होंगे।

इसी मोड़ पर हरीश रावत का सवाल सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। अगर रावत पार्टी को मजबूत करने के लिए जनता के बीच जाना चाहते हैं तो कांग्रेस को उनके अनुभव का इस्तेमाल जरूर करना चाहिए। लेकिन अगर उनकी सक्रियता कांग्रेस के भीतर एक और ध्रुवीकरण पैदा करती है तो वही सक्रियता पार्टी के लिए बोझ बन सकती है। कांग्रेस को यह तय करना होगा कि हरीश रावत उसके लिए एक वरिष्ठ मार्गदर्शक और स्टार प्रचारक हैं या फिर एक बार फिर पूरा चुनाव उन्हीं के इर्द-गिर्द लड़ा जाएगा। क्योंकि इन दोनों रास्तों में जमीन-आसमान का फर्क है। देखा जाये तो उत्तराखंड की राजनीति में हरीश रावत का अध्याय अभी खत्म नहीं हुआ है, लेकिन यह भी सच है कि उनका सबसे मजबूत दौर पीछे छूट चुका है। उनकी राजनीतिक प्रासंगिकता अब सिर्फ इस बात से तय नहीं होगी कि वे कितनी बड़ी रैलियां करते हैं या कितने जिलों में यात्रा निकालते हैं। असली सवाल यह होगा कि क्या वे कांग्रेस के भीतर बिखरे हुए नेताओं और कार्यकर्ताओं को एक मंच पर ला सकते हैं और क्या उनकी मौजूदगी पार्टी के वोट में बदल सकती है? वहीं कांग्रेस को भी यह समझना होगा कि उत्तराखंड की जनता सिर्फ पुराने चेहरों की यादों पर वोट नहीं करती। पहाड़ की जनता अपने नेताओं से हिसाब मांगती है। वह पूछती है कि पांच साल में क्या हुआ, रोजगार कहां है, गांव क्यों खाली हो रहे हैं, सड़क और स्वास्थ्य की हालत क्या है और आने वाली पीढ़ी के लिए राज्य में क्या बचा है। इसलिए 2027 का चुनाव अगर कांग्रेस सिर्फ हरीश रावत बनाम भाजपा बनाकर लड़ती है तो यह उसकी रणनीतिक भूल होगी। उसे हरीश रावत के अनुभव को इस्तेमाल करते हुए एक नई राजनीतिक टीम और नया नेतृत्व सामने लाना होगा। वरना खतरा यह है कि कांग्रेस हर बार पुराने चेहरे को देखकर पहाड़ की चढ़ाई शुरू तो कर दे, लेकिन चुनाव की चोटी तक पहुंचने से पहले ही फिर किसी पुराने मोड़ पर लौट आए। क्योंकि सवाल अब सिर्फ हरीश रावत के सियासी वजूद का नहीं है। ■

मेरी प्रसिद्धि के तुम ही कारण हो काका

पवन आगरी



हिंदी हास्य-व्यंग्य साहित्य की समृद्ध परंपरा में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त, देश-विदेश के काव्य मंचों पर अपनी विशिष्ट प्रस्तुतियों से पहचान बनाने वाले कवि पवन आगरी की साहित्यिक यात्रा गुरु-शिष्य परंपरा, रचनात्मक साधना और नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की प्रेरक कहानी है। उनकी पहचान के पीछे एक बेहद दिलचस्प प्रसंग जुड़ा है। हिंदी हास्य-व्यंग्य के शिखर पुरुष काका हाथरसी ने ही वर्ष 1991 में पवन अग्रवाल को पवन 'आगरी' नाम दिया था। काका जी से मिला यह साहित्यिक उपनाम आगे चलकर उनकी वैश्विक पहचान का आधार बना। काका हाथरसी से प्राप्त तुकांत कोश, उनके साथ पत्राचार और मंच साझा करने के अनुभव आज भी पवन आगरी की स्मृतियों में जीवंत हैं। 'युवक पत्रिका' से विशेष बातचीत में पवन आगरी ने अपने साहित्यिक जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं को साझा किया।

आपका मूल नाम पवन अग्रवाल था। फिर आप पवन 'आगरी' कैसे बने? इस नामकरण में काका हाथरसी जी की क्या भूमिका रही?

● यह मेरे जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। वर्ष 1991 में मैं काका हाथरसी जी से मिलने उनके निवास पर गया था। उन दिनों मैं छोटी-छोटी रचनाएँ पवन अग्रवाल के नाम से लिखता था। काका जी ने मेरी कुछ कविताएँ सुनीं और मुझे आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि यदि साहित्य की दुनिया में अपनी अलग पहचान बनानी है, तो कोई विशिष्ट उपनाम रखना चाहिए। पवन अग्रवाल नाम के हजारों लोग होंगे। मैंने उनसे निवेदन किया कि काका जी, आप ही मेरा कोई उपनाम रख दीजिए। तब उन्होंने कहा, 'मैं हाथरस से हूँ, इसलिए हाथरसी लिखता हूँ। तुम आगरा से हो, इसलिए अपने नाम के साथ आगरी लगा लो।'

काका हाथरसी जी से पहली मुलाकात में आपको नाम के अतिरिक्त क्या मार्गदर्शन मिला?

● काका जी से मिलने का मेरा उद्देश्य ही उनका मार्गदर्शन प्राप्त करना था। मैं उन्हें बहुत सुनता था और उनकी लोकप्रियता तथा साहित्यिक प्रतिभा से प्रभावित था। उन्होंने मेरी कविताएँ सुनीं और मुझे अपनी एक पुस्तक भेंट की। वह एक प्रकार की तुकांत कोश थी, जिसमें अनेक शब्दों के तुकांत दिए गए थे। उस पुस्तक से मुझे बहुत सहायता मिली। मैंने शब्दों के नए प्रयोग सीखे और अपनी रचनाओं में उन्हें अपनाया। मेरी कई रचनाओं में काका जी से प्राप्त इस मार्गदर्शन की छाप दिखाई देती है। काका जी से मेरा पत्राचार भी होता रहा। वर्ष 1995 में उनके निधन तक हमारा संपर्क बना रहा। उनके लिखे हुए पत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं। उनमें से कुछ पत्र मैंने सोशल मीडिया पर भी साझा किए हैं।

क्या आपको काका हाथरसी जी के साथ कभी किसी कवि सम्मेलन में मंच साझा करने का अवसर मिला?

● जी हाँ, यह मेरे लिए बहुत गर्व की बात रही कि मुझे राजस्थान के धौलपुर में काका हाथरसी जी के साथ एक ही मंच पर काव्यपाठ करने का अवसर मिला। जिस महान कवि को सुनकर मैं प्रेरित होता था, उनके साथ मंच साझा करना मेरे जीवन की अविस्मरणीय उपलब्धियों में से एक है। मैं आज भी हर वर्ष 18 सितंबर को उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनका जन्म 18 सितंबर 1906 को हुआ था और निधन भी 18 सितंबर 1995 को हुआ। यह संयोग भी अपने आप में विशेष है।

आपके साहित्यिक जीवन में पहला बड़ा अवसर कब आया?

● वर्ष 1995 मेरे साहित्यिक जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा। आगरा के सूरसदन में एक बड़ा साहित्यिक आयोजन हुआ था, जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध फिल्म गीतकार और दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित मजरूह सुल्तानपुरी साहब ने की थी। इस कार्यक्रम का संचालन प्रख्यात शायर वसीम बरेलवी साहब ने किया था। उस मंच पर मुझे एक युवा कवि के रूप में काव्यपाठ करने का अवसर मिला। मेरे लिए यह बहुत बड़ा अवसर था। उस आयोजन ने मुझे साहित्यिक जगत में आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया। इस आयोजन का आमंत्रण पत्र और उस समय अमर उजाला में प्रकाशित समाचार आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं। वे दस्तावेज मेरे साहित्यिक जीवन की महत्वपूर्ण स्मृतियाँ हैं।

आपकी चर्चित व्यंग्य रचना 'हिंदी के पुजारी' के पीछे क्या प्रेरणा रही?

मेरी यह रचना हिंदी भाषा और उसके सरोकारों पर केंद्रित है। आज हम देखते हैं कि लोग अंग्रेजी के शब्दों का अत्यधिक प्रयोग करते हैं और कई बार अपनी मातृभाषा तथा उसके साहित्य को भी ठीक से नहीं समझते। इसी प्रवृत्ति पर मैंने व्यंग्य करने का प्रयास किया। इस रचना में एक विद्यार्थी का प्रसंग है, जिसे हिंदी के महान कवियों की जीवनियाँ याद नहीं होतीं। वह परीक्षा में नकल करने के लिए अलग-अलग पर्चियाँ बनाकर अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों में छिपा लेता है। इसी प्रसंग के माध्यम से हास्य उत्पन्न होता है। मैंने उसमें कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, बिहारीलाल, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों के नामों का रोचक प्रयोग किया है। मेरी इस रचना को देश-विदेश के मंचों पर बहुत पसंद किया गया है। इसमें केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भाषा और शिक्षा व्यवस्था से जुड़ा संदेश भी है। इस रचना की लोकप्रियता मेरे लिए विशेष संतोष का विषय है। काका हाथरसी जी से मिली तुकांत कोश और उनके मार्गदर्शन ने भी मेरे रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

काका हाथरसी जी के समय और आज के हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलनों में आपको क्या अंतर दिखाई देता है?

● बहुत बड़ा अंतर आया है। आज कवि सम्मेलन काफी हद तक व्यावसायिक हो गए हैं। कॉमेडी शो के बढ़ते प्रभाव के कारण मंचों पर वनलाइनर और चुटकुलों का प्रचलन बढ़ा है। कुछ लोग चुटकुलों को ही कविता के रूप में प्रस्तुत करने लगे हैं। काका हाथरसी जी कुंडलियाँ लिखते थे। उनकी रचनाओं में छंद, भाषा, लय और साहित्यिक अनुशासन होता था। आज उस प्रकार के छंदबद्ध हास्य-व्यंग्य लेखन में कमी दिखाई देती है। मेरा मानना है कि हास्य साहित्य की अपनी गरिमा होनी चाहिए। हास्य और व्यंग्य केवल हँसाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की विसंगतियों पर सार्थक टिप्पणी करने की विधा भी है।

क्या आपको लगता है कि हिंदी साहित्य ने आपको आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप पहचान और सम्मान दिया?

● बिल्कुल। हिंदी साहित्य और हास्य-व्यंग्य की परंपरा से मुझे जितनी अपेक्षाएँ थीं, उससे मुझे भरपूर मिला है। मैं अपनी साहित्यिक यात्रा से बहुत संतुष्ट हूँ। देश-विदेश में मुझे अनेक मंचों पर काव्यपाठ करने के अवसर मिले और अनेक सम्मान प्राप्त हुए। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उसमें मेरे गुरु काका हाथरसी जी का बहुत बड़ा योगदान है। उनसे मिला मार्गदर्शन मेरे साहित्यिक जीवन की अमूल्य पूँजी है।

आपने नई पीढ़ी के कवियों को आगे बढ़ाने के लिए क्या प्रयास किए हैं?

● मेरा हमेशा प्रयास रहता है कि प्रतिभाशाली युवा रचनाकारों को बड़े मंचों पर अवसर मिले। इसी उद्देश्य से मैंने जीडी गोयनका समूह के सहयोग से आगरा में ताज साहित्य उत्सव की शुरुआत की। इस आयोजन में देशभर के नए और प्रतिभाशाली रचनाकारों को आमंत्रित किया जाता है, ताकि वे अपनी रचनाएँ बड़े मंच पर प्रस्तुत कर सकें। मेरा मानना है कि प्रतिभा को पहचानना और उसे अवसर देना बहुत आवश्यक है। काका हाथरसी जी ने मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी। उसी परंपरा को आगे बढ़ाना मैं अपना दायित्व मानता हूँ।

क्या आप किसी ऐसे युवा रचनाकार का उदाहरण देना चाहेंगे, जिसे आपके प्रयासों से आगे बढ़ने का अवसर मिला?

● ऐसे कई उदाहरण हैं। बुलंदशहर के युवा रचनाकार अमित कुमार यश को मैंने पहली बार गाजियाबाद के एक आयोजन में सुना था। उनकी रचनाएँ मुझे पसंद आईं और मैंने उन्हें एक बड़े मंच पर आमंत्रित किया। वहाँ लखनऊ दूरदर्शन के एक कार्यक्रम अधिकारी भी उपस्थित थे। उन्होंने अमित की बेटियों पर केंद्रित एक रचना सुनी और उसके बाद अमित को लखनऊ दूरदर्शन में प्रस्तुति का अवसर मिला। बाद में मैंने उन्हें दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के एक आयोजन में भी इस कार्यक्रम की संयोजिका सरिता जैन से आमंत्रित करवाया। इसी प्रकार आगरा के युवा शायर दीपांशु शर्मा 'शम्स' से मेरी मुलाकात हुई। वह चाट की ठेल लगाते थे। एक दिन उन्होंने मुझे पहचानकर मेरे पैर छुए और बताया कि वह शायरी लिखते हैं। जब मैंने उनके कुछ शेर सुने, तो उनकी प्रतिभा से प्रभावित हुआ। इसके बाद मैंने उन्हें अपने कई कार्यक्रमों में मंच दिया और अभिनेता राजपाल यादव के हाथों उनका सम्मान भी करवाया।

आपके साहित्यिक जीवन की कोई ऐसी इच्छा, जो आज भी अधूरी है?

● देश-विदेश में मुझे अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। लेकिन मेरी एक विशेष इच्छा आज भी है। मैं चाहता हूँ कि मुझे कभी काका हाथरसी सम्मान प्राप्त हो। उनके परिवार और संबंधित समिति द्वारा यह सम्मान प्रदान किया जाता है।

यदि आज काका हाथरसी जी आपके सामने होते, तो आप उनसे क्या कहते?

यदि काका जी आज होते, तो निश्चित रूप से मेरी साहित्यिक यात्रा देखकर प्रसन्न होते। वह स्वयं युवा प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का प्रयास करते थे। उन्होंने मेरे लिए भी यही किया। मैंने उनके निधन के बाद उन पर एक लेख लिखा था। उसमें मैंने अपनी भावनाएँ बहुत कम शब्दों में व्यक्त की थीं। 'मेरी प्रसिद्धि के तुम ही कारण थे, काका।' मेरे लिए यही शब्द सब कुछ कह देते हैं। ■

टेक्नोलॉजी की दुनिया में अमर हो गए स्टीव जॉब्स

अनन्या मिश्रा

एप्पल के सह-संस्थापक स्टीव जॉब्स का 05 अक्तूबर को कैंसर के कारण निधन हो गया था। उनके नेतृत्व में एप्पल ने टेक्नोलॉजी की दुनिया में एक नई क्रांति लाने का काम किया था। स्टीव जॉब्स की तकनीक में गहरी रुचि थी। आज ही के दिन यानी की 05 अक्तूबर को एप्पल के सह-संस्थापक स्टीव जॉब्स का निधन हो गया था। स्टीव जॉब्स के इनोवेशन और दूरदर्शिता की वजह से 'एप्पल' दुनिया की बेहतरीन कंपनियों में शामिल है। उनके नेतृत्व में एप्पल ने टेक्नोलॉजी की दुनिया में एक नई क्रांति लाने का काम किया था। स्टीव जॉब्स की तकनीक में गहरी रुचि थी। वहीं उन्होंने किशोरावस्था से ही कंप्यूटरों के साथ नए-नए प्रयोग करने शुरूकर दिए थे। तो आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर स्टीव जॉब्स के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...



जन्म और परिवार

कैलिफोर्निया के सैन फ्रांसिस्को में 24 फरवरी 1955 को स्टीव जॉब्स का जन्म हुआ था। जब वह छोटे थे, तो वह और उनके पिता इलेक्ट्रॉनिक सामानों पर काम किया करते थे। वह बचपन से ही तेज तर्रार और इनोवेटिव थिंकर थे। हाई स्कूल खत्म करने के बाद उन्होंने पोर्टलैंड के रीड कॉलेज में एडमिशन लिया। लेकिन उनका मन कॉलेज में नहीं लगा और उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया। इस दौरान उन्होंने डेढ़ साल क्रिएटिव क्लासेज को दिया। इस दौरान उनको टाइपोग्राफी से लगाव हो गया।

वीडियो गेम डिजाइनर

फिर साल 1974 में स्टीव जॉब्स ने वीडियो गेम डिजाइनर की नौकरी कर ली। लेकिन कुछ महीनों बाद ही उन्होंने यहां भी नौकरी छोड़ दी। इस बीच वह भारत घूमने आए और यहां पर उनको साइकीडेलिक अनुभव मिला। स्टीव जॉब्स को भारत में करीब 7 महीने तक रहे थे।

एप्पल की शुरूआत का आइडिया

हाईस्कूल करने के दौरान स्टीव की मुलाकात स्टीव वोजनिएक से हुई थी। बाद में दोनों ने मिलकर एप्पल कंपनी शुरू करने की सोची। दोनों की इलेक्ट्रॉनिक्स में गहरी दिलचस्पी थी, इस कारण दोनों की पार्टनरशिप भी काफी लंबी चली। फिर साल 1976 में दोनों ने मिलकर एक कंपनी की शुरूआत की, इस कंपनी का नाम 'एप्पल कंप्यूटर' रखा गया। वहीं इस कंपनी का पहला हेडक्वार्टर स्टीव जॉब्स का फैमिली गैराज था। इसके बाद स्टीव जॉब्स और वोजनिएक ने एप्पल के लिए शुरूआती फंडिग जुटाई। इस वेंचर को शुरू किए अधिक समय नहीं हुआ था, वहीं दोनों के जुनून ने टेक्नॉलजी इंडस्ट्री की किस्मत को ही बदल दिया। जॉब्स और वोजनिएक ने न सिर्फ टेक्नोलॉजी को डेमोक्रेटाइज किया बल्कि उनको सस्ती, छोटी और हर दिन के उपयोग के लिए भी तैयार किया। वोजनिएक ने यूजर फ्रेंडली पर्सनल कंप्यूटर्स की सीरीज के बारे में पहले ही सोच रखा था। ऐसे में वोजनिएक ने डिजाइन का हिस्सा और स्टीव ने मार्केटिंग का काम लिया। दोनों ने हर कंप्यूटर को शुरू में 666.66 डॉलर में बेचा। एप्पल के दूसरे मॉडल आने के बाद कंपनी की सेल्स 700% बढ़ गई। साल 1980 में एप्पल शेयर मार्केट में लिस्ट हुई और एक पब्लिक कंपनी बन गई।

आईबीएम से मिली टक्कर

बाद में स्टीव जॉब्स ने पेप्सी कोला के मार्केटिंग एक्सपर्ट डॉन स्कूले को एप्पल का सीईओ बनने का ऑफर दिया। लेकिन इसके बाद एप्पल के अगले कुछ प्रोडक्ट्स को कुछ खामियों की वजह से काफी ज्यादा निगेटिव फीडबैक मिलने लगे। इस दौरान आईबीएम ने एप्पल को पीछे करते हुए पर्सनल कम्प्यूटर के सेगमेंट में अपना दबदबा बनाया। फिर साल 1984 में एप्पल ने मैकिंटोश रिलीज किया, जोकि देखने में और काम करने में एक नंबर था। लेकिन इसके बाद भी एप्पल मैकिंटोश आईबीएम के सामने टिक नहीं पाई। जिसका असर स्टीव जॉब्स की पोजिशन पर हुआ और कंपनी में उनको साइडलाइन कर दिया गया। ऐसे में साल 1985 में स्टीव ने एप्पल से इस्तीफा दे दिया।

एप्पल में वापसी

एप्पल छोड़ने के बाद स्टीव ने नेक्स्ट नाम की एक हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर कंपनी की शुरूआत की। जिस एप्पल से स्टीव ने इस्तीफा दिया था, साल 1996 में उसने ही नेक्स्ट को 429 मिलियन डॉलर में खरीद लिया। ऐसे में साल 1997 में एक बार फिर स्टीव एप्पल में एक नए मैनेजमेंट के साथ लौटे। वहीं स्टीव के वापस आते ही एक बार फिर एप्पल कंपनी दौड़ने लगे। आईमैक पर लोगों का काफी पॉजिटिव रिस्पॉन्स मिला। आने वाले सालों में एप्पल ने आईपॉड, मैकबुक एयर और आईफोन जैसे कई शानदार प्रोडक्ट रेंज में ऑफर किए। हालांकि कॉम्पिटिटर्स वैसे ही टेक्नोलॉजी के लिए खूब मेहनत कर रहे थे, लेकिन नतीजा नहीं निकाल सके। ऐसे में एप्पल आने वाले दिनों में टेक्नोलॉजी का चेहरा बन गई। हालांकि एप्पल सफलता की सीढ़ियां चढ़ रही थी, लेकिन धीरे-धीरे स्टीव की जिंदगी के दिन कम होते जा रहे थे। वहीं 05 अक्तूबर 2011 को कैंसर की वजह से 56 साल की उम्र में स्टीव जॉब्स का निधन हो गया था। ■

मशीनरी से बीमा तक

क्या जीएसटी 2.0 में बदलेगी कारोबार की तस्वीर?



आकाश त्रिपाठी

व्यापार को आसान बनाने के लिए जीएसटी काउंसिल आगामी बैठक में जीएसटी 2.0 सुधारों पर विचार करेगी। इन प्रस्तावों में गिरफ्तारी नियमों में राहत, ई-वे बिल का सरलीकरण और फंसा इनपुट टैक्स क्रेडिट जारी करना शामिल है। साथ ही, 10,000 रुपये से कम के मामलों में नोटिस न भेजने और रिफंड प्रक्रिया को ऑटोमेटेड बनाने की तैयारी है।

देश में व्यापार को आसान बनाने और टैक्सपेयर्स की सहूलियत के लिए सरकार जीएसटी 2.0 में बदलाव की तैयारी कर रही है। 8 अक्टूबर को होने वाली जीएसटी काउंसिल की बैठक में ई-वे बिल के नियमों को ढीला करने, गिरफ्तारी के डर को खत्म करने और सालों से फंसे हजारों करोड़ रुपये के इनपुट टैक्स क्रेडिट को जारी करने जैसे बड़े बड़े प्रस्तावों पर मुहर लग सकती है। जीएसटी काउंसिल बुधवार को होने वाली अपनी बैठक में कई ऐसे प्रस्तावों पर विचार करेगी, जिनमें ई-वे बिल की ज़रूरतों से जुड़े नियमों को आसान बनाना और जीएसटी कानून के तहत गिरफ़्तार करने की शक्तियों को हटाना शामिल है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों ने ईटी को बताया कि ये प्रस्ताव टैक्सपेयर से जुड़े सभी पहलुओं – जैसे रजिस्ट्रेशन, रिटर्न और रिफ़ंड से लेकर इनपुट टैक्स क्रेडिट और कानूनी विवाद – को कवर करते हैं। ये प्रस्ताव ज़्यादा कागज़ी कार्रवाई वाले अनुपालन से हटकर ऑटोमेटेड, डेटा-आधारित और जोखिम-आधारित प्रशासन की ओर बढ़ने का संकेत देते हैं।

क्या अहम बदलाव?: अगर जीएसटी काउंसिल इस प्रस्ताव को मंजूरी दे देती है, तो गिरफ्तारी का फैसला अफसरों के हाथ में रहने के बजाय अदालत के अधीन हो जाएगा। वहीं, आपराधिक केस सिर्फ उन्हीं मामलों में दर्ज होंगे जो गंभीर और जानबूझकर की गई टैक्स चोरी से जुड़े होंगे। सबसे मुख्य प्रस्ताव इनपुट टैक्स क्रेडिट को आसान बनाने से जुड़ा है। इससे कंपनियों की फंसी हुई पूंजी छूटेगी और उद्योग जगत को एक अप्रत्यक्ष बढ़ावा मिलेगा। प्रस्तावों में कई ऐसे व्यापारिक इनपुट्स पर भी क्रेडिट देने की बात कही गई है जो अब तक ब्लॉक रोककर रखे गए थे।

कारोबार में आसानी: पिछले सितंबर में जीएसटी दरों के व्यापक युक्तिकरण के साथ इस बड़े सुधार की शुरुआत हुई थी, जिसने कारोबारियों और जीएसटी प्रणाली के बीच के तालमेल को पूरी तरह बदल दिया। इस कड़ी में सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव इनपुट टैक्स क्रेडिट को आसान बनाने का है, जिससे कंपनियों की फंसी हुई पूंजी मुक्त होगी और उद्योग जगत को एक अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन मिलेगा। जीएसटी काउंसिल प्लांट, मशीनरी और इनपुट सेवाओं पर चुकाए गए टैक्स को 5 वर्षों में मासिक किस्तों के रूप में वापस (रिफंड) करने पर विचार करेगी। वर्तमान में कंपनियां आईटीसी के तहत इस पूरी रकम की भरपाई नहीं कर पाती थीं। पहले जिन व्यावसायिक इनपुट पर क्रेडिट ब्लॉक था, अब उसका दायरा बढ़ाने का प्रस्ताव है।

इनमें शामिल हैं: कर्मचारियों का स्वास्थ्य और जीवन बीमा। आउटडोर कैटरिंग। दूरसंचार (टेलीकॉम) टावर और कारखानों के बाहर बिछाई गई पाइपलाइन। नष्ट किए जाने वाले एक्सपायर्ड उत्पाद और कुछ मुफ्त नमूने, 13 सीटों तक के वाहन, उनका बीमा, रखरखाव और वाहनों की लीजिंग या हायरिंग। 5% टैक्स स्लैब में आने वाले कई उत्पाद (जैसे खाद्य पदार्थ, फार्मा, कपड़ा और इलेक्ट्रिक वाहन) इनवर्टेड ड्यूटी स्ट्रक्चर (कच्चे माल पर ज्यादा टैक्स और तैयार माल पर कम टैक्स) का सामना कर रहे हैं। इसके कारण हजारों करोड़ रुपये का आईटीसी अटका हुआ है। इस पूंजी के जारी होने से उद्योग इसे फिर से पूंजीगत व्यय के रूप में निवेश कर सकेंगे। टेलीकॉम टावरों और पाइपलाइनों पर क्रेडिट मिलने से दूरसंचार, रिफाइनिंग, पेट्रोकेमिकल, उर्वरक, गैस वितरण और बुनियादी ढांचा (इन्फ्रास्ट्रक्चर) क्षेत्रों के भारी खर्च में बड़ी राहत मिलेगी। पहले यदि कोई सप्लायर टैक्स जमा नहीं करता था, तो उसका खामियाजा वास्तविक खरीदार को अपना क्रेडिट गंवाकर भुगतना पड़ता था। यह जीएसटी में विवादों का सबसे बड़ा कारण रहा है। अब यदि सौदा वैध है, तो खरीदार को आईटीसी रखने की अनुमति दी जाएगी और टैक्स वसूली सीधे डिफॉल्ट करने वाले सप्लायर से की जाएगी। चूंकि अब इनवॉइस-टू-इनवॉइस मिलान से खरीदार और विक्रेता का डेटा जुड़ा हुआ है, इसलिए सिस्टम फर्जी या बेमेल क्रेडिट को उसके स्रोत पर ही पकड़ सकता है। अब टैक्सपेयर्स को अधिकारियों द्वारा मैन्युअल जांच के लिए अलग से दस्तावेज अपलोड करने की आवश्यकता नहीं होगी। कस्टम्स, आरबीआई के एक्सपोर्ट मॉनिटरिंग सिस्टम और अन्य सरकारी प्रणालियों पर पहले से उपलब्ध डेटा को सीधे रिफंड प्रक्रिया में शामिल कर लिया जाएगा।

सेक्टर के लिए राहत: आईटी/आईटीज सेक्टर को बड़ी राहत मिल सकती है; काउंसिल विदेशी ब्रांच ऑफिस को की गई सप्लाई को एक्सपोर्ट मानने पर विचार करेगी, जिससे ऐसे ट्रांज़ैक्शन आईटीसी के लिए योग्य हो जाएंगे। विदेशी खरीदारों को बेचे गए लेकिन यहीं किसी स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन में डिलीवर किए गए सामान को भी एक्सपोर्ट माना जा सकता है, अगर पेमेंट विदेशी मुद्रा में किया जाए। जीसटी नियमों को एक्सपोर्ट के पेमेंट मिलने से जुड़े आरबीआई के नियमों के साथ भी मिलाने का प्रस्ताव है। प्रस्तावित सुधारों का मकसद कम वैल्यू वाले मामलों में कंप्लायंस और कानूनी विवाद को कम करना भी है। सूत्रों ने बताया कि 10,000 से कम रकम वाले मामलों में कोई 'शो-कॉज़ नोटिस' जारी नहीं किया जाएगा और यह बदलाव पेंडिंग मामलों पर भी लागू होगा। उन्होंने बताया कि रिटर्न में अंतर के कारण हर साल लगभग 95,000 नोटिस जारी होते हैं, जबकि ऐसे नोटिस से होने वाली रिकवरी कुल रकम का सिर्फ़ 0.08% होती है। ?5 करोड़ तक के टर्नओवर वाले और सिर्फ़ अनरजिस्टर्ड ग्राहकों को सप्लाई करने वाले छोटे बिज़नेस को सालाना रिटर्न फाइल करने और तिमाही टैक्स पेमेंट करने की इजाज़त दी जा सकती है। रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को आसान बनाने का प्रस्ताव है, जिसके तहत ऑटोमेटेड रूट के लिए योग्य आवेदकों का रजिस्ट्रेशन तीन वर्किंग दिनों के भीतर हो जाएगा; इस प्रक्रिया में पहले से ही 61% रजिस्ट्रेशन शामिल हैं। ■



आरबीआई ने ऐसा क्या बदला, होम लोन-कार लोन की ईएमआई बढ़ने वाली है?

आरबीआई ने महंगाई को देखते हुए रेपो रेट 0.25 प्रतिशत बढ़ाकर 5.50 प्रतिशत कर दिया है। इससे होम, कार और पर्सनल लोन महंगे होने से ईएमआई या लोन की अवधि बढ़ जाएगी। हालांकि, बैंक में फिक्स्ड डिपॉजिट करने वाले ग्राहकों को बढ़ी हुई ब्याज दरों का लाभ मिलेगा।

अभिनय आकाश

एक फैसला, एक प्रेस कॉन्फ्रेंस और करोड़ों भारतीयों की ईएमआई का गणित रातों-रात बिगड़ गया! अगर आपने घर, कार या पर्सनल लोन ले रखा है, तो आपकी बैंक किश्त अब और महंगी होने वाली है। रिजर्व बैंक यानी आरबीआई का एक फैसला। आरबीआई की मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी ने रेपो रेट 0.25% बढ़ाकर 5.50% कर दिया है। अब आप कहेंगे कि ये रेपो रेट और एमपीसी क्या बला है, हमारा इससे क्या लेना-देना? लेना-देना सीधा आपकी गाढ़ी कमाई से है। और लोग कहते हैं महंगाई सरकार बढ़ाती है। अक्सर हम और आप महंगाई का ठीकरा सरकारों पर फोड़ते हैं, लेकिन पर्दे के पीछे ब्याज दरों का रिमोट कंट्रोल किसके हाथ में होता है? एमपीसी क्या है और इसका सीधा असर आपके बैंक बैलेंस पर कैसे पड़ता है? चलिए, इस भारी-भरकम इकॉनमी का आज एमआरआई स्कैन करते हैं।

इसे भी समझ लीजिए। यह वो रेट यानी दर होती है जिस पर रिजर्व बैंक दूसरे बैंकों को कर्ज देता है। मतलब यह हुआ कि जैसे ही आरबीआई दूसरे बैंकों को महंगे इंटरेस्ट रेट पर कर्ज देती है। दूसरे बैंक भी कस्टमर को मिलने वाले लोन पर ब्याज बढ़ा देते हैं। अगर रेपो रेट आरबीआई कम कर दे तो बैंक से मिलने वाला लोन सस्ता हो जाता है। इंटरेस्ट रेट कम हो जाता है। किस तरह के लोन होंगे इनमें? होम लोन, कार लोन और पर्सनल लोन। इसे ऐसे समझिए कि एक बड़ा साहूकार है जिससे छोटे-छोटे साहूकार पैसा उठाते हैं और लोगों को कर्ज देते हैं। ब्याज। तो अगर बड़ा साहूकार छोटे साहूकारों से ब्याज ज्यादा लेता है तो छोटा साहूकार भी लोगों से ब्याज ज्यादा लेने लगेगा क्योंकि उसको भी तो अपना घर चलाना है। वो क्यों नुकसान सा है भला? तो अब इसी रेपो रेट को बड़े साहूकार यानी आरबीआई ने बढ़ा दिया है। 25 बेसिस पॉइंट की बढ़ोतरी की गई है। तो रेपो रेट 5.50% हो गया। आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कह दिया कि यह फैसला महंगाई के बदलते हालात को देखते हुए लिया गया। मल्होत्रा ने कहा कि महंगाई और उसके हालात अब उतने सामान्य नहीं है जितने पिछले साल थे। रेपो रेट बढ़ा है इसलिए आपके लोन की ईएमआई की राशि भी बढ़ जाएगी। अगर ईएमआई बढ़ाना नहीं चाहते हैं तो टेन्योर बढ़ जाएगा। यानी जो लोन 2 साल में खत्म होने वाला था वह अब 2 साल से ज्यादा वक्त में खत्म होगा। आम आदमी की जेब अब और भी खाली ज्यादा होने वाली है। इस बुरी खबर के बीच एक छोटी सी अच्छी खबर भी है। वो यह कि बैंक डिपॉजिट और फिक्स्ड डिपॉजिट यानी एफडी पर मिलने वाले ब्याज में भी बढ़ोतरी होगी। यानी अगर आपने एफडी किया है या करने वाले हैं तो उस पर मिलने वाला इंटरेस्ट अब पहले के मुकाबले ज्यादा होगा। मतलब यह हुआ कि आपका फायदा होने वाला है। लेकिन इसमें किंतु परंतु वाली स्थिति भी है।

सोमेरियन सभ्यता जो आज के इराक वाले इलाके के आसपास पड़ती है। उस दौर में पैसा या करेंसी नाम की कोई चीज ही नहीं थी। तो सोचिए जब पैसा ही नहीं था तो लोन किस चीज का दिया जाता? लोन दिया जाता था अनाज का, बीज का और मवेशियों का। मान लीजिए एक सुमेरियन किसान है। बुवाई का मौसम आ गया लेकिन उसके पास बोने के लिए बीज ही नहीं है। फसल कटने में अभी 6 महीने बाकी हैं।

डिपॉजिट के लिए कंपटीशन कितना है मार्केट में? और आने वाले वक्त में इंटरेस्ट रेट कैसा हो सकता है यानी बढ़ेगा या घटेगा इसकी उम्मीद कितनी है? हालांकि अगर बैंक धीरे-धीरे डिपॉजिट रेट बढ़ाते हैं तो एफडी करने वालों को फायदा हो सकता है। इसे एक उदाहरण से समझ लीजिए। अगर कोई बैंक एक साल की एफडी की दर 6% देता है तो कस्टमर को हर साल 600 ब्याज मिलेगा। अब इस 6% को बढ़ाकर 6.25% कर दिया जाता है तो कस्टमर को 62500 का ब्याज मिलेगा। यानी हर साल 2500 ज्यादा। असली फायदा इस बात पर निर्भर करता है कि क्या बैंक 25 बीपीएस की पूरी बढ़ोतरी का फायदा डिपॉजिटर को देते हैं और क्या डिपॉजिटर नई एफडी में निवेश कर रहा है या मौजूदा में।

पहला लोन किसने लिया?

साल 1950 न्यूयॉर्क का एक बेहद आलीशान रेस्टोरेंट था। अमेरिका के एक जानेमाने बिजनेसमैन फ्रैंक मैकनारा अपने दोस्तों के साथ डिनर खत्म कर चुके थे। हंसीज़ाक का माहौल था। बातें चल रही थी। तभी वेटर आता है और टेबल पर बिल रख जाता है। फ्रैंक बहुत शान से अपनी सूट की जेब में हाथ डालते हैं। लेकिन अगले ही पल उनके चेहरे की हवाइयां उड़ जाती हैं। जेब खाली था। वॉलेट घर पर ही छूट गया था और पास में 1 का भी कैश नहीं था। अब सोचिए न्यूयॉर्क के इतने बड़े बिजनेसमैन के पास वेटर के सामने बिल चुकाने के पैसे नहीं है। कोई रास्ता ना देखकर मजबूरन उन्हें अपनी पत्नी को फोन करना पड़ा। उनकी पत्नी घर से पैसे लेकर रेस्टोरेंट पहुंची। फिर बिल चुकाया गया। तब जाकर फ्रैंक की जान में जान आया। उस रात फ्रैंक मैकन मारा को इतनी भयंकर शर्मिंदगीगी महसूस हुई कि उन्होंने कसम खाई कि दोबारा कभी ऐसी स्थिति में नहीं फसूंगा। तभी उनके मन में ख्याल भी आया। क्या कोई ऐसा तरीका नहीं हो सकता कि मैं बिना कैश लिए रेस्टोरेंट जाऊं। एक कार्ड दिखाऊं, खाना खाऊं और महीने के अंत में एक साथ सारा भुगतान कर दूं। और यह सारी कहानी मैंने आपको क्यों बताई? क्योंकि इसी एक शर्मिंदा करने वाली घटना से जन्म हुआ था डायनर्स क्लब का दुनिया के पहले आधुनिक क्रेडिट कार्ड का। सोमेरियन सभ्यता जो आज के इराक वाले इलाके के आसपास पड़ती है। उस दौर में पैसा या करेंसी नाम की कोई चीज ही नहीं थी। तो सोचिए जब पैसा ही नहीं था तो लोन किस चीज का दिया जाता? लोन दिया जाता था अनाज का, बीज का और मवेशियों का। मान लीजिए एक सुमेरियन किसान है। बुवाई का मौसम आ गया लेकिन उसके पास बोने के लिए बीज ही नहीं है। फसल कटने में अभी 6 महीने बाकी हैं। और इस बीज परिवार का पेट भी पालना है। वो जाता था शहर के मुख्य मंदिर के पास या फिर राजा के महल के पास। वहां वो पुजारी या फिर अधिकारी से 10 बोरी जौ उधार मांगता। वो दे भी देते। लेकिन उनकी एक शर्त होती थी कि जब 6 महीने बाद फसल कटेगी तो किसान को 10 बोरी के बदले 13 बोरी जौ वापस लौटानी होगी। और यही जो तीन अतिरिक्त बोरियां थी यहीं जन्म हुआ इंटरेस्ट यानी ब्याज का। सुमेरियन भाषा में ब्याज को कहा जाता था मैश जिसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटा बच्चा। यानी जैसे एक गाय एक बछड़े को जन्म देती है वैसे ही अनाज के लोन से ब्याज रूपी बच्चा पैदा होता है। अब सबसे दिलचस्प बात इस लेनदेन का हिसाब भी रखा जाता था। तब कागज तो था नहीं इसलिए वे क्ले टेबलेट्स यानी गीली मिट्टी की पट्टिकाएं लेते थे। उस पर यूनिफार्म लिपि में लिखा जाता था।

चाणक्य का अर्थशास्त्र

अगर हम भारत की बात करें तो भारत में भी कर्ज की व्यवस्था उतनी ही पुरानी और विकसित थी और ईसा पूर्व चौथी सदी में जब आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र लिखा तो उन्होंने भारत के वित्तीय नियमों को इतनी विस्तार से लिखा कि आज का आरबीआई भी हैरान रह जाए। चाणक्य ने अर्थशास्त्र में लिखा था कि आम व्यापारिक कर्ज पर ब्याज 15% प्रतिवर्ष होगी। लेकिन जो व्यापारी समुद्री रास्तों या खतरनाक जंगलों से होकर व्यापार करने जाते थे जोखिम ज्यादा होने के कारण उनसे 60% तक ब्याज लिया जा सकता था। भारत में डेप्ट एंड डिपॉजिट यानी ऋण और दान के पूरे कानून मौजूद थे। जहां ये तक तय था कि किस स्थिति में कर्ड चुकाना होगा और किस स्थित में नहीं। ■



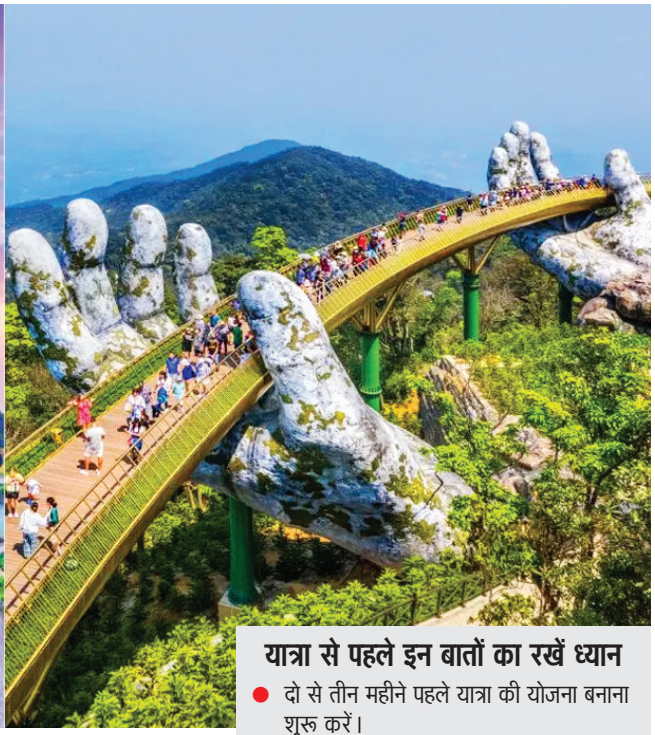

सोलो ट्रिप का है प्लान?

कम बजट में घूमें एशिया के ये 3 देश

सपना भारद्वाज

पहली बार अकेले विदेश यात्रा की योजना बना रहे लोगों के लिए एशिया के कई देश अच्छे विकल्प हो सकते हैं। थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम में खूबसूरत बीच, स्थानीय बाजार, विविध संस्कृति और स्वादिष्ट खानपान का अनुभव लिया जा सकता है। सही योजना और किफायती ठहरने के विकल्पों के साथ यात्रा का खर्च भी सीमित रखा जा सकता है। सोलो ट्रिप की सबसे बड़ी खूबी अपनी पसंद के अनुसार सफर तय करने की आजादी है। कहां जाना है, कितनी देर रुकना है और क्या खाना है—इन सभी फैसलों में अपनी रुचि को प्राथमिकता दी जा सकती है। हालांकि, पहली सोलो इंटरनेशनल ट्रिप के लिए ऐसी जगह चुनना बेहतर होता है, जहां ठहरने और स्थानीय परिवहन के विकल्प आसानी से उपलब्ध हों। इस लिहाज से मलेशिया, थाईलैंड और वियतनाम पर विचार किया जा सकता है।

मलेशिया: शहर की रौनक के साथ प्रकृति का आनंद- शहरों की चहल-पहल, शॉपिंग, स्थानीय खानपान और प्राकृतिक खूबसूरती में रुचि रखने वालों के लिए मलेशिया आकर्षक विकल्प हो सकता है। राजधानी कुआलालंपुर में घूमने, बाजारों को देखने और स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेने के कई अवसर मिलते हैं। यात्रा का खर्च नियंत्रित रखने के लिए बस और ट्रेन जैसे सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल किया जा सकता है। ठहरने के लिए बजट होटल और हॉस्टल के विकल्पों की तुलना करना भी उपयोगी रहेगा। उपलब्ध समय और बजट के अनुसार शहर के आसपास की जगहों को यात्रा में शामिल किया जा सकता है।

थाईलैंड: बीच, बाजार और स्ट्रीट फूड का मेल- बीच, शॉपिंग और स्ट्रीट फूड पसंद करने वाले यात्रियों के लिए थाईलैंड लोकप्रिय विकल्प है। बैंकॉक के स्थानीय बाजारों और विभिन्न दर्शनीय स्थलों को घूमने के साथ यहां के खानपान का अनुभव लिया जा सकता है। समुद्र तटों की सैर के लिए फुकेट या पटाया को यात्रा की योजना में शामिल किया जा सकता है। कम बजट में सफर करने के लिए महंगे होटलों की जगह किफायती होटल या हॉस्टल चुने जा सकते हैं। हालांकि, कई शहरों और द्वीपों को एक ही यात्रा में शामिल करने से परिवहन का खर्च बढ़ सकता है, इसलिए ठहराव सोच-समझकर तय करना बेहतर होगा।

वियतनाम: समुद्र तटों, पहाड़ों, स्थानीय बाजारों और सांस्कृतिक विविधता का अनुभव लिया जा सकता है। हनोई, दा नांग और होई आन जैसी जगहें अलग-अलग तरह के आकर्षण पेश करती हैं। स्थानीय खानपान और रोजमर्रा की जीवनशैली को करीब से समझने में रुचि रखने वाले यात्रियों के लिए भी यह देश खास हो सकता है। एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए ट्रेन, बस और घरेलू उड़ानों के विकल्प देखे जा सकते हैं। यात्रा का खर्च चुने गए शहरों, मौसम, ठहरने की व्यवस्था और परिवहन पर निर्भर करेगा। इसलिए कम समय की यात्रा में सीमित स्थानों को शामिल करना अधिक सुविधाजनक हो सकता है। ■

यात्रा से पहले इन बातों का रखें ध्यान

- दो से तीन महीने पहले यात्रा की योजना बनाना शुरू करें।
- फ्लाइट और ठहरने के विकल्पों की कीमतों की तुलना करें।
- आवास, भोजन, परिवहन और घूमने का खर्च जोड़कर कुल बजट तय करें।
- होटल या हॉस्टल की लोकेशन और यात्रियों की समीक्षाएं जांचें।
- स्थानीय परिवहन और एयरपोर्ट से होटल पहुंचने के विकल्प समझ लें।
- पासपोर्ट, टिकट, बुकिंग और जरूरी दस्तावेजों की डिजिटल व प्रिंट कॉपी रखें।
- यात्रा से पहले संबंधित देश के नवीनतम वीजा और प्रवेश नियम आधिकारिक स्रोतों से जांचें।
- यात्रा कार्यक्रम और ठहरने की जानकारी किसी भरोसेमंद व्यक्ति के साथ साझा करें।

कद्दू का स्वाद होगा बेमिसाल! ट्राई करें ये आसान रेसिपीज

कद्दू की एक जैसी सब्जी खाकर बोर हो चुके हैं, तो इससे कई स्वादिष्ट और पौष्टिक व्यंजन बनाए जा सकते हैं। आप कद्दू से हेल्दी सूप, चीला और रोस्टेड स्नैक्स के साथ-साथ स्वादिष्ट हलवा और खीर भी तैयार कर सकते हैं। यह रेसिपीज सेहत को फायदा पहुंचाने के साथ रोज के स्वाद में बदलाव लाती हैं।



क्या आपके घर में भी कद्दू ज्यादा आ गया है और बार-बार आप एक ही तरह की सब्जी खाकर बोर हो चुके हैं। तो आप कद्दू की नई डिश ट्राई कर सकती हैं। आप कद्दू से मीठे से लेकर नमकीन तक कई तरह की स्वादिष्ट रेसिपीज बना सकती हैं। वहीं खास बात यह है कि इनमें से कुछ डिश ऐसी भी हैं, जिनको देखकर और खाकर आपको ऐसा नहीं लगेगा कि यह कद्दू से बनी हैं। कद्दू में मौजूद पोषक तत्व स्वाद के अलावा सेहत के लिए अच्छे होते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कद्दू से बनने वाली 5 स्वादिष्ट रेसिपीज के बारे में बताने जा रहे हैं।

कद्दू का सूप

अगर आप भी कुछ हेल्दी और हल्का खाना चाहती हैं, तो कद्दू का सूप एक अच्छा ऑप्शन है। इसके लिए कद्दू को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर हल्का रोस्ट कर लें। फिर इसको ब्लेंड करें और एक प्यूर स्मूदी बनाकर तैयार करें। अब पैन में थोड़ा मक्खन गर्म करें और अदरक और लहसुन भूनें। अब इसमें कद्दू की प्यूरी डालकर नमक, काली मिर्च और जरूरत के हिसाब से पानी या वेजिटेबल मिलाएं। कुछ मिनट धीमी आंच पकाएं और ऊपर से क्रीम, फ्रेश धनिया या भुने हुए कद्दू के बीच डालकर सर्व करें।

कद्दू का हलवा

अगर आप भी मीठा खाने के शौकीन हैं, तो आप स्वादिष्ट कद्दू का हलवा बना सकती हैं। इसको बनाने के लिए कद्दू को छीलकर कद्दूकस करें। अब इसका हल्का पानी निचोड़ लें और कड़ाही में घी गर्म करें और कद्दू को अच्छे से भूनें, जिससे इसका कच्चापन खत्म हो जाएगा। फिर दूध और चीनी डालकर इसको धीमी आंच पर पकाएं। जब दूध सूखने लगे और हलवा गाढ़ा होने लगे, तो इसमें काजू, बादाम, इलायची पाउडर और किशमिश डालें। ऊपर से घी डालकर सर्व करें।

कद्दू के चीले

अगर आपको नाश्ते में कुछ ट्राई करना है, तो कद्दू के चीले बनाएं। इसको बनाने के लिए कद्दू को कद्दूकस करके बेसन में मिलाएं और फिर बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया, नमक, अजवाइन और अपने पसंदीदा मसाले डालकर मिक्स करें। इसको न ज्यादा पतला रखें और न ज्यादा गाढ़ा बैटर बनाएं। अब तवा को गर्म करके पूरे तवे पर तेल लगाकर बैटर लगाएं और दोनों तरफ से इसको सुनहरा होने तक भूनें। इसको हरी चटनी, टमाटर की चटनी या दही के साथ सर्व करें।

कद्दू की खीर

कद्दू से बनने वाली खीर स्वाद में सामान्य खीर से थोड़ी डिफरेंट होती है। कद्दू की खीर बनाने के लिए कद्दू को कद्दूकस कर लें। फिर इसको हल्का सा उबाल कर घी में भूनें। अब दूध में डालकर इसको मीडियम फ्लेम पर पकाएं। जब यह अच्छे से नरम हो जाए और दूध गाढ़ा होने लगे, तब इसमें चीनी को मिलाएं। अब इसमें काजू, बादाम, पिस्ता, केसर और इलायची डालें। कुछ देर पकाने के बाद गैस बंद कर दें। आप चाहें तो इसको गरमा-गरम सर्व करें या फिर ठंडा होने पर सर्व करें।

रोस्टेड कद्दू

आप कद्दू को हेल्दी स्नैक्स के रूप में भी इस्तेमाल कर सकती है। इसके लिए कद्दू को छीलकर इसको छोटे और बराबर टुकड़ों में काट लें। फिर थोड़ा सा जैतून का तेल, काली मिर्च, नमक, चिली फ्लेक्स और अपनी पसंद के हर्ब्स डालकर अच्छे से मिक्स करें। अब इसको ओवन या एयर फ्रायर में तब तक रोस्ट करें, जब तक कि इसके किनारे हल्के क्रिस्पी और सुनहरे न हो जाएं। इसको शाम के स्नैक के रूप में लंच या डिनर के रूप में साइड डिश की तरह परोस सकते हैं। ■

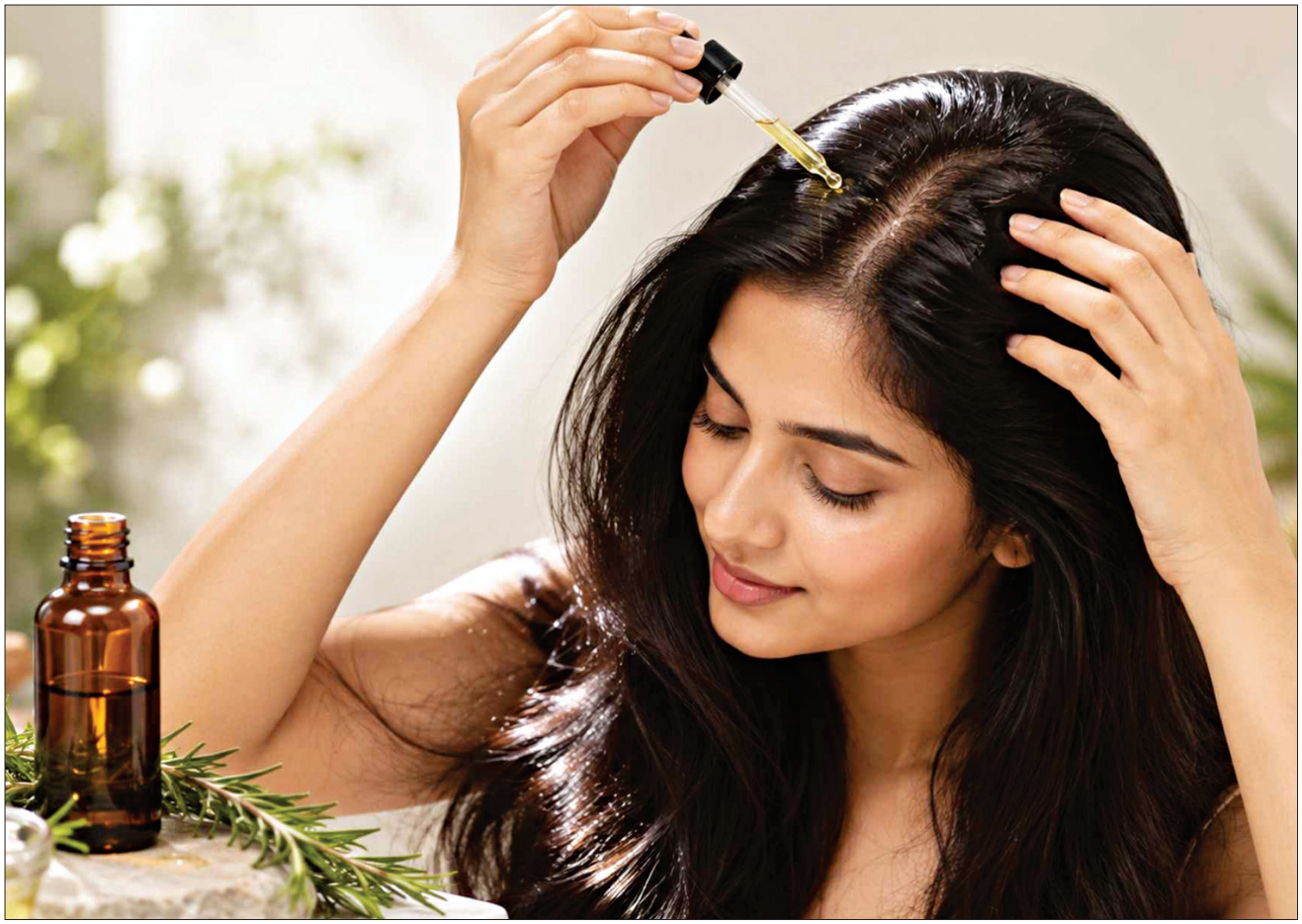

हेयर ग्रोथ के लिए कौन सा तेल बेहतर

नीतू शर्मा

शोध के अनुसार नारियल का तेल रूखे बालों और जुओं की समस्या में असरदार है, जबकि अरंडी का तेल बालों को नमी देकर टूटने से बचाता है। हालांकि, इन दोनों तेलों से बालों के विकास यानी हेयर ग्रोथ होने के ठोस वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिले हैं। भारत में नारियल और अरंडी के तेल का सदियों से इस्तेमाल हो रहा है। इसके काफी फायदे देखने को मिलेंगे। बाजार में मिलने वाले ये दोनों ही हेयर ऑयल आज के समय में लोकप्रिय भी है। ऐसे में कई बार लोग पूछते हैं कि क्या बाजार में मिलने वाले इन तेलों का इस्तेमाल करना चाहिए। आइए आपको बताते क्या कहती है रिसर्च। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के अनुसार, इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या ये तेल सच में बालों की ग्रोथ और मजबूती में मदद करता है। 22 आर्टिकल्स के आधार पर यह पता चला है कि नारियल का तेल रूखे और टूटे वाले बालों और सिर के जुओं के इलाज में असरदार है। लेकिन हेयर ग्रोथ पर इसके असर के सीमित सबूत ही मिले। अरंडी के तेल से बालों में चमक बढ़ने के कुछ कमजोर सबूत देखने को मिले हैं, हालांकि हेयर ग्रोथ या इंफेस्टेशन के इलाज के लिए इसका कोई मजबूत वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

अरंडी के तेल के फायदे?

- अरंडी के तेल में रिसिनोलिक एसिड होता है, जो कि उच्च मात्रा में बालों के हाइड्रेशन को लॉक करती है और पानी की कमी को रोकती है।
- इस तेल को लगाने से बालों का लचीलापन बढ़ता है और घर्षण को कम करता है, जिससे बालों का टूटना कम होता है।
- अरंडी के तेल में एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटीमाइक्रोबियल गुण होते हैं, जो कि हल्की खुजली और जलन को कम करते हैं।
- यह तेल बालों की क्यूटिकल्स को स्मूद करता है, जिससे बालों में प्राकृतिक चमक आती है।

नारियल के तेल के फायदे

- नारियल के तेल में प्रचुर मात्रा में लॉरिक एसिड पाया जाता है। ऑयल बालों की जड़ों के अंदर तक जाता है और रोज होने वाले डैमेज से बचाता है।
- अगर आप नारियल तेल बालों में लगाते हैं, तो नहाते समय बाल कम टूटते हैं और सिल्की लगते हैं।
- नारियल के तेल में एंटीमाइक्रोबियल और एंटीफंगल गुण पाए जाते हैं, जो कि स्कैल्प को ड्राई होने से बचाता है और फंगल समस्याओं को कंट्रोल करता है।
- वैसे इस तेल के लगाने से बाल स्मूद हो जाते हैं। इसके साथ ही उलझते कम है और बाल भी चमकदार बन जाते हैं। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

सिनेमा और समाज सेवा का अनूठा संगम थे नाना पाटेकर

नाना पाटेकर का जन्म महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के मुरुड जंजीरा में हुआ था। उनका बचपन बेहद संघर्षपूर्ण और अभावों में बीता था। उन्होंने अपने जीवन के शुरुआती दिनों में ही जीवन की कठोर वास्तविकताओं का सामना किया। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उन्होंने छोटी उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था।

ब्रजेश शर्मा

भारतीय कला जगत ने 8 अक्टूबर 2026 को अपना एक ऐसा अनमोल रत्न खो दिया जिसकी भरपाई करना शायद आने वाले कई दशकों तक संभव नहीं होगा। प्रख्यात अभिनेता नाना पाटेकर का 75 वर्ष की आयु में अचानक हृदय गति रुकने से निधन हो गया। यह दुखद समाचार दावानल की तरह पूरे देश में फैल गया और हर कोई स्तब्ध रह गया। नाना केवल एक साधारण अभिनेता नहीं थे, बल्कि वे एक ऐसी बुलंद आवाज थे जो पर्दे पर आम इंसान की पीड़ा, उसके क्रोध और उसकी लाचारी को बेहद जीवंत रूप में प्रस्तुत करते थे। उनका जाना केवल कला जगत की ही क्षति नहीं है, बल्कि समाज के उस शोषित और वंचित वर्ग की भी बहुत बड़ी क्षति है, जिसके लिए वे हमेशा एक मसीहा बनकर खड़े रहे। उनके निधन से कला, संस्कृति और समाज सेवा के क्षेत्र में जो गहरा सन्नाटा पसरा है, उसे शब्दों में बांधना बेहद कठिन है।

नाना पाटेकर का जन्म महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के मुरुड जंजीरा में हुआ था। उनका बचपन बेहद संघर्षपूर्ण और अभावों में बीता था। उन्होंने अपने जीवन के शुरुआती दिनों में ही जीवन की कठोर वास्तविकताओं का सामना किया। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उन्होंने छोटी उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। एक समय ऐसा भी था जब वे सड़कों पर पैदल यात्रियों के सड़क पार करने के लिए सफेद पट्टियां रंगने का काम करते थे और उसी से अपनी आजीविका चलाते थे। यह उनके जीवट और अथक परिश्रम का ही परिणाम था कि उन्होंने कभी परिस्थितियों के सामने घुटने नहीं टेके। इस कठोर संघर्ष ने उन्हें जीवन की उन गहराइयों से परिचित कराया, जो बाद में उनके अभिनय में स्पष्ट रूप से दिखाई देती थीं। उनके भीतर का कलाकार इसी भट्टी में तपकर कुंदन बना था। नाटकों और रंगमंच के प्रति उनका आकर्षण उन्हें धीरे-धीरे अभिनय की दुनिया की ओर ले गया, जहां उन्होंने अपनी एक अलग और अमिट पहचान बनाई।

रंगमंच से अपने अभिनय की शुरुआत करने वाले नाना पाटेकर ने जब रूपहले पर्दे पर कदम रखा, तो उन्होंने नायक की उस पारंपरिक छवि को पूरी तरह से तोड़ दिया जो उस समय तक सिनेमा में स्थापित थी। उनकी आंखें बोलती थीं और उनकी आवाज में वह कशिश थी जो दर्शकों को अंत तक बांधे रखती थी। उनका संवाद अदायगी का तरीका इतना स्वाभाविक और तेज होता था कि सामने बैठा दर्शक खुद को उस दृश्य का हिस्सा समझने लगता था। उन्होंने क्रांतिवीर, परिंदा, तिरंगा, खामोशी, प्रहार और नटसम्राट जैसी तमाम बेहतरीन रचनाओं में अपने अभिनय का जो उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, वह अभिनय की पाठशाला में हमेशा एक मानक के रूप में पढ़ाया जाएगा। चाहे वह एक भ्रष्ट व्यवस्था से लड़ने वाला आम नागरिक हो, एक सख्त सैन्य अधिकारी हो या फिर एक गूंगे बहरे दंपति का संवेदनशील पिता, हर भूमिका में उन्होंने अपने प्राण फूंक दिए। उनके द्वारा बोले गए संवाद आज भी लोगों की जुबान पर हैं और वे मात्र संवाद न होकर समाज की कुरीतियों पर एक गहरा कटाक्ष प्रतीत होते हैं। नाना पाटेकर की एक और बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि वे अपनी मातृभाषा मराठी और हिंदी, दोनों ही भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। उन्होंने जितनी सफलता हिंदी सिनेमा में प्राप्त की, उतनी ही ऊंचाई उन्होंने मराठी सिनेमा और रंगमंच में भी हासिल की। उनकी वाणी में एक विशेष प्रकार का ओज था। जब वे अपने संवाद बोलते थे, तो शब्दों के आरोह और अवरोह पर उनका नियंत्रण अद्भुत होता था। उन्होंने कभी भी किसी विदेशी भाषा या पाश्चात्य संस्कृति को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। वे अपनी जड़ों से जुड़े रहे और अपनी भारतीय संस्कृति पर हमेशा गर्व करते रहे। उनकी वेशभूषा, उनके विचार और उनका रहन सहन सब कुछ पूरी तरह से भारतीय



था। चकाचौंध के इस दौर में भी उन्होंने अपनी भारतीयता को कभी नहीं छोड़ा। अभिनय की दुनिया में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के बावजूद नाना पाटेकर ने कभी दिखावे की दुनिया को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने हमेशा एक बेहद सादा और संयमित जीवन व्यतीत किया। जब अन्य कलाकार विलासिता पूर्ण जीवन जी रहे थे, तब नाना अपने गांव में खेती कर रहे थे और एक साधारण इंसान की तरह जीवन बिता रहे थे। उनका यही गुण उन्हें अन्य सभी कलाकारों से अलग और श्रेष्ठ बनाता था। वे हमेशा अपनी जड़ों से जुड़े रहे और उन्होंने कभी अपने अतीत को नहीं भुलाया। यह उनकी महानता ही थी कि उन्होंने अपनी कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा समाज की भलाई के लिए दान कर दिया। विशेषकर महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में किसानों की आत्महत्या की घटनाओं ने उनके हृदय को गहरे तक झकझोर दिया था। किसानों की पीड़ा को उन्होंने अपना दर्द समझा और उनकी सहायता के लिए एक संस्था का निर्माण किया। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने हजारों अनाथ बच्चों, विधवाओं और कर्ज में डूबे किसानों के परिवारों को आर्थिक और मानसिक संबल प्रदान किया। उन्होंने गांव गांव जाकर लोगों की समस्याएं सुनीं और उनके समाधान के लिए जमीनी स्तर पर कार्य किया। उनके इस निस्वार्थ सेवा भाव ने उन्हें जनता के बीच एक भगवान के समान दर्जा दिला दिया था। लोग उन्हें केवल एक कलाकार के रूप में नहीं बल्कि अपने परिवार के एक बड़े बुजुर्ग के रूप में देखते थे जो संकट के समय हमेशा उनके साथ खड़ा रहता था। वर्तमान समय में जहां युवा पीढ़ी बहुत जल्दी मानसिक तनाव का शिकार हो जाती है, नाना पाटेकर का जीवन उनके लिए एक खुला मार्गदर्शन है। उनका जीवन सिखाता है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि मनुष्य के भीतर इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प है, तो वह किसी भी बाधा को पार कर सकता है। उन्होंने बिना किसी बाहरी सहारे के अपने दम पर वह मुकाम हासिल किया, जो लाखों लोगों के लिए केवल एक सपना होता है। उनकी यात्रा शून्य से शिखर तक की एक बेहद प्रेरणादायक कहानी है। 8 अक्टूबर 2026 की वह मनहूस सुबह भारतीय कला जगत के लिए एक काला अध्याय लेकर आई। वे गोवा के डोना पाउला स्थित अपने आवास पर थे, जब सुबह के समय उन्हें अचानक गंभीर हृदयघात हुआ। परिजनों द्वारा उन्हें तुरंत समीप के एक बड़े अस्पताल ले जाया गया। वहां मौजूद चिकित्सकों ने करीब 45 मिनट तक उनके हृदय को पुन: सक्रिय करने का हर संभव प्रयास किया, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। सुबह 5 बजकर 20 मिनट पर चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। यह समाचार जैसे ही बाहर आया, पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। जो आंखें उनकी कला को देखकर चमक उठती थीं, वे आंसुओं से नम थीं। चिकित्सकीय और कानूनी प्रक्रियाओं के बाद उनके पार्थिव शरीर को विशेष विमान और वाहन के माध्यम से महाराष्ट्र के पुणे लाया गया। उनका अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव डोंजे में पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर जनसैलाब उमड़ पड़ा था। हर कोई अपने चहेते नायक के अंतिम दर्शन करना चाहता था। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने स्वयं वहां पहुंचकर उनके पार्थिव शरीर को कंधा दिया, जो इस बात का प्रतीक था कि उनका कद राजनीति और कला की सीमाओं से कहीं बहुत ऊपर था। उनके अंतिम सफर में उनके पुराने मित्र, सहकर्मी और हजारों की संख्या में आम लोग शामिल हुए। हर आंख नम थी और हर दिल भारी था। नाना पाटेकर का जाना एक युग का अंत है। उन्होंने अपने अभिनय और अपने कर्मों से जो लकीर खींची है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी। उनका भौतिक शरीर आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनकी कला, उनके विचार और मानवता के लिए किए गए उनके निस्वार्थ कार्य उन्हें हमेशा हमारे दिलों में जीवित रखेंगे। रूपहले पर्दे का वह शेर आज हमेशा के लिए शांत हो गया है, लेकिन उसकी दहाड़ भारतीय सिनेमा और समाज की चेतना में हमेशा गूंजती रहेगी। ■



हिंदी सिनेमा में सजती रही हैं

आलीशान महफिलें

पुराना है पार्टीबाजी का शगल

अपने हिंदी सिनेमा को रियल लाइफ और रील लाइफ दोनों में ही पार्टीबाजी का बहुत पुराना शगल रहा है। जो कि आज तक बदस्तूर जारी है। एक से बढ़कर एक शानदार पार्टी फिल्मों पर्दे पर दिखाई जाती रही है। बेशक हर दौर में आलीशान महफिलों से रोशन होता रहा है अपने हिंदी सिनेमा का रजतपट। कभी नज़र मिलने के तो कभी नज़र से दूर होने और दिल टूटने के दृश्य इन पार्टियों में मुखर हुए हैं। कभी कभी इन्हीं पार्टियों में खलनायकों के षडयंत्र भी दिखाई दिए हैं।

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

अगर हम इस विषय के मूल रूप को जानें तो पार्टी एक ऐसा सामाजिक जमावड़ा माना गया है जहाँ कि लोग बातचीत, मनोरंजन, संगीत, नृत्य और खान-पान के लिए इकट्ठा होते हैं। वहीं फिल्मों मे पार्टियों के भव्य सेट, महंगे लिबास, ग्लैमर और रिश्तों के उलझाव मसलन दिल टूटना, नई घोषणाएं या राज खुलना आदि केंद्र में होती हैं। कुल मिलाकर लगभग हर नई शहरी कहानी वाली हिंदी फिल्म में एक न एक पार्टी का सीन तो जरूर होता ही है, क्योंकि उसी में तो फिर दोस्ती, प्यार या झगड़े की कहानी आगे को बढ़ती है। याद कीजिए पुरानी फिल्मों के पार्टी दृश्यों को पियानो पर नायक या नायिका कोई गीत बजाती हुई दिखाई देती थी और उसका प्रेमी उस पर अपने भावों को अभिव्यक्त करता हुआ दिखता था। 1968 में आई फिल्म 'ब्रह्मचारी' का गाना 'दिल के झरोखे में' किसने नहीं देखा होगा, जिसमें कि पियानो को बजाते हुए अभिनेता शम्मी कपूर इस गीत को गा रहे हैं।

सचिन भौमिक द्वारा लिखित, जीपी और रमेश सिप्पी द्वारा निर्मित और भाप्पी सोनी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में राजश्री, प्राण, मुमताज, जगदीप, सचिन और असित सेन ने अभिनय किया है। फिल्म में मोहम्मद रफ़ी की आवाज़ में, शंकर-जयकिशन के कर्णप्रिय संगीत से सजा हुआ और हसरत जयपुरी का लिखा हुआ यह गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ था-

'दिल के झरोखे में तुझको बिठाकर,
यादों को तेरी मैं दुल्हन बनाकर,
रखूँगा मैं दिल के पास,
मत हो मेरी जाँ उदास...!'

हमें बखूबी याद भी आता है अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, हेमा मालिनी, राखी अभिनीत फिल्म का गाना। जिसमें बेहद शानदार पार्टी का दृश्य देखने को हमें मिलता है। इस फिल्म में संजीव कुमार, पूनम ढिल्लन, सचिन पिलगांवकर, प्रेम चोपड़ा भी थे। यहां हम जिक्र कर रहे हैं फिल्म निर्देशक यश चोपड़ा और फिल्म निर्माता गुलशन रॉय की 1978 में आई फिल्म 'त्रिशूल' का, जिसमें कि साहिर लुधियानवी का लिखा हुआ, किशोर कुमार, के. जे. येसुदास और लता मंगेशकर की मधुर आवाज़ में मौहम्मद ज़हूर खय्याम के संगीत से सजा एक खूबसूरत गीत है-

'हर तरफ हुस्न है, जवानी है,
आज की रात क्या सुहानी है,
रेशमी जिस्म थरथराते हैं,
मरमरी ख़्वाब गुनगुनाते हैं,
धड़कनों में सुरूर फैला है,
रंग नज़दीक-ओ-दूर फैला है,
दावत-ए-इश्क़ दे रही है फ़ज़ा,
आज हो जा किसी हसीन पे फ़िदा,
कि मोहब्बत बड़े काम की चीज़ है...!'

सन् 1984 में 'पार्टी' नाम से एक अत्यंत चर्चित और क्लासिक समानांतर सिनेमा की फिल्म आई थी, जिसका निर्माण नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (NFDC) ने किया था। निर्देशन गोविंद निहलानी ने किया था। फिल्म के प्रमुख कलाकार ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, अमरीश पुरी, शबाना आज़मी, रोहिणी हट्टंगडी, विजया मेहता, मनोहर सिंह, पंकज कपूर थे। विषय उच्च वर्ग के बुद्धिजीवियों, लेखकों, कलाकारों और समाज के तथाकथित प्रबुद्ध वर्ग के खोखले सरोकारों, पाखंड और उनके जीवन के अंतरविरोधों को एक शाम की महफ़िल (पार्टी) के जरिए उजागर करना था। यह फिल्म महेश एलकुंचवार के 1976 के एक मराठी नाटक पर आधारित थी। सन् 1985 में आई फिल्म 'ऐतबार' का एक गीत भी याद आता है - 'किसी नज़र को तेरा इंतज़ार आज भी है' निर्देशक मुकुल आनन्द निर्देशित इस फिल्म के प्रमुख

घर की पार्टी या बर्थडे पार्टी के दृश्य भी फिल्मों में दिखाए हैं

होटलों और रिज़ॉर्ट्स में ही नहीं बल्कि किसी घर या बंगले में भी फिल्माई जाती रही है कोई गेट-टू-गैदर पार्टी हो या बर्थ-डे पार्टी। इनको फिल्मों में किसी घटना या भावनात्मक पल से जोड़ते हुए दिखाया जाता रहा है। सन् 1994 में आई फिल्म 'हम आपके हैं कौन' में घर की बड़ी पार्टियां और संगीत के दृश्य दिखाए हैं। वर्ष 2001 में आई फिल्म 'कभी खुशी कभी गम' में बोले चूड़ियाँ, सूरज हुआ मद्धम वाला बर्थ-डे और त्योहार पार्टी के दृश्य वाला गीत सबने सुना होगा। 2003 में आई फिल्म 'कल हो ना हो' में सिक्स डेज़ वाला क्लब और घर की भव्य पार्टियां दिखाई गई हैं।

मौजूदा दौर की पार्टी गानों के लिए यादगार फिल्में ये रही हैं

यह सच है कि मौजूदा दौर की फिल्मी पर्दे की पार्टियों में और गुजरे दौर की फिल्मी पर्दे की पार्टियों में जमीन-आसमान का सा फर्क दिखाई देता है। आज के दौर की पार्टियों के दृश्यों के साथ में फिल्माए गए कई फिल्मों के गीत युवाओं में बहुत लोकप्रिय हुए हैं। साल 2003 में आई थी फिल्म 'कल हो ना हो', जिसका एक गीत था - 'इट्स द टाइम टू डिस्को' यह गीत उस वक्त के युवाओं में बहुत ही लोकप्रिय हुआ था। 2004 में आई फिल्म धूम में एक क्लब सीन के दौरान ये गाना धूम मचा ले सबको पसंद आया। वर्ष 2007 में आई फिल्म 'ओम शांति ओम' में भी पार्टी सीन हैं। साल 2012 में आई फिल्म स्टूडेंट ऑफ द ईयर में डिस्को सॉन्ग है। सन् 2013 में आई फिल्म बॉस का यह पार्टी सॉन्ग तो बहुत मशहूर हुआ जिसके बोल थे - 'पार्टी ऑल नाइट'

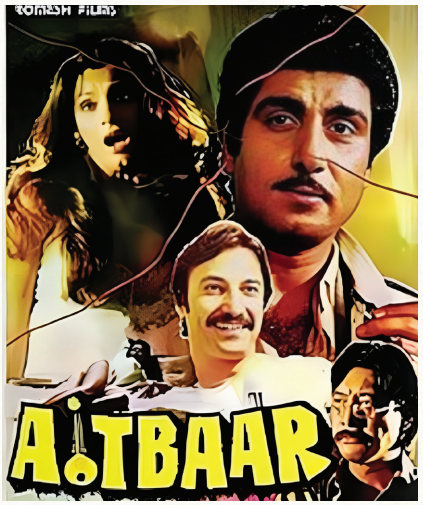

अभिनेता राजबब्बर, डिम्पल कपाड़िया, सुरेश ओबेरॉय, डैनी डेन्जोंगपा, शरत सक्सेना, लीना दास, अनुपम खेर, हुमा खान, घनश्याम रोहेड़ा, शिवराज, प्रदीप सिंह थे। इस फिल्म में संगीतकार बप्पी लाहिरी के संगीत से सजी आशा भोसले और भूपेंद्र की आवाज़ में हसन कमाल की लिखी यह ग़ज़ल आज भी याद आती है -

किसी नज़र को तिरा इंतिज़ार आज भी है
कहाँ हो तुम कि ये दिल बे-क़रार आज भी है
वो वादियाँ वो फ़ज़ाएँ कि हम मिले थे जहाँ
मिरी वफ़ा का वहीं पर मज़ार आज भी है
न जाने देख के क्यों उन को ये हुआ एहसास
कि मेरे दिल पे उन्हें इख़्तियार आज भी है
वो प्यार जिस के लिए हम ने छोड़ दी दुनिया
वफ़ा की राह में घायल वो प्यार आज भी है
यक़ीं नहीं है मगर आज भी ये लगता है
मिरी तलाश में शायद बहार आज भी है
न पूछ कितने मोहब्बत के ज़ख़्म खाए हैं
कि जिन को सोच के दिन सोगवार आज भी है

कॉकटेल या क्लब पार्टी के लिए फेमस कुछ हिंदी फिल्में ये भी रही हैं-2001 में आई फिल्म 'दिल चाहता है' में गोवा ट्रिप और क्लब कल्चर के सीन हैं। 2008 में आई फिल्म 'दोस्ताना' में देसी गर्ल वाला क्लब सीन है। सन् 2011 में एक फिल्म आई थी 'चिल्लर पार्टी', जिसके निर्देशक विकास बहल और नितेश तिवारी थे। इसके निर्माता सलमान खान, अदिति आनंद और रोनी स्क्रूवाला थे। इसके प्रमुख कलाकारों में इरफ़ान खान, नमन जैन आदि शामिल थे। बच्चों की मासूमियत और समाज के ऊंचे तबके के बीच होने वाले आयोजनों व राजनीतिक पार्टियों पर यह फिल्म सटीक कटाक्ष करती हुई दिखाई देती है। 2011 में ही आई फिल्म 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' में स्पेन में बैचलर पार्टी के सीन दिखाए गए हैं। 2012 में आई फिल्म 'कॉकटेल' तो पूरी की पूरी फिल्म ही पार्टी कल्चर पर है। 2013 में आई थी फिल्म 'ये जवानी है दीवानी' जिसमें 'बदतमीज़ दिल' और 'बलम पिचकारी' वाले गीत पार्टी सीन के साथ फिल्माए गए हैं। इन फिल्मों में एक और फिल्म शामिल होने जा रही है। विराज गेहलानी की मस्ती और दोस्तों पर आधारित नई कॉमेडी फिल्म 'पार्टी एनिमल्स', 20 नवंबर 2026 को रिलीज़ होगी। हर दौर की हिंदी फिल्मों में पार्टियों के सीन खूब दिखाए जाते रहे हैं - खासकर बर्थडे पार्टी, कॉकटेल पार्टी, कॉलेज पार्टी और हाई-सोसाइटी पार्टी। यहां हम जिक्र कर रहे हैं कुछ ऐसी ही यादगार फिल्मों का जिनमें कि पार्टी सीन बहुत फेमस हुए हैं। ■



'दृश्यम 3' में

विजय सलगांवकर का आखिरी दांव, पर नए पुलिस अफसर ने बिगाड़ा मजा?

2 अक्टूबर, सत्संग और पाव-भाजी की पुरानी यादों के साथ 'दृश्यम 3' इस आइकॉनिक फ्रेंचाइजी का अंतिम और बहुप्रतीक्षित चैप्टर लेकर पर्दे पर आ चुकी है। अभिषेक पाठक के निर्देशन में बनी यह फिल्म विजय सलगांवकर और उनके परिवार की रक्षा की आखिरी लड़ाई को तो मजबूती से दिखाती है, लेकिन एक जगह आकर चूक जाती है।

सत्यव्रत मुदगल

'अब ये खेल दिमाग का नहीं, नसीब का बन चुका है...' – जब अजय देवगन का किरदार विजय सलगांवकर पुलिस के साथ एक और तनावपूर्ण आमना-सामना होने के बाद अपने सहमे हुए परिवार से यह संवाद कहता है, तो सिनेमाघर में बैठे दर्शक अपनी सांसें थाम लेते हैं। 2 अक्टूबर, सत्संग और पाव-भाजी की पुरानी यादों के साथ 'दृश्यम 3' इस आइकॉनिक फ्रेंचाइजी का अंतिम और बहुप्रतीक्षित चैप्टर लेकर पर्दे पर आ चुकी है। अभिषेक पाठक के निर्देशन में बनी यह फिल्म विजय सलगांवकर और उनके परिवार की रक्षा की आखिरी लड़ाई को तो मजबूती से दिखाती है, लेकिन एक जगह आकर चूक जाती है।

कहानी: कहानी वहीं से शुरू होती है जहाँ विजय सलगांवकर और उनका परिवार गोवा में अपनी जिंदगी में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है। लेकिन, यह शांति ज्यादा दिन कायम नहीं रहती। दफनाया जा चुका पुराना केस एक बार फिर खोदकर निकाल लिया जाता है। इस बार तब्बू (मीरा देशमुख) एक सख्त पुलिस अफसर के बजाय एक टूटी हुई, दुखी मां के रूप में दिखाई देती हैं, जिसने अपना इकलौता बेटा खो दिया है। केस की कमान अब क्राइम ब्रांच के नए हेड राजीव सिंह तोमर (जयदीप अहलावत) के हाथों में है। तोमर खुद को विजय की जिंदगी का नया 'शनि' बताता है। वह कब्रें खोदता है, डीएनए सबूत ढूंढता है और भ्रष्ट इंस्पेक्टर गायतोंडे (कमलेश सावंत) के साथ मिलकर सलगांवकर परिवार पर शिकंजा कसने की कसम खाता है। फिल्म की एक खूबी यह है कि इसे पता है कि दर्शक क्या सोच रहे हैं। दृश्यम 2 की तरह ही, यह फिल्म भी शुरुआत में दर्शकों को अब तक हुई सभी घटनाओं की याद दिलाती है। फिल्म बनाने वालों को उस सवाल का भी अंदाज़ा है जो तीसरी फिल्म की घोषणा के साथ ही उठा था। अब और क्या हो सकता है? कई ऐसे पल आते हैं जब किरदार सवाल उठाते हैं कि यह केस आखिर कब तक चलेगा। केस बंद होता है और फिर शुरू हो जाता है। विजय बार-बार पुलिस को चकमा देता है। यह लगभग एक मज़ाक जैसा बन जाता है। और यहीं पर दृश्यम 3 पिछली फिल्मों की भावना से जुड़ी रहती है। इसे पता है कि दर्शक विजय को यह खेल आखिरी बार खेलते हुए देखने आए हैं।

अभिनय: अजय देवगन ने फिल्म में ज़बरदस्त काम किया है। विजय सलगांवकर के किरदार में उन्हें लंबे डायलॉग या नाटकीय अंदाज़ की ज़रूरत नहीं पड़ती। उनकी आँखें और खामोशी ही बहुत कुछ कह जाती हैं। विजय भले ही ज़्यादा पढ़े-लिखे न हों, लेकिन वे बेहद समझदार हैं। वे मुसीबत आने से पहले ही उसे भांप लेते हैं, और यही समझ हमेशा से उनकी सबसे बड़ी ताकत रही है। हर बार जब विजय पुलिस से एक कदम आगे रहते हैं, तो दर्शक प्रतिक्रिया देते हैं। हंसी, तनाव और राहत का एहसास होता है। फिल्म का पूरा दारोमदार उन्हीं के कंधों पर है, और देवगन ने इसे बखूबी निभाया है। जयदीप अहलावत की कास्टिंग ने काफी उत्साह पैदा किया था। अहलावत और देवगन जैसे दो दमदार कलाकारों को आमने-सामने लाने से यादगार टकराव की उम्मीद थी। दुर्भाग्य से, यहीं पर फिल्म अपनी राह भटक जाती है। फिल्म का पहला हिस्सा राजीव सिंह तोमर को एक ऐसे नए अधिकारी के तौर पर पेश करने में काफी समय लगाता है जो आखिरकार सच का पता लगा सकता है। सच का पता लगाने के लिए वह सैम की आत्मा को बुलाएगा - यही उसका गुस्सा है। उसे लेकर लोगों में सचमुच उत्सुकता है। लेकिन कहानी की लिखावट उस उम्मीद पर खरी नहीं उतरती। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उसका किरदार बेजान लगने लगता है। यहाँ बहुत गुंजाइश थी। इसके बजाय, बीच में ही किरदार का आकर्षण खत्म होता दिखता है। जिस तरह से उसे पेश किया गया और जिस तरह से उसकी कहानी खत्म होती है, वह भी लिखावट और एडिटिंग पर सवाल खड़े करता है। जयदीप ने जो कुछ भी उन्हें दिया गया, उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया; दुख की बात है कि लेखक इसमें चूक गए। तब्बू का मीरा देशमुख वाला किरदार अब बदल चुका है। उसने अपना इकलौता बेटा खो दिया है और उसके साथ ही, खुद का एक हिस्सा भी। इस बार उसका किरदार जांच-पड़ताल से ज़्यादा दुख पर केंद्रित है। भले ही उनका रोल छोटा है, लेकिन जब भी वह स्क्रीन पर आती हैं, तो सबका ध्यान खींच लेती हैं। रजत कपूर को मीरा के पति महेश देशमुख के तौर पर ज़्यादा काम करने को मिलता है। उनके किरदार में ज़्यादा संवाद और पहल है, और वह सिर्फ़ एक सहयोगी भूमिका जैसा नहीं लगता। श्रिया सरन नंदिनी सालगांवकर के किरदार में असरदार हैं। वह अदालतों, पुलिस स्टेशनों और सामान्य जीवन जीने के दबाव का सामना करते हुए भी अपने परिवार को एकजुट रखने की कोशिश कर रही हैं। वह इस किरदार में सही मात्रा में भावुकता और कमज़ोरी लाती हैं। इशिता दत्ता ने भी अंजू के रोल में अच्छा काम किया है। उनका किरदार पिछली घटनाओं के असर से जूझ रहा है और दत्ता ने अपनी एक्टिंग में उस इमोशनल गहराई को बखूबी दिखाया है। मृणाल जाधव का रोल अनु के तौर पर छोटा है, लेकिन कहानी के लिए अहम है। और फिर आते हैं इंस्पेक्टर लक्ष्मीकांत गायतोंडे, जिनका रोल कमलेश सावंत ने निभाया है। वह अब भी ऐसे किरदार हैं जिनसे नफ़रत करना भी अच्छा लगता है। विजय के साथ उनकी नोक-झोंक में काफ़ी मज़ा है, और सावंत यह पक्का करते हैं कि हर बार जब वह स्क्रीन पर आएं, तो छाप छोड़ें। विजय के साथ उनकी केमिस्ट्री उन चीज़ों में से एक होगी जिन्हें फ़ैंस मिस करेंगे, क्योंकि अब यह फ्रेंचाइजी अपने आखिरी चैप्टर पर पहुँच गई है। प्रकाश राज ने तब्बू के बेटे की मौत के मामले में वकील का छोटा लेकिन असरदार रोल निभाया है और एक बार फिर साबित किया है कि वह कितने बेहतरीन एक्टर हैं।

डायरेक्शन: अभिषेक पाठक, जिन्होंने ज़िंदगी भर मुख्य रूप से प्रोड्यूसर के तौर पर काम किया है, उन्होंने दृश्यम 2 और 3 को को-राइट और डायरेक्ट किया है। वह दृश्यम की दुनिया को समझते हैं और कैमरा वर्क और फ़िल्म की रफ़्तार को काफ़ी हद तक कंट्रोल में रखते हैं। फ़िल्म को देखकर ऐसा लगता है कि इसे सिर्फ़ एक और सीक्वल बनाने के लिए नहीं, बल्कि फ़्रैंचाइज़ी को एक सही अंजाम देने के मकसद से बनाया गया है। हालांकि, एडिटिंग और राइटिंग की वजह से फ़िल्म थोड़ी कमज़ोर पड़ जाती है। यह बात ख़ासकर जयदीप अहलावत के किरदार में साफ़ दिखती है। कहानी जिस तरह से आगे बढ़ती है, उससे लगता है कि कुछ बहुत बड़ा होने वाला है, लेकिन आखिर में जो दिखाया जाता है, वह उम्मीद के मुताबिक नहीं लगता।

दृश्यम 3 की खूबियां क्या हैं?

इसकी सबसे बड़ी ताकत अब भी विजय सलगांवकर ही हैं। अजय देवगन की सधी हुई एक्टिंग कहानी को दिलचस्प बनाए रखती है, खासकर तब जब विजय एक बार फिर पुलिस से आगे निकल जाते हैं। फ़िल्म अपने दर्शकों को भी अच्छी तरह समझती है। पुरानी फ़िल्मों की यादें ताज़ा करना, गायतोंडे के मज़ेदार पल और पिछली फ़िल्मों का ज़िक्र कहानी के अनुभव को और बेहतर बनाते हैं, बिना किसी चीज़ के बेमेल लगे। तब्बू, श्रिया सरन और इशिता दत्ता ने भी अपने-अपने किरदारों में इमोशनल गहराई लाई है। फिल्म का वह सीन जिसमें दर्शकों को 'दृश्यम' की अहम चीज़ों जैसे '2 अक्टूबर', 'सत्संग', 'पाव भाजी' की याद दिलाई जाती है, वह पुरानी यादें ताज़ा करने वाला है। और यह काफी हद तक असरदार भी है।

'दृश्यम 3' में क्या कमी रह गई?

सबसे बड़ी समस्या जयदीप अहलावत का किरदार है। उनके आने से काफी उत्साह बनता है, खासकर इसलिए क्योंकि उन्हें विजय के एक मज़बूत नए दुश्मन के तौर पर पेश किया जाता है। लेकिन कहानी में उनके किरदार को उतनी गहराई नहीं दी गई है। किरदार की शुरुआत तो अच्छी होती है, लेकिन कहानी आगे बढ़ने के साथ उसमें दम नहीं रहता। आखिर में उनका किरदार उम्मीद के मुताबिक असरदार नहीं लगता, खासकर तब जब उसमें काफी गुंजाइश थी। हम खास तौर पर उस सीन का ज़िक्र करना चाहेंगे जिसमें विजय की सुनवाई वाले दिन जयदीप को एक इमरजेंसी प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए बुलाया जाता है। यह कमज़ोर लेखन जैसा लगा क्योंकि मेकर्स कोर्ट में तोमर की मौजूदगी को सही ढंग से नहीं दिखा पाए, और फिर भी वह हार जाते हैं, खासकर तब जब उन्होंने शुरू में दावा किया था कि इस बार उनकी जांच सबूतों पर आधारित है। कुछ हिस्से खिंचे हुए भी लगते हैं, खासकर तब जब फिल्म आखिरी टकराव की ओर बढ़ रही होती है। सस्पेंस तो दिलचस्प बना रहता है, लेकिन आखिर में मिलने वाला नतीजा हमेशा पहले हाफ में बनी उम्मीदों के बराबर नहीं होता।

क्या 'दृश्यम 3' का अंत मज़बूत है?

'दृश्यम 3' तब सबसे अच्छी लगती है जब यह विजय सलगांवकर पर फोकस करती है। अजय देवगन इस फ्रेंचाइजी का सबसे मज़बूत हिस्सा बने हुए हैं, और उनकी एक्टिंग फिल्म में इतना तनाव और इमोशन लाती है कि दर्शक जुड़े रहते हैं। अगर आप इसे सिर्फ विजय के सफर के तौर पर देखें तो फिल्म को 3 रेटिंग मिलनी चाहिए।

हालांकि, आखिरी चैप्टर होने के नाते, इसमें और भी बहुत कुछ हो सकता था। जयदीप के किरदार में आखिरी लड़ाई को और भी रोमांचक बनाने की क्षमता थी, लेकिन लेखन ने उनका पूरा इस्तेमाल नहीं किया। फिर भी, विजय के सफर को काफी सही विदाई मिलती है, भले ही फिल्म अपनी पिछली फिल्मों के स्तर तक पूरी तरह न पहुँच पाए। ■

कहानी



सच्ची सीख

नीरा बहुत परेशान थी अपने बेटे किशोर के रवैये से। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे उसे सही राह पर लाए। लेकिन समीर ने बिना कुछ कहे अपने तरीके से किशोर को इस तरह समझाया कि खुशी के मारे नीरा की आंखों से आंसू बह निकले।

राजीव रंजन प्रकाश

नीरा बहुत परेशान थी अपने बेटे किशोर के रवैये से। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे उसे सही राह पर लाए। लेकिन समीर ने बिना कुछ कहे अपने तरीके से किशोर को इस तरह समझाया कि खुशी के मारे नीरा की आंखों से आंसू बह निकले। हमेशा की तरह आज भी जब किशोर देर से घर लौटा और दबेपांव अपने कमरे की ओर बढ़ा तो नीरा ने आवाज लगाई, ''कहां गए थे?'' ''कहीं नहीं, मां। बस, दोस्तों के साथ खेलने गया था,'' कहता हुआ किशोर अपने कमरे में चला गया। नीरा पीछेपीछे कमरे में पहुंच गई, बोली, ''क्यों, यह कोई खेल कर घर आने का समय है? इतनी रात हो गई है, अब पढ़ाई कब करोगे? तुम्हें पता है न, तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा है और तुम ने पढ़ाई बिलकुल भी नहीं की है। तुम्हारे क्लासटीचर भी बोल रहे थे कि तुम नियमित रूप से स्कूल भी नहीं जाते और पढ़ाई में बिलकुल भी मन नहीं लगाते। आखिर इरादा क्या है तुम्हारा?'' ''जब देखो, आप मेरे पीछे पड़ी रहती हैं, चैन से जीने भी नहीं देतीं, जब देखो पढ़ोपढ़ो की रट लगाए रहती है। पढ़ कर आखिर करना भी क्या हैं, कौन सी नौकरी मिल जानी है। मेरे इतने दोस्तों के बड़े भाई पढ़ कर बेरोजगार ही तो बने बैठे हैं। इस से अच्छा है कि अभी तो मजे कर लो, बाद की बाद में देखेंगे,'' कह कर उस ने अपने मोबाइल में म्यूजिक औन कर लिया और डांस करने लगा। नीरा बड़बड़ाती हुई अपने कमरे में आ गई। नीरा किशोर की बिगड़ती आदतों से काफी परेशान रहने लगी थी। वह न तो पढ़ाई करता था और न ही घर का कोई काम। बस, दिनभर शैतानियां करता रहता था। दोस्तों के साथ मटरगश्ती करना और महल्ले वालों को परेशान करना, यही उस का काम था। जब भी नीरा उस से पढ़ने को कहती, वह किताब उठाता, थोड़ी देर पढ़ने का नाटक करता, फिर खाने या पानी पीने के बहाने से उठता और दोबारा पढ़ने को नहीं बैठता। नीरा उस की आदतों से तंग आ चुकी थी। उसे किशोर को रास्ते पर लाने का कोई उपाय नहीं सू?ा रहा था। किशोर के पिता एक सरकारी बैंक में अधिकारी थे। वे सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक बैंक के कार्यों में व्यस्त रहते थे। आमतौर पर वे रात को देर से लौटते थे। थकेहारे होने के कारण वे बच्चों से ज्यादा बात नहीं करते थे। किशोर जानता था कि पापा तो घर में रहते नहीं, इसलिए उसे कोई खतरा नहीं। किशोर की बहन साक्षी, उस से छोटी जरूर थी परंतु काफी समझदार थी और स्कूल का होमवर्क समय पर करती थी। वह हमेशा अपनी कक्षा में अव्वल आती थी। इस के अलावा वह अपनी मम्मी के काम में हाथ भी बंटाती थी। कई बार नीरा किशोर को समझती और साक्षी का उदाहरण भी देती परंतु उस पर कोई असर नहीं होता था। किशोर स्कूल जाने के नाम पर घर से निकलता मगर स्कूल न जा कर वह सारा समय दोस्तों के साथ घूमनेफिरने और फिल्में देखने में बिता देता था। इस बात को ले कर एक दिन नीरा के डांटने पर वह उल्टा नीरा को ही चिल्ला

कर बोला, ''मुझे नहीं पढ़नावढ़ना। प्लीज, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। मुझे जो बनना होगा, बन जाऊंगा वरना बाद में अपना बिजनैस करूंगा। मेरे सारे दोस्तों के पापा बिजनैसमैन हैं और देखो, उन के पास कितना पैसा है और मेरे पापा सरकारी नौकरी में हैं पर हमारे पास कुछ भी नहीं है। क्या फायदा ऐसी नौकरी का। अब तो मैं और भी नहीं पढ़ूंगा, चाहे आप कुछ भी कर लो,'' किशोर की इस बात से नीरा को गहरा सदमा लगा और उस ने किशोर को जोर से एक तमाचा जड़ दिया। किशोर जोरजोर से रोने लगा और रोतेरोते अपने कमरे में चला गया। नीरा सोच में पड़ गई कि कैसे सम?ाए अपने लाड़ले को। यदि अभी से इस ने मेहनत करना नहीं सीखा तो इस का भविष्य बनने से पहले ही बिगड़ जाएगा। यह सोचती हुई वह किशोर के कमरे में पहुंची। किशोर का सिर गोद में रखा और बड़े प्यार से उस के बालों को सहलाती हुई बोली, ''बेटा, मैं तुम्हारी दुश्मन थोड़े ही हूं जो तुम्हें हमेशा पढ़ने के लिए बोलती रहती हूं। तुम पढ़ोगे तो तुम्हारा ही फायदा होगा और कल जब तुम बड़े आदमी बनोगे तो इस से तुम्हारी ही इज्जत बढ़ेगी, लोग तुम्हारे आगेपीछे घूमेंगे। जब तक हम हैं तब तक तुम्हें हर खुशी देने का प्रयास करेंगे लेकिन कल यदि हम नहीं रहे तो तुम्हारा क्या होगा? तुम्हारे पापा तुम्हें बिजनैस कराने के लिए इतने पैसे कहां से लाएंगे और बिजनैस में सफल होने के लिए भी तो पढ़नालिखना जरूरी है।'' परंतु किशोर पर जैसे पागलपन सवार था, वह कुछ भी सुनना नहीं चाहता था। उस ने गुस्से में अपनी किताबेंकौपियां उठा कर फेंकते हुए चिल्ला कर कहा, ''मां, मुझे नहीं पढ़नालिखना, आप जाओ यहां से।'' किशोर के व्यवहार से नीरा की आंखों में आंसू आ गए। अपने पल्लू से आंसू पोंछते हुए वह कमरे से बाहर आ गई। वह अपनी व्यथा अपने पति समीर से भी नहीं कह सकती थी क्योंकि वे भी दिनभर की कड़ी मेहनत के बाद रात को देर से लौटते थे और खाना खा कर सो जाते थे। कई बार तो रविवार को भी उन्हें बैंक जाना पड़ता था, इसलिए उसे अपने पति से कुछ ज्यादा उम्मीद नहीं थी। इसीलिए उस के सिर में तेज दर्द होने लगा था। वह अपने कमरे में आ कर लेट गई। समीर लौटे तो उन्होंने नीरा को लेटे हुए देखा, प्यार से उस के बालों को सहलाते हुए पूछा, ''क्या बात है, नीरा? आज कुछ ज्यादा ही परेशान लग रही हो? कोई बात है क्या?'' ''नहीं तो, ऐसी कोई बात नहीं। बस, ऐसे ही सिर में दर्द हो रहा था, इसलिए लेटी हुई थी,'' नीरा ने कहा। वह किशोर के बारे में समीर को बता कर उन्हें परेशान नहीं करना चाहती थी। समीर को लगा कि जरूर कुछ बात है वरना नीरा इतना परेशान कभी नहीं रहती। वे प्यार से बोले, ''कोई बात नहीं, तुम आराम से लेटो, आज मैं तुम्हारे लिए गरमागरम चाय बना कर लाता हूं,'' यह कह कर वे रसोई की ओर मुड़ गए। नीरा से रहा नहीं गया और वह भी पीछेपीछे रसोई में पहुंच गई। तब तक समीर चूल्हे पर चाय की पतीली चढ़ा चुके थे। नीरा बोली, ''हटो जी, इतनी भी तबीयत खराब नहीं है कि आप के लिए चाय भी नहीं बना सकूं।'' ''और मैं भी इतना निष्ठुर नहीं कि बीवी की तबीयत ठीक नहीं और मैं उस के लिए एक कप चाय भी नहीं बना सकूं। कभी मुझे भी मौका दे दिया करो, श्रीमतीजी, मैं इतनी घटिया भी चाय नहीं बनाता कि तुम्हारे गले से नहीं उतर पाए,'' समीर बोले। समीर की बातों से नीरा के होंठों पर हंसी आ गई और दोनों साथसाथ चाय बनाने लगे। थोड़ी ही देर में चाय तैयार हो गई। चाय की प्याली ले कर दोनों कमरे में आए। चाय की चुस्की लेते हुए समीर ने पूछा, ''अब बताओ, क्यों इतना परेशान हो, मु?ा से कुछ न छिपाओ, हो सकता है मेरे पास तुम्हारी समस्या का कोई समाधान हो, और जब तक तुम बताओगी नहीं तब तक मैं कैसे समझ पाऊंगा?'' नीरा से रहा नहीं गया, उस की आंखों में आंसू आ गए और भरे गले से ही उस ने समीर को सारी बातें बता दीं। समीर ने सारी बातें सुनने के बाद एक ठंडी सांस ली और नीरा के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, ''कल छुट्टी है। इस पर कल सोचते हैं कि किशोर को कैसे सही रास्ते पर लाया जाए। अभी किशोर गुस्से में होगा, अभी बात करने पर बात बिगड़ भी सकती है।'' सुबह दिनचर्या से निवृत्त हो कर समीर ने किशोर और साक्षी दोनों को अपने पास बुलाया और बोले, ''आज मेरी छुट्टी है, कहीं घूमने चलना है क्या?'' ''हां, पापा, कब चलना है?'' दोनों खुशी से उछल कर बोले। ''बस, जितनी जल्दी तुम लोग तैयार हो जाओ,'' समीर ने जवाब दिया। ''या, याहू,'' कह कर दोनों तैयार होने चले गए। थोड़ी ही देर में दोनों तैयार थे। तब तक नीरा ने नाश्ता लगा दिया। सभी ने साथ में नाश्ता किया। समीर ने गाड़ी निकाली और सभी गाड़ी में बैठ कर निकल पड़े। अभी गाड़ी थोड़ी आगे बढ़ी ही थी कि रैडलाइट हो गई और गाड़ी रोकनी पड़ी। गाड़ी रुकते ही 2-3 भिखमंगे आ कर भीख मांगने के लिए हाथ जोड़जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगे। समीर ने सब को डांट कर भगा दिया। इस पर किशोर बोला, ''दे दो न, 2 रुपए, पापा। क्या जाता है।'' ''मैं किसी को भीख नहीं देता और जो लोग मेहनत नहीं करते उन्हें तो भीख भी नहीं दी जाती। मैं अपनी मेहनत की कमाई भिखमंगों में नहीं बांट सकता।'' किशोर उन भिखमंगों को देखता रहा। वे जिस गाड़ी के पास जाते, सभी उन्हें भगा देते। यहां तक कि पैसे देना तो दूर, लोग गाड़ी छूने पर ही उन्हें डांट देते। किशोर ने कड़ी धूप में कई और लोगों को वहां कुछ सामान भी बेचते देखा पर कोई भी उन से कुछ खरीद नहीं रहा था। सब हरी बत्ती होने का इंतजार कर रहे थे। थोड़ी देर में बत्ती हरी हो गई और समीर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी। समीर ने थोड़ी ही देर बाद सड़क के किनारे गाड़ी रोकी और एक जूता पौलिश करने वाले को अपना जूता पौलिश करने को कहा। जूता पौलिश होने के बाद उन्होंने मोची को 2 रुपए का सिक्का पकड़ाया और चल दिए। किशोर ने पूछा, ''इतनी मेहनत के बस 2 रुपए?'' ''हां बेटा, जो लोग बचपन में पढ़नेलिखने में मेहनत नहीं करते, बाद में उन्हें मेहनत भी ज्यादा करनी पड़ती है और पैसे भी कम मिलते हैं।'' किशोर सोच रहा था कि एक ओर हम लोग एसी कार में चल रहे हैं, दूसरी ओर इन्हें कड़ी धूप में 1-2 रुपए के लिए कितनी मेहनत एवं संघर्ष करना पड़ रहा है। अब वे लोग शहर में लगे एक मेले में पहुंचे। मेले में वे सभी खूब घूमेफिरे, खायापीया, मस्ती की। इस तरह से शाम हो गई और वे गाड़ी में बैठ कर वापस चल दिए। वापस लौटते हुए समीर ने अपनी गाड़ी एक बड़े से गेट पर रोक दी। गेट पर लिखा था, 'मोहित कुमार', आईएएस जिलाधिकारी। गेट पर 4 पुलिस वाले खड़े थे। पापा ने उन्हें अपना कार्ड दिखाया और बोले, ''डीएम साहब ने बुलाया है।'' उन की गाड़ी की अच्छी तरह से तलाशी ले कर पुलिस ने गाड़ी को अंदर जाने की इजाजत दी। बंगले में प्रवेश करते ही किशोर ने देखा कि कितना बड़ा और सुंदर बंगला था। चारों ओर बड़ेबड़े परदे लगे थे, झुलने के लिए झुला और खेलने के लिए गार्डन और न जाने क्याक्या। इस बंगले के सामने उस का फ्लैट बिलकुल छोटा लगने लगा था। गाड़ी पार्क कर डीएम साहब के बंगले के अंदर जाने से पहले समीर ने दरबान से अपना कार्ड अंदर भिजवाया तो तुरंत उसे बैठक में ले जाया गया। किशोर ने देखा कि वह घर बाहर से जितना बड़ा था, अंदर से उतना ही शानदार एवं खूबसूरत था। घर में कालीन बिछा था और बड़ेबड़े एवं खूबसूरत सोफे लगे थे। पूरा कमरा तरीके से सजा था। तभी एक नौजवान युवक ने कमरे में प्रवेश किया और सब का अभिवादन किया। उस ने टेबल पर घंटी बजाई तो तुरंत भागता हुआ एक दफ्तरी अंदर आया और सामने सिर झुका कर खड़ा हो गया। उस युवक ने कहा, ''जल्दी से चायनाश्ता ले कर आओ।'' समीर ने उस युवक का परिचय सब से कराते हुए कहा, ''इन का नाम मोहित है और ये हमारे पुराने मित्र के बेटे हैं और हाल ही में ये इस शहर के नए डीएम बन कर आए हैं। रात को मैं हमेशा देर से घर लौटता हूं। आज छुट्टी थी और इन्होंने बुलाया तो सोचा कि आज ही हम इन से भी मिल लेते हैं।'' डीएम साहब का परिचय पा कर किशोर और साक्षी भैयाभैया कह कर उन के पास जा कर बैठ गए और उन से बातें करने लगे। किशोर ने उन से कहा, ''भैया, आप के तो बड़े ठाट हैं। आप तो इस शहर के सब से बड़े अधिकारी हो। कैसे बने इतने बड़े अधिकारी, मु?ो भी बताओ न भैया। मैं भी आप की तरह बनना चाहता हूं। क्या मैं आप की तरह बड़ा आदमी बन सकता हूं?'' ''क्यों नहीं, बस, अभी से मन लगा कर पढ़ोगे और अपना लक्ष्य बना कर आगे बढ़ोगे तो निश्चित तौर पर तुम भी मेरी तरह किसी शहर के डीएम बन कर या उस से भी बड़े आदमी बन कर आराम की जिंदगी जी सकते हो,'' मोहित बोले। थोड़ी देर में मोहित भैया ने सब को खाने की टेबल पर आमंत्रित किया जहां अनेक प्रकार के व्यंजन लगे थे और उन्हें सलीके से सजाया गया था। स्वादिष्ठ खाना देख कर उन के मुंह में पानी आ गया और सब को भूख भी लग गई थी। सब ने खूब खाना खाया।

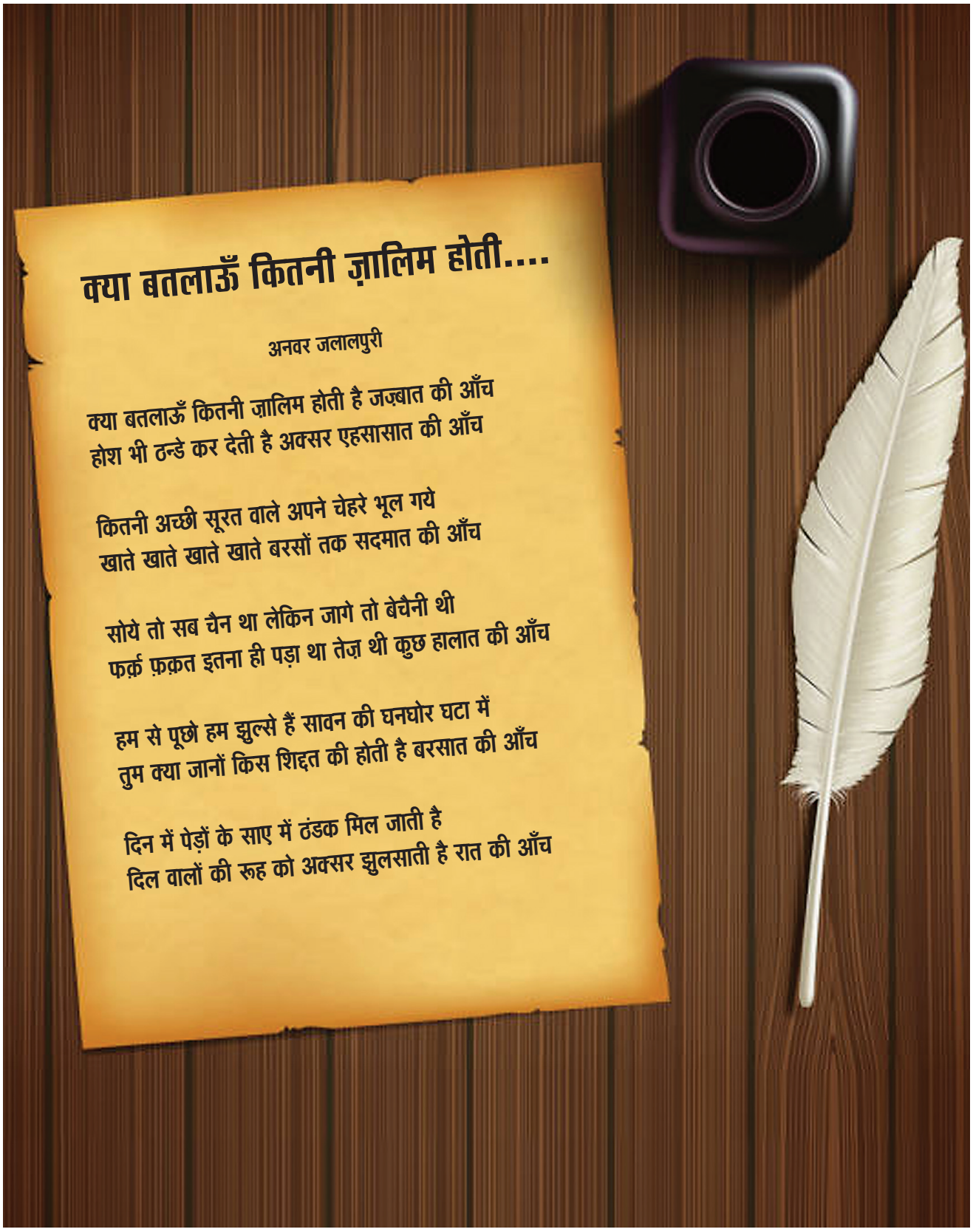

क्या बतलाऊँ कितनी ज़ालिम होती....

अनवर जलालपुरी

क्या बतलाऊँ कितनी ज़ालिम होती है जज़्बात की आँच
होश भी ठन्डे कर देती है अक्सर एहसासात की आँच

कितनी अच्छी सूरत वाले अपने चेहरे भूल गये
खाते खाते खाते खाते बरसों तक सदमात की आँच

सोये तो सब चैन था लेकिन जागे तो बेचैनी थी
फर्क़ फ़क़त इतना ही पड़ा था तेज़ थी कुछ हालात की आँच

हम से पूछो हम झुल्से हैं सावन की घनघोर घटा में
तुम क्या जानों किस शिद्दत की होती है बरसात की आँच

दिन में पेड़ों के साए में ठंडक मिल जाती है
दिल वालों की रूह को अक्सर झुलसाती है रात की आँच



With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India

NOVA®

DAIRY PRODUCTS

Serving since 1991









घी, दूध, दही, छाछ, पनीर और डेयरी व्हाईटनर

STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.

E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com

Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)

For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050

Vidhar